वाग्ज्योति टाइम्स

शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और राजभाषा को समर्पित साप्ताहिक

मुंबई | सोमवार, 16 नवंबर 2026 - रविवार, 22 नवंबर 2026 | वर्ष - 1 | अंक - 1 | पृष्ठ-12 | @vagjyotitimes | www.vagjyotitimes.com | मूल्य ₹ 25/-



पेज-11

छठ महापर्वः देशभर में आस्था का सैलाब

अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित, उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ समापन

नई दिल्ली। लोक आस्था, सूर्योपासना, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सुख-समृद्धि का प्रतीक चार दिवसीय महापर्व छठ देशभर में श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया । 15 नवंबर, रविवार को छठ महापर्व के तीसरे दिन बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र सहित देश के विभिन्न हिस्सों में श्रद्धालुओं ने नदी, तालाबों और कृत्रिम घाटों पर पहुंचकर अस्ताचलगामी सूर्य को संध्या अर्घ्य अर्पित किया गया। बिहार से लेकर दिल्ली और मुंबई के साथ ही देश के अन्य हिस्सों के छठ घाटों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली।



राष्ट्रपति-पीएम एवं अन्य नेताओं ने दी बधाई

■ छठ महापर्व के संध्या अर्घ्य पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी समेत कई नेताओं ने देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सोशल मीडिया पर लिखा, "ऊर्जा और आस्था के महापर्व 'छठ पूजा' के पावन अवसर पर छठ व्रत रखने वाले सभी माताओं, बहनों और भाइयों को हार्दिक शुभकामनाएं।"

न्यूजीलैंड में जगाई छठ की अलख

■ सात समुंदर पार देश बदल गया, शहर बदल गया, लेकिन आस्था और अपनी मिट्टी से जुड़ाव नहीं बदला। शादी के बाद जमशेदपुर से न्यूजीलैंड के वेलिंगटन शिफ्ट हुईं पूजा ने विदेश में भी छठ की परंपरा को जीवित रखा है। उन्होंने वर्ष 2019 में वेलिंगटन में छठ पूजा शुरू की थी। तब से लगातार सात वर्षों से पूरे श्रद्धा और निष्ठा के साथ यह महापर्व मना रही हैं। छठ की परंपरा में सूप के महत्व को देखते हुए उन्होंने इसकी व्यवस्था के लिए करीब 800 किलोमीटर दूर ऑकलैंड तक का सफर किया और वहां से सूप लेकर आईं।

पटना की नदी में डूबे चार लड़के, तीन लापता

■ पटना के मिर्जापुर गांव में छठ घाट की साफ सफाई में लगे चार लड़के पुनपुन नदी में डूब गए। इनमें से स्थानीय लोगों ने एक लड़के को किसी तरह बाहर निकाल लिया लेकिन तीन लड़के अभी भी लापता हैं। घटना दीदारगंज थाना क्षेत्र के मिर्जापुर घाट की है। ग्रामीण शासन-प्रशासन की व्यवस्था और इंतजाम को लेकर भारी गुस्से में हैं। लोगों का कहना है कि एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के नंबर पर फोन लगाने पर कभी नंबर गलत बता रहा है और कभी कोई कर्मचारी कह रहा है कि उसका ट्रांसफर हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि फोन लगाने के घंटों बाद तक किसी राहत और बचाव टीम की तरफ से कोई मदद नहीं मिली।

संक्षिप्त समाचार

यूजीसी समानता नियम पर होगा पुनर्विचार

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने वाले नियमों को लेकर केंद्र सरकार एक बार फिर विचार कर रही है। सरकार ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वह इन नियमों की समीक्षा के लिए समिति गठित करने पर विचार कर रही है। सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ को यह जानकारी दी।

75% अग्निवीरों को दो साल का विस्तार

नई दिल्ली। अग्निवीर के रूप में सेवा दे रहे युवाओं के लिए बड़ी है। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल एन. एस. राजा सुब्रमणि ने सेवा कार्यकाल में दो साल की बढ़ोतरी की घोषणा की है। इस बदलाव के तहत अग्निवीरों को चार साल के निर्धारित कार्यकाल की बजाय कुल छह साल तक सेवा देने का अवसर मिलेगा। 25 फीसदी अग्निवीरों को नियमित सशस्त्र बलों में शामिल किया जाएगा। शेष 75 फीसदी को दो साल की अवधि और दी जाएगी।

ब्रह्मोस की बढ़ी मांग

हैदराबाद। भारत की स्वदेशी सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस अब अपनी पहुंच बढ़ा रही है। फिलिपिंस को मिसाइल सिस्टम की आपूर्ति होने और वियतनाम के साथ समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद अब क्षेत्र के कई अन्य देशों की भी इस घातक मिसाइल को खरीदने के लिए भारत के साथ बातचीत अंतिम चरण में है।

मैसूर में खुला एलईडी डोम तारामंडल

मैसूर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को मैसूर में 'कॉसमॉस-मैसूर तारामंडल' का उद्घाटन किया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स द्वारा निर्मित, 'कॉसमॉस-मैसूरू' भारत का पहला एलईडी डोम तारामंडल है। खगोल विज्ञान शिक्षा और प्रशिक्षण केंद्र के रूप में परिकल्पित यह तारामंडल, चामुंडी पहाड़ियों की तलहटी में मैसूरू विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित है। तारामंडल के 'स्काई थियेटर' में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उन्होंने लद्दाख के हानले में तैनात 'एस्ट्रो-एम्बेसडर्स' के साथ वर्चुअल बातचीत की।

डोम की खासियत

■ इस अत्याधुनिक सुविधा में 15 मीटर का झुका हुआ डोम है, जिसमें लगभग 6,150 पैनल लगे हैं और इनमें कुल 4.2 करोड़ एलईडी हैं।

■ पारंपरिक तारामंडलों के विपरीत, जहां एक साधारण डोम पर तस्वीरें दिखाने के लिए प्रोजेक्टर का उपयोग किया जाता है।

■ यहां लगे एलईडी पैनलों को रियल-टाइम में नियंत्रित किया जा सकता है। शानदार विजुअल अनुभव मिलता है।

■ खगोल विज्ञान की शिक्षा के लिए नई संभावनाएं खुलती हैं। 'स्काई थियेटर' में पेशेवर रूप से तैयार किए गए खगोल विज्ञान कार्यक्रम दिखाए जाएंगे।

■ यहां ऐसी फिल्म भी दिखाई जाएगी] जो मैसूरू के इतिहास-खगोल विज्ञान के बीच संबंध को दर्शाती है।

■ ये शो कन्नड़, अंग्रेजी और हिंदी भाषा में उपलब्ध होंगे।



कई परियोजनाओं का उद्घाटन

■ प्रधानमंत्री ने बंगलूरू में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा, 'आज यहां कनेक्टिविटी और एनर्जी सिक्योरिटी से जुड़ी 15 हजार करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाएं शुरू की जा रहीं हैं। एनर्जी सिक्योरिटी के काम को नई ताकत देने वाली हैं। बेहतर कनेक्टिविटी तरक्की, रोजगार और उद्योग की नई संभावनाएं बढ़ाती है और जब विकास के ये अवसर समाज के हर वर्ग तक पहुंचते हैं। तो गरीबी के खिलाफ लड़ाई भी मजबूत होती है।'

माइक्रोसॉफ्ट सर्वर डाउन

45 करोड़ यूजर्स प्रभावित

नई दिल्ली। माइक्रोसॉफ्ट की क्लाउड और वर्कप्लेस सेवाओं में आई ग्लोबल आउटेज शुक्रवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। इस समस्या को 24 घंटे से भी ज्यादा हो गए हैं, लेकिन कंपनी इसे अब तक नहीं सुलझा पाई है। शुक्रवार को भारत समेत कई देशों के यूजर्स आउटलुक, टीम्स और कोपायलट जैसी सेवाओं के इस्तेमाल में परेशानी का सामना कर रहे हैं। फिलहाल उसे इस घटना के पीछे किसी साइबर हमले या दूसरी संदिग्ध गतिविधि के संकेत नहीं मिले हैं। कंपनी गड़बड़ी की असली वजह पता लगाने और अपनी सेवाएं सामान्य करने में जुटी है। शुक्रवार सुबह 11:16 बजे तक बिजनेस और एंटरप्राइज ग्राहकों के साथ सेवाओं में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था। कंपनी ने इसे सेवाओं की गुणवत्ता और उपलब्धता में गिरावट बताया है।

चीन बॉर्डर तक ट्रेन दौड़ाने की तैयारी

नई दिल्ली। भारतीय रेलवे ने चीन की सीमा तक हर मौसम में कनेक्टिविटी बनाने के लिए एक प्रोजेक्ट शुरू किया है। इस प्रोजेक्ट की कुल लंबाई करीब 489 किलोमीटर की है, जो बिलासपुर से शुरू होकर लेह तक जाएगी। कुल प्रोजेक्ट का करीब 55 फीसदी हिस्सा यानी 270 किलोमीटर सुरंग से गुजरेगा। पूरी रेलवे लाइन पर 62 बड़ी सुरंगें बनाई जाएंगी और कुछ छोटी सुरंगों को मिलाकर 270 किलोमीटर का ट्रैक बनेगा। गहरी घाटी और नदियों को पार करने 115 बड़े और छोटे पुल बनाए जाएंगे। इस रेलवे प्रोजेक्ट का सबसे खास हिस्सा दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन होगा, जो अपने आप में किसी हिल स्टेशन से कम नहीं होगा। यह रेलवे स्टेशन तांगलांग ला दर्रे के नीचे बनाया जाएगा और इसका नाम होगा तेंगला रेलवे स्टेशन। यह दर्रा मनाली-लेह हाईवे पर बना है, जो समुद्र तल से करीब 5,359 किलोमीटर ऊंचा होगा। इस प्रोजेक्ट को देश के लिए गेमचेंजर माना जा रहा है, क्योंकि इससे सामरिक सुरक्षा के साथ पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। भारतीय रेलवे इस प्रोजेक्ट में देश का पहला अंडरग्राउंड स्टेशन बनाने की भी तैयारी कर रहा है।

▸▸ रेलवे बनाएगा 270 किमी लंबी सुरंग



दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन

अभी दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन चीन में है, जो तिब्बत के किंघई-तिब्बत रेलवे लाइन पर तांगगुला में बना है। इस रेलवे स्टेशन की ऊंचाई 5,068 मीटर है, लेकिन भारत में बनने वाला स्टेशन इससे भी 188 मीटर ऊंचा होगा। भारतीय रेलवे की इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर करीब 1.31 लाख करोड़ रुपए का खर्च आने का अनुमान है। इस रेलवे लाइन पर ब्रॉडगेज पटरियां बिछाई जाएंगी। रेलवे ने प्रोजेक्ट का डीपीआर और सर्वे का काम पूरा कर लिया है। इसका रूट भी तैयार हो चुका है और इसे हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर से शुरू किया जाएगा। इसके बाद सुंदरनगर, मंडी, मनाली से सिसु तक ट्रेन पहुंचेगी। वहां से दारचा केलांग, सरचू, पांग, रूमत्से, उपशी और खारू होते हुए लेह तक पहुंचेगी।

वाग्ज्योति टाइम्स

एक सृजनात्मक पहल

समाज का विकास केवल आर्थिक समृद्धि और भौतिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसकी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा और वैचारिक चेतना से भी होता है। किसी भी सभ्यता की वास्तविक पहचान उसकी सृजनशीलता, सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान-संपदा में निहित होती है। इन्हीं व्यापक उद्देश्यों और सकारात्मक संकल्पों के साथ 'वाग्ज्योति टाइम्स' का यह प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

'वाग्ज्योति' नाम अपने आप में एक विचार और दर्शन समेटे हुए है। वाणी, ज्ञान, विचार और सृजन की ज्योति को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने की भावना इसमें निहित है। मां सरस्वती से प्रेरित यह नाम ज्ञान, विवेक, कला और साहित्य की उस समृद्ध भारतीय परंपरा का प्रतीक है, जिसने सदैव समाज को दिशा प्रदान की है। हमारा विश्वास है कि शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को जागृत करने और परिवर्तन की राह प्रशस्त करने की शक्ति भी हैं।

'वाग्ज्योति टाइम्स' का उद्देश्य समाचारों के प्रकाशन तक सीमित न रहकर पत्रकारिता, साहित्य, कला और समाज के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करना है। पत्रकारिता जहां अपने समय की घटनाओं और जनभावनाओं को अभिव्यक्त करती है, वहीं साहित्य उनमें निहित संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को स्वर देता है। कला, संगीत, नाटक और अन्य सृजनात्मक विधाएं इस अभिव्यक्ति को और अधिक व्यापक बनाती हैं। हमारा प्रयास इन सभी विधाओं को एक मंच पर लाकर समाचार के साथ विचार और सूचना के साथ संवेदना को भी समुचित स्थान देना है।

भाषा किसी भी समाज की पहचान और उसकी सांस्कृतिक चेतना की संवाहक होती है। इसलिए हिंदी के प्रचार-प्रसार, संवर्धन और व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल रहेगा। सरकारी मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों और संस्थानों में राजभाषा के विकास के लिए कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों तथा राजभाषा कर्मियों के प्रयासों को सार्वजनिक पहचान दिलाने का कार्य किया जाएगा। साथ ही साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं, साहित्यकारों, कवियों, लेखकों और शोधकर्ताओं के योगदान को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के हाथों में होता है और इसके निर्माण में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से शिक्षकों के शैक्षणिक, शोधपरक और रचनात्मक योगदान को विशेष स्थान दिया जाएगा। युवा साहित्यकारों, विद्यार्थियों, नवोदित कवियों और लेखकों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच उपलब्ध कराना भी हमारी प्राथमिकताओं में रहेगा। इसके अतिरिक्त रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं, छात्रवृत्तियों, उच्च शिक्षा और कौशल विकास से जुड़ी उपयोगी जानकारियां तथा विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्रकाशित किया जाएगा, ताकि युवाओं को अपने भविष्य की दिशा तय करने में सहायता मिल सके। आधुनिकता के साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना भी उतना ही आवश्यक है। भारतीय संस्कृति, परंपराओं, पर्व-त्योहारों, संस्कारों, लोकगीतों और लोककलाओं से नई पीढ़ी को परिचित कराना हमारा महत्वपूर्ण उद्देश्य रहेगा। इसके साथ ही भारत के गौरवशाली इतिहास, महापुरुषों, स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों तथा ऐतिहासिक धरोहरों, स्मारकों, किलों और स्थापत्य कला के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाएगा। हमारा मानना है कि सांस्कृतिक विरासत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर है। समाज की बदलती आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आर्थिक, कानूनी, व्यापारिक और शैक्षणिक विषयों से संबंधित उपयोगी जानकारियों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाएगा। विशेषज्ञों के विचार और व्यावहारिक मार्गदर्शन सामान्य नागरिकों को अपने अधिकारों, अवसरों और संभावनाओं को समझने में सहायक होंगे। हमारी दृष्टि में सार्थक पत्रकारिता वही है, जो समाज की उपलब्धियों को सामने लाने के साथ उसकी समस्याओं और चुनौतियों को भी संवेदनशीलता से उठाए। इस दिशा में तथ्यपरकता, निष्पक्षता, विश्वसनीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व हमारी पत्रकारिता के मूल आधार होंगे।

'वाग्ज्योति टाइम्स' की यह यात्रा किसी एक व्यक्ति या संस्था की नहीं, बल्कि उन सभी लोगों की साझा यात्रा है, जो भाषा, साहित्य, कला, शिक्षा, संस्कृति और समाज के प्रति समर्पित हैं। हम शिक्षकों, साहित्यकारों, राजभाषा कर्मियों, कलाकारों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, सामाजिक संस्थाओं और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को इस रचनात्मक यात्रा का सहभागी बनने के लिए आमंत्रित करते हैं।

हमारा संकल्प है कि 'वाग्ज्योति टाइम्स' में समाचारों के साथ साहित्य, साहित्य के साथ संस्कृति और इन सबके साथ समाज के वर्तमान एवं भविष्य से जुड़े प्रश्नों को स्थान मिले। हम एक ऐसा मंच विकसित करना चाहते हैं, जहां विचारों की विविधता का सम्मान हो, सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिले और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं को स्वर प्राप्त हो।

इसी विश्वास और रचनात्मक चेतना के साथ यह प्रथम अंक आपके हाथों में है। यह केवल एक समाचार पत्र का शुभारंभ नहीं, बल्कि ज्ञान, सृजन, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों को एक साथ लेकर चलने वाली वैचारिक यात्रा का आरंभ है। आइए, शब्दों को स्वर दें, सृजन को मंच दें और ज्ञान, संस्कृति एवं संवेदना की ज्योति से समाज को आलोकित करने के इस प्रयास में सहभागी बनें।



डॉ. अजीत कुमार राय

संपादक

स्वच्छता रैंकिंगः राष्ट्रपति मुर्मू ने दिए पुरस्कार

नवी मुंबई सबसे स्वच्छ शहर, सूरत दूसरे नंबर पर

नई दिल्ली। स्वच्छता के मामले में नवी मुंबई ने देशभर के शहरों को पीछे छोड़ते हुए सुपर स्वच्छ लीग में पहला स्थान हासिल किया है। सूरत दूसरे और आंध्र प्रदेश का विजयवाड़ा तीसरे स्थान पर रहा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को यहां आयोजित कार्यक्रम में स्वच्छ सर्वेक्षण के 10वें संस्करण (2025-26) के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शहरों को पुरस्कार प्रदान किए। राजस्थान में जयपुर को सबसे स्वच्छ शहर का सम्मान मिला। ग्वालियर तथा रायपुर ने उपलब्धि हासिल की। पिछले संस्करण में सुपर स्वच्छ लीग में इंदौर पहले, सूरत दूसरे और नवी मुंबई तीसरे स्थान पर था। 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की श्रेणी में ग्रेटर विशाखापत्तनम ने पहला स्थान हासिल किया। जबलपुर दूसरे और लखनऊ तीसरे स्थान पर रहे। करनाल को शीर्ष प्रदर्शन करने वाले शहरों में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर और बिल्हा को भी शहरी स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।



टॉप-3 सुपर स्वच्छ शहर

■ **नवी मुंबई** (महाराष्ट्र)
■ **सूरत** (गुजरात)
■ **विजयवाड़ा** (आंध्र प्रदेश)

अलग-अलग श्रेणियों में टॉप-3 शहर

स्वच्छ शहर (मेंटर सिटी व छोटा शहर)
■ अहमदाबाद-साणंद
■ इंदौर - देवास
■ तिरुपति - कुप्पम

10 लाख से अधिक आबादी वाले शहर
■ विशाखापत्तनम
■ जबलपुर
■ लखनऊ

3 से 10 लाख तक आबादी
■ उज्जैन
■ चंडीगढ़
■ गुंटूर

50,000 से तीन लाख आबादी
1. देवास
2. नई दिल्ली (एनडीएमसी)
3. सागर

20,000 से 50,000 आबादी
1. वीटा (महाराष्ट्र)
2. अस्का (ओडिशा)
3. पणजी (गोवा)

20000 से कम
■ बिल्हा (छग)
■ पचगनी
■ बुधनी (मप्र)

स्वच्छ रिवर फ्रंट टाउन
■ रीवा (50 हजार से 3 लाख)
■ बिलासपुर (3 से 10 लाख)
■ वाराणसी (10 लाख से अधिक)

तटीय शहर श्रेणी
■ पुरी
■ अलप्पुझा
■ रत्नागिरी

हिमालयन शहर श्रेणी
■ लद्दाख
■ जम्मू
■ शोपियां

4751 शहरों तक पहुंचा सर्वेक्षण

■ स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के एक दशक पूरे होने के अवसर पर आयोजित समारोह की थीम 'स्वच्छता की नई पहल-बढ़ाएं हाथ, करें सफाई साथ' रही। इस बार देशभर के 4751 से अधिक शहरी स्थानीय निकायों का 43 मानकों पर मूल्यांकन किया गया। वर्ष 2016 में शुरू हुए स्वच्छ सर्वेक्षण में पहले केवल 73 शहरी निकाय शामिल थे। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में नागरिकों की भागीदारी और फीडबैक को अधिक महत्व दिया गया है।

इन पैमानों पर आकलन

■ शहरी निकायों का मूल्यांकन 10 प्रमुख क्षेत्रों के 43 संकेतकों के आधार पर किया गया। इनमें मुख्य रूप से क्षेत्रों में कचरे का पृथक्करण, संग्रहण एवं परिवहन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, प्रत्यक्ष स्वच्छता, स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच, संस्थागत व्यवस्था, प्रयुक्त जल प्रबंधन, स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं जनभागीदारी, सफाई कर्मचारियों का समग्र कल्याण तथा नागरिकों की शिकायतों का निवारण शामिल हैं।

इन पांच कारणों से नंबर-1 बना नवी मुंबई

■ **इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटरः** कचरा उठाने वाली गाड़ियों की जीपीएस ट्रैकिंग और डोर-टू-डोर कलेक्शन की 24×7 डिजिटल निगरानी।

■ **देश का पहला टेक्सटाइल वेस्ट प्लांटः** पुराने कपड़ों और कपड़ा कचरे पर रीसाइक्लिंग प्रक्रिया चलाने वाला देश का पहला केंद्र नवी मुंबई में सफलतापूर्वक संचालित है।

■ **वॉटर रीसायकल एंड रीयूजः** सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के जरिए प्रयुक्त जल को रीसायकल कर औद्योगिक व बागवानी कार्यों में इस्तेमाल करना।

■ **डिजिटल शिकायत निवारणः** माई एनएमएमसी एप और सिटीजन ग्रीवेंस पोर्टल के माध्यम से नागरिकों की सफाई संबंधी शिकायतों का त्वरित समाधान।

■ **प्लास्टिक बैन व जन-भागीदारीः** सिंगल-यूज प्लास्टिक पर सख्त कार्रवाई और युवाओं-छात्रों को जोड़कर लगातार चलाए गए स्वच्छता अभियान ने भी नंबर एक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



वाग्ज्योति टाइम्स
मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

कैसे चुनें करियर की सही राह?

अपनी रुचि पहचानें, भविष्य संवारें



सुनिता चौहान
हिन्दी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय



12वीं या ग्रेजुएशन के बाद सबसे बड़ा सवाल यही होता है- आखिर किस क्षेत्र में करियर बनाएं? दोस्तों की सलाह, परिवार की अपेक्षाएं, आकर्षक वेतन और समाज में किसी पेशे की प्रतिष्ठा के बीच युवा अक्सर असमंजस में पड़ जाते हैं। कई बार जल्दबाजी में लिया गया फैसला आगे चलकर परेशानी का कारण बनता है। इसलिए करियर चुनते समय केवल यह न देखें कि कौन-सी नौकरी ज्यादा पैसा देती है, बल्कि यह भी समझें कि आपकी रुचि, योग्यता और भविष्य की संभावनाएं किस क्षेत्र से जुड़ती हैं।

1. पहले खुद को जानें

■ करियर चुनने से पहले यह जानना जरूरी है कि आप किस काम में बेहतर हैं और किस काम को करते हुए आनंद महसूस करते हैं। क्या आपकी रुचि तकनीक, लेखन, शिक्षण, प्रबंधन, कला, खेल, विज्ञान या उद्यमिता में है? अपनी प्रतिभा, पसंद और क्षमताओं की सूची बनाएं। दूसरों की सफलता देखकर उनकी राह अपनाने के बजाय अपनी पहचान के अनुरूप रास्ता चुनें।

2. सिर्फ पैकेज नहीं, संतुष्टि भी देखें

■ आज के युवा अक्सर बड़े पैकेज और प्रतिष्ठित कंपनियों को सफलता का पैमाना मान लेते हैं। अच्छी आय महत्वपूर्ण है, लेकिन काम का माहौल, मानसिक संतुष्टि, व्यक्तिगत जीवन और आगे बढ़ने के अवसर भी उतने ही जरूरी हैं। ऐसा करियर चुनें, जिसमें आर्थिक सुरक्षा के साथ काम करने का उत्साह भी बना रहे।

3. विशेषज्ञों की मदद लेने में संकोच न करें

■ करियर को लेकर भ्रम की स्थिति हो तो शिक्षकों, करियर काउंसलर और संबंधित क्षेत्र के अनुभवी लोगों से बातचीत करें। एप्टीट्यूड टेस्ट और साइकोमेट्रिक असेसमेंट आपकी रुचियों तथा क्षमताओं को समझने में मदद कर सकते हैं। सही मार्गदर्शन कई गलत फैसलों से बचा सकता है।

4. भविष्य की मांग को समझें

■ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा, डिजिटल मीडिया, पर्यावरण, स्वास्थ्य और कौशल आधारित व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में नए अवसर विकसित हो रहे हैं। किसी भी क्षेत्र को चुनने से पहले उसकी वर्तमान मांग, भविष्य की संभावनाओं और रोजगार के अवसरों की जानकारी जरूर जुटाएं।

5. डिग्री के साथ कौशल भी विकसित करें

■ आज केवल डिग्री होना पर्याप्त नहीं है। संवाद कौशल, डिजिटल दक्षता, रचनात्मक सोच, समस्या समाधान, टीमवर्क और नेतृत्व क्षमता जैसे कौशल आपको दूसरों से अलग पहचान दिला सकते हैं। इंटर्नशिप, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कार्यशालाओं और प्रायोगिक अनुभव के माध्यम से अपनी क्षमता लगातार बढ़ाते रहें।

6. छोटे प्रयोगों से परखें अपनी पसंद

■ किसी क्षेत्र को चुनने से पहले उससे जुड़ी इंटर्नशिप करें, प्रोजेक्ट बनाएं या उस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों से अनुभव साझा करें। इससे आपको किताबों से आगे बढ़कर वास्तविक कार्यक्षेत्र की चुनौतियों और अवसरों को समझने का मौका मिलेगा। का कोई एक तय रास्ता नहीं होता। जरूरी है कि युवा अपनी रुचि और योग्यता को पहचानें, बदलते समय के साथ नए कौशल सीखें और सोच-समझकर निर्णय लें। याद रखें, सही करियर वही है जिसमें आपकी प्रतिभा को अवसर मिले, मेहनत को दिशा मिले और सपनों को उड़ान।

पीएम मुद्रा योजना : सपनों को करें साकार



केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना को 2031 तक बढ़ाने और लोन लिमिट 20 लाख रुपये करने का फैसला लिया है। इसके अलावा बैंक गारंटी फीस को 1% से घटाकर 0.75% कर दिया है। यह एक ऐसी योजना है, जो आपके सपने को साकार करने में सबसे बड़ी मददगार साबित होगी।

चार चरणों में सहयोग

■ एकदम नया बिजनेस शुरू करने के लिए सीधे आपको 20 लाख रुपये का फंड नहीं मिलेगा. अगर आप नया बिजनेस शुरू कर रहे हैं, तो आपको शिशु कैटेगरी से शुरुआत करनी होगी। योजना को बिजनेस के विकास के आधार पर चार तरह के लोन में बांटा गया है।

■ शिशु (50,000 रुपये तक) : यह नए या एकदम शुरुआती बिजनेस के लिए है, जिसमें क्रेडिट हिस्ट्री की जरूरत नहीं होती।

■ किशोर (50,001 रुपये से 5 लाख रुपये तक) : यह उन पहले से बिजनेस कर रहे लोगों के लिए है जो अपना कारोबार थोड़ा और बढ़ाना चाहते हैं।

■ तरुण (5,00,001 रुपये से 10 लाख रुपये तक) : यह बड़े बिजनेस के बड़े विस्तार के लिए है।

■ तरुण प्लस (20 लाख रुपये तक) : नई 20 लाख रुपये की लिमिट केवल उन कारोबारियों को मिलेगी, जिन्होंने पहले तरुण कैटेगरी (10 लाख तक) का लोन लिया है और उसे चुका दिया है।

आवेदन आमंत्रित

छत्तीसगढ़ : 1,703 पदों पर बंपर सरकारी भर्ती शुरू

रायपुर। छत्तीसगढ़ कर्मचारी चयन मंडल ने बंपर भर्ती निकाली है। विभिन्न विभागों में कुल 1703 रिक्त पदों को भरा जाएगा। इस बार चयन प्रक्रिया में बड़ा बदलाव किया गया है। मंडल द्वारा पहली बार लिखित परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। इससे भर्ती प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता बनी रहेगी। इसमें सबसे ज्यादा पद सहायक ग्रेड-3 के हैं। इसके कुल 1206 पद शामिल किए गए हैं। इसके सहायक उप निरीक्षक के 279 पद हैं। उप निरीक्षक के पद भी इसमें शामिल हैं। आवेदन की प्रक्रिया 5 नवंबर से शुरू हो चुकी है। फॉर्म भरने की अंतिम तारीख 27 नवंबर 2026 शाम पांच बजे तक है।



इंडियन बैंक में 1500 पदों पर भर्ती

नई दिल्ली। इंडियन बैंक की ओर से देशभर के विभिन्न राज्यों में अप्रेंटिसशिप के 1500 रिक्त पदों को भरने के लिए भर्ती निकाली गई है। अधिसूचना के मुताबिक इस भर्ती के लिए आवेदन प्रक्रिया 5 नवंबर से प्रारंभ हो गई है जो 25 नवंबर 2026 तक जारी रहेगी। इस भर्ती में शामिल होने के लिए अभ्यर्थी ने किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/ संस्थान से किसी भी विषय में स्नातक उत्तीर्ण किया हो। इसके साथ ही उम्मीदवार की न्यूनतम उम्र 20 वर्ष एवं अधिकतम आयु 28 साल होनी चाहिए। एससी/ एसटी/ ओबीसी/ पीडब्ल्यूबीडी वर्ग को ऊपरी उम्र में छूट मिलेगी। इस भर्ती के माध्यम से देशभर के विभिन्न राज्यों में कुल 1500 पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी। महाराष्ट्र में कुल 70 पदों के लिए आवेदन मंगाए गए हैं।



उत्तराखंड लोक सेवा आयोग में 54 पदों पर निकली भर्ती

देहरादून। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग ने सम्मिलित राज्य (सिविल) अवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा 2026 के तहत 54 पदों पर सीधी भर्ती निकाली है। इच्छुक अभ्यर्थी 6 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोग की वेबसाइट psc.uk.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी 6 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोग की वेबसाइट psc.uk.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। भर्ती के तहत राजस्व विभाग में नायब तहसीलदार के 13, आबकारी विभाग में आबकारी निरीक्षक के चार, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग में पूर्ति निरीक्षक के दो और विपणन निरीक्षक के 20 पद निर्धारित किए गए हैं।

अंतरिक्ष यात्रियों की नई भर्ती

वाशिंगटन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अंतरिक्ष यात्रियों की नई टीम के चयन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। नासा ने अपने आर्टेमिस कार्यक्रम का विस्तार करने के उद्देश्य से अंतरिक्ष यात्रियों के नए दल के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। नासा के अधिकारियों ने कैनेडी स्पेस सेंटर में आयोजित एक एयर शो के दौरान इसकी घोषणा की। नासा ने दो साल पहले नए अंतरिक्ष यात्रियों की भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे। उस समय 8,000 से अधिक लोगों ने आवेदन किया था, जिनमें से सितंबर 2025 में 10 उम्मीदवारों का अंतिम चयन किया गया था। अंतरिक्ष एजेंसी के पास फिलहाल केवल 32 सक्रिय अंतरिक्ष यात्री हैं।

संस्कृत के 1,289 पदों पर भर्ती

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में सहायक अध्यापक (टीजीटी) के पदों पर भर्ती निकाली गई है। इस भर्ती में संस्कृत विषय के लिए कुल 1,289 पद निर्धारित किए गए हैं। इनमें बालक विद्यालयों के लिए 1,183 और बालिका विद्यालयों के लिए 106 पद शामिल हैं। संस्कृत विषय से पढ़ाई करने वाले उम्मीदवार इस भर्ती के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की प्रक्रिया 24 अक्टूबर 2026 से शुरू हो चुकी है। इच्छुक उम्मीदवार 23 नवंबर 2026 तक फीस जमा कर सकते हैं। ये पद कुल 17,735 सहायक अध्यापक पदों वाली भर्ती का हिस्सा हैं।

इसरो में 400 पदों पर भर्ती

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा में अप्रेंटिस के 400 पदों पर भर्ती निकली है। इसका नोटिफिकेशन 6 नवंबर 2026 को जारी किया गया है। इस भर्ती में इंजीनियरिंग ग्रेजुएट, नॉन इंजीनियरिंग ग्रेजुएट, टेक्नीशियन, डिप्लोमा, ट्रेड और वोकेशनल अप्रेंटिस के पद शामिल हैं। ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया भी 6 नवंबर से शुरू हो चुकी है। योग्य उम्मीदवार 26 नवंबर 2026 तक आवेदन कर सकते हैं। चयन पढ़ाई में मिले अंकों और दस्तावेजों की जांच के आधार पर किया जाएगा।

रेलवे में 4600 से अधिक पदों पर भर्ती

नई दिल्ली। रेलवे ने अप्रेंटिस के 4651 पदों पर भर्ती का ऐलान किया है। यह भर्ती रेलवे भर्ती सेल उत्तर रेलवे, नई दिल्ली ने निकाली है। इच्छुक और पात्र उम्मीदवार इस भर्ती के लिए ऑनलाइन कल यानी 11 नवंबर 2026 से कर सकेंगे। आवेदन की आखिरी तारीख 11 दिसंबर 2026 निर्धारित की गई है। ऐसे में उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वो अंतिम तिथि का इंतजार ना करें। इस भर्ती में कोई लिखित परीक्षा या इंटरव्यू नहीं होगा। उम्मीदवारों का चयन मेरिट के आधार पर किया जाएगा। यह भर्ती दिल्ली, लखनऊ, अंबाला, फिरोजपुर, मुरादाबाद और जम्मू इन 6 क्लस्टर, यूनिट और वर्कशॉप के लिए आई है। सबसे ज्यादा पद 1525 लखनऊ और दिल्ली में 1312 हैं।



व्यक्तित्व निखारें, भविष्य संवारें

अगर आपको लगता है कि आपमें आत्मविश्वास की कमी है, तो सबसे पहले अपनी कमजोरियों को तलाशें। जब आपको अपनी ताकत का पता चलेगा, तब आप उसका इस्तेमाल करके अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं। जब भी हम किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं, तो उस व्यक्ति को उसकी पर्सनैलिटी के हिसाब से जज करने की कोशिश करते हैं। पर्सनैलिटी या व्यक्तित्व एक ऐसी क्वालिटी है, जो हर इंसान के व्यवहार और रवैये के बारे में सब कुछ बता देती है।

क्या है व्यक्तित्व विकास

■ व्यक्तित्व विकास करने के तरीकों के बारे में जानने से पहले हमें यह जानना होगा कि व्यक्तित्व विकास है क्या? इसका मतलब अपने व्यक्तित्व को संवारना यानी व्यक्तित्व का विकास है। व्यक्तित्व विकास में आपको अपने व्यवहार, रवैया, प्रस्तुति का तरीका, लोगों से बात करने का तरीका और ऐसी ही बहुत-सी चीजों को उभारना होता है। व्यक्तित्व विकास से आप अपने स्वभाव और व्यवहार में सुधार कर सकते हैं। आप इस तरह से अपनी व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं।

संवाद कुशलता में करें सुधार

■ आप लोगों से किस तरह बात करते हैं, यह आपकी पर्सनैलिटी पर बहुत फर्क डालता है। इसलिए यह ध्यान रखें कि आप किसी से कैसे बात करते हैं। ध्यान रखें कि जब आप किसी से बात करें, तो हमेशा अपनी आवाज को सॉफ्ट रखें, न धीरे बोलें और न ही तेज। कुछ भी बोलने से पहले सोचें कि आपकी बोली हुई बात सामने वाले को बुरी न लगे। आप जब भी बात करें, तो सामने वाले इंसान की तरफ देखकर ही बात करें। यह भी ध्यान रखें कि आप बोलने से पहले अपने सुनने की क्षमता को भी विकसित करें। आप जितने ध्यान से सामने वाले की बात को सुनेंगे आपकी बात को भी सामने वाला उतना ही सुनेगा। किसी भी बात को कम शब्दों में समझाने की कोशिश करें।

पहनावे पर दें विशेष ध्यान

■ व्यक्तित्व में पहनावे की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अगर कोई व्यक्ति आपसे बात न भी कर रहा है, तब भी वह आपके पहनावे को देखकर आपके बारे में काफी कुछ बता सकता है। इसलिए ध्यान रखें कि किसी भी अधिकारिक बैठक में या प्रोफेशनल जगह साफ-सुथरे कपड़े पहन कर जाएं। वहीं अगर आप किसी पार्टी में जा रहे हैं, तो पार्टी अनुकूल कपड़े पहनें, फॉर्मल कपड़े बिल्कुल न पहनें। ध्यान रहे कि कपड़े हमेशा प्रेस किए हों और उनमें दाग-धब्बे न लगे हों।

शारीरिक हाव भाव का रखे ध्यान

■ सबसे पहले आप अपने बैठने के तरीके को सुधारें। जब भी आप किसी के सामने बैठें तो ऐसे बैठें कि सामने वाले को देखकर ऐसा न लगे कि आप अपने आप में बैठे हैं। बैठने के तरीके को प्रोफेशनल रखें। चलते वक्त भी ध्यान रखें कि आराम से चलें, किसी को धक्का देते हुए न चलें। साथ ही जब भी आप किसी के सामने खड़े होकर बात करें, तो ऐसे खड़े न हों, जिससे लगे कि आपमें बहुत ज्यादा एटीट्यूड है। जब भी हाथ डालकर या वैसे ही मिलते-जुलते तरीकों के साथ बिल्कुल न रहें। किसी से बात करते समय बहुत ज्यादा हाथों से बात को एक्सप्रेस करने की कोशिश न करें।



अपने आत्मविश्वास को बढ़ाएं

■ सभी के अंदर आत्मविश्वास का होना बहुत जरूरी है। अगर आपको लगता है कि आपका आत्मविश्वास कमजोर है, तो सबसे पहले अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानें। आपको जब अपनी ताकत का पता होगा, तो आप उसका इस्तेमाल करके अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं और अपनी कमजोरियों को भी दूर कर सकते हैं। कोशिश करें कि हमेशा मुस्कुराते रहें, क्योंकि आपका मुस्कुराता चेहरा आपके आत्मविश्वास को बढ़ाएगा। अपने सभी कार्यों को ध्यान से करें। ध्यान रखें कि हमेशा आसान काम पहले करें और मुश्किल काम बाद में करने की कोशिश करें।

शैक्षणिक सहयोग

रोल्स-रॉयस विंग्स4हर स्कॉलरशिप 2026-27

रोल्स-रॉयस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की ओर से रोल्स-रॉयस विंग्स4हर स्कॉलरशिप 2026-27 की पहल की जा रही है। इसका उद्देश्य इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने वाली प्रतिभाशाली छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम में भारत भर के एआईसीटीई से मान्यता प्राप्त संस्थानों में एयरोस्पेस, कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स, समुद्री आदि क्षेत्रों में प्रथम, द्वितीय या तृतीय वर्ष में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही छात्राएं ही आवेदन कर सकती हैं। सरकारी कॉलेजों की छात्राओं को प्राथमिकता दी जाएगी। आवेदन के लिए आवश्यक है कि छात्राओं ने कक्षा दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में कम-से-कम 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों। साथ ही छात्राओं की पारिवारिक वार्षिक आय 4,00,000 रुपये से कम या बराबर होनी चाहिए। चयनित छात्राओं को 75,000 रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। छात्राओं के पास कक्षा दसवीं व बारहवीं की मार्कशीट, पहचान प्रमाण, आय प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए।

आवेदन की अंतिम तिथि : 23 नवंबर, 2026
आवेदन लिंक : tinyurl.com/2s3db5je



आदित्य बिड़ला कैपिटल स्कॉलरशिप

■ बिड़ला कैपिटल फाउंडेशन की ओर से आदित्य बिड़ला कैपिटल स्कॉलरशिप प्रोग्राम 2026-27 के लिए छात्राओं से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इसमें आवेदन के लिए आवश्यक है कि छात्राएं भारत भर के मान्यता प्राप्त सरकारी स्कूलों/कॉलेजों/संस्थानों में कक्षा नौवीं से 12वीं, पॉलिटेक्निक डिप्लोमा, स्नातक या स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में नामांकित हों। साथ ही छात्राओं ने पिछले सेमेस्टर/वर्ष में न्यूनतम 60 फीसदी या समकक्ष अंक प्राप्त किए हों। इसके अलावा आवेदकों की वार्षिक पारिवारिक आय सभी स्रोतों को मिलाकर छह लाख रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए। चयनित छात्राओं को योग्यता अनुसार एक वर्ष के लिए रुपये 25,000 से लेकर रुपये 60,000 तक की छात्रवृत्ति राशि प्रदान की जाएगी। आवेदकों के पास पिछली कक्षा की मार्कशीट, पहचान प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए।

आवेदन की अंतिम तिथि : 22 नवंबर, 2026
आवेदन लिंक : tinyurl.com/y6yvad6k

भाषाओं का हुनर बनेगा करियर का आधार

दो या दो से अधिक भाषाओं पर अच्छी पकड़ है? शब्दों के अर्थ और भावों को समझने में रुचि रखते हैं? तो अनुवाद का क्षेत्र आपके लिए बेहतर करियर विकल्प बन सकता है। वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति के दौर में अनुवादक विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और समाजों के बीच महत्वपूर्ण सेतु बन रहे हैं। साहित्य से लेकर तकनीक, कानून, चिकित्सा और मनोरंजन तक इस क्षेत्र में रोजगार के अनेक अवसर हैं।



प्राची रावत
स्वतंत्र अनुवादक

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के बढ़ते अवसर



अनुवाद का बदलता स्वरूप

■ अनुवाद केवल एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में बदलना नहीं है। इसमें मूल सामग्री के भाव, संदर्भ, शैली और सांस्कृतिक विशेषताओं को दूसरी भाषा में सहजता से प्रस्तुत करना होता है। इसलिए भाषाई दक्षता के साथ विषय का ज्ञान और रचनात्मक समझ भी जरूरी है।

साहित्य में रचनात्मक अवसर

■ कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और अन्य साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए यह अच्छा विकल्प है। इसमें मूल रचना की संवेदना, शैली और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना सबसे महत्वपूर्ण होता है।

तकनीकी अनुवाद की बढ़ती मांग

■ विज्ञान, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर और डिजिटल उपकरणों से जुड़ी सामग्री के अनुवाद की मांग बढ़ रही है। वेबसाइट, मोबाइल एप और सॉफ्टवेयर को विभिन्न भाषाओं के अनुकूल बनाने यानी लोकलाइजेशन में भी नए अवसर हैं।

कानून और चिकित्सा में विशेषज्ञता

■ कानूनी दस्तावेजों, अनुबंधों, न्यायालयीन कार्यवाहियों, चिकित्सा रिपोर्टों और दवाओं से संबंधित सामग्री के अनुवाद में विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रों में भाषा के साथ संबंधित विषय का ज्ञान और अत्यधिक सटीकता जरूरी है।

मीडिया और मनोरंजन की दुनिया

■ फिल्मों, वेब सीरीज, वृत्तचित्रों और वीडियो गेम के लिए सबटाइटल, डबिंग स्क्रिप्ट और संवादों का अनुवाद किया जाता है। डिजिटल मनोरंजन के विस्तार ने इस क्षेत्र में रचनात्मक युवाओं के लिए नए अवसर खोले हैं।

सरकारी और संस्थागत अवसर

■ केंद्र एवं राज्य सरकारों के विभागों, राजभाषा अनुभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों और शैक्षणिक संस्थानों में अनुवाद संबंधी कार्यों के अवसर मिलते हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठनों, गैर-सरकारी संस्थाओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भी बहुभाषी विशेषज्ञों की जरूरत होती है।

फ्रीलांसिंग से वैश्विक पहचान

■ अनुवाद के क्षेत्र में नियमित नौकरी के अलावा स्वतंत्र रूप से काम करने के अवसर भी हैं। फ्रीलांस अनुवादक देश-विदेश के ग्राहकों के लिए पुस्तकें, लेख, वेबसाइट, व्यावसायिक दस्तावेज और डिजिटल सामग्री का अनुवाद कर सकते हैं।

कैसे करें शुरुआत?

■ भाषा, साहित्य या अनुवाद में स्नातक अथवा स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करें।
■ अनुवाद में डिप्लोमा और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों पर विचार करें।
■ हिंदी के साथ अंग्रेजी और अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का ज्ञान बढ़ाएं।
■ कानून, चिकित्सा, तकनीक जैसे किसी एक विषय में विशेषज्ञता विकसित करें।
■ डिजिटल अनुवाद उपकरणों का अभ्यास करें और अपना पोर्टफोलियो बनाएं।

करियर मंत्र

■ भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, अवसरों की दुनिया का प्रवेश द्वार भी है। अपनी भाषाई दक्षता को तकनीकी ज्ञान और विषयगत विशेषज्ञता से जोड़ें। निरंतर अभ्यास और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता आपको अनुवाद के क्षेत्र में एक सम्मानजनक एवं रचनात्मक करियर की पहचान दिला सकती है।

एआई के दौर में नई भूमिका

■ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन अनुवाद ने काम को तेज किया है, लेकिन भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक बारीकियों को समझने में मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है। मशीन अनुवाद का संपादन, गुणवत्ता परीक्षण और एआई आधारित भाषा उपकरणों का उपयोग सीखना युवाओं के लिए अतिरिक्त अवसर पैदा कर सकता है।

छोटा उद्यम, बड़ा अवसर

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र में आपार संभावनाएँ

▸▸ नौकरी के साथ अपना व्यवसाय शुरू करने का भी सुनहरा मौका

देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। कम पूंजी में व्यवसाय शुरू करने से लेकर बड़े उद्यमों के साथ जुड़कर रोजगार पाने तक, यह क्षेत्र युवाओं के सामने अनेक संभावनाएं प्रस्तुत करता है। खास बात यह है कि युवा स्वयं आत्मनिर्भर बनने के साथ दूसरे लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं।



एमएसएमई की तीन श्रेणियां

■ 1 अप्रैल 2025 से लागू संशोधित मानकों के अनुसार उद्यमों का वर्गीकरण निवेश और वार्षिक कारोबार के आधार पर किया जाता है।

उद्यम की श्रेणी	निवेश की सीमा	वार्षिक कारोबार
सूक्ष्म	2.5 करोड़ तक	10 करोड़ तक
लघु	25 करोड़ तक	100 करोड़ तक
मध्यम	125 करोड़ तक	500 करोड़ तक

इन क्षेत्रों में हैं रोजगार के अवसर

■ **वस्त्र एवं परिधान उद्योग:** सिलाई, डिजाइनिंग, बुनाई, कढ़ाई और रेडीमेड कपड़ों का निर्माण।
■ **खाद्य प्रसंस्करण:** बेकरी, मसाले, अचार, पैकेज्ड फूड और पेय पदार्थों का उत्पादन।
■ **हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योग:** मिट्टी के बर्तन, लकड़ी का काम, खिलौने, सजावटी वस्तुएं और हस्तनिर्मित उत्पाद।
■ **मरम्मत एवं रखरखाव:** मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, वाहन और घरेलू उपकरणों की मरम्मत।
■ **डिजिटल सेवाएं:** ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, वेबसाइट निर्माण ऑनलाइन सेवा।

सरकारी योजनाओं से मिलेगा सहयोग!

■ केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाएं नए उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने और आगे बढ़ाने में सहायता करती हैं।
■ **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम:** नए सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने के लिए बैंक ऋण से जुड़ी सब्सिडी का प्रावधान।
■ **मुद्रा योजना:** पात्र छोटे कारोबारियों और सूक्ष्म उद्यमियों को ऋण की सुविधा।
■ उद्यम पंजीकरण: एमएसएमई के रूप में ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा, जिससे पात्र उद्यम सरकारी योजनाओं और लाभों तक पहुंच बना सकते हैं।

क्या है एमएसएमई क्षेत्र?

■ एमएसएमई का पूरा नाम माइक्रो, स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज यानी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम है। इसमें छोटे कारखाने, घरेलू उद्योग, सेवा इकाइयां, निर्माण कार्य, खाद्य प्रसंस्करण, मरम्मत सेवाएं और अनेक छोटे व्यावसायिक प्रतिष्ठान शामिल हैं। यह क्षेत्र स्थानीय संसाधनों और कौशल के आधार पर रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

नौकरी नहीं, अपना उद्यम भी शुरू करें

■ एमएसएमई क्षेत्र केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं है। युवा अपनी रुचि और कौशल के अनुसार छोटे स्तर पर व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, फूड प्रोसेसिंग यूनिट, बुटीक, मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर, डिजिटल सर्विस एजेंसी, खिलौना निर्माण और ऑनलाइन कारोबार शुरू किए जा सकते हैं। व्यवसाय बढ़ने के साथ अन्य युवाओं को भी रोजगार दिया जा सकता है।

एमएसएमई में करियर बनाने क्या सीखें?

■ इस क्षेत्र में सफल होने के लिए केवल शैक्षणिक डिग्री ही पर्याप्त नहीं है। युवाओं को अपने चुने हुए व्यवसाय के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण, डिजिटल कौशल, वित्तीय प्रबंधन, विपणन, ग्राहक सेवा और उद्यम संचालन की जानकारी हासिल करनी चाहिए। आईटीआई, पॉलिटेक्निक, कौशल विकास केंद्र और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान इस दिशा में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ ने रचा विश्व रिकॉर्ड

1.07 लाख से अधिक प्रतिभागियों ने कराया पंजीकरण

कैबिनेट मंत्री लोढ़ा की संकल्पना को युवाओं का जोरदार प्रतिसाद

50 विजेताओं को 10-10 लाख के कार्यादेश, पांच करोड़ का फंड



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में कौशल, रोजगार, उद्यमिता एवं नवाचार विभाग की ओर से आयोजित ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ बहुराज्यीय नवाचार प्रतियोगिता को विद्यार्थियों, युवाओं, नए उद्यमियों और शोधकर्ताओं का अभूतपूर्व प्रतिसाद मिला है। 31 अक्टूबर की मध्यरात्रि को प्रतियोगिता की आवेदन प्रक्रिया समाप्त हो गई। इस प्रतियोगिता के लिए कुल 1 लाख 7 हजार 603 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है। युवाओं के नवाचारों को मंच उपलब्ध कराने वाली इस प्रतियोगिता ने विश्व रिकॉर्ड बनाया है। यह जानकारी कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने दी है। महाराष्ट्र, गोवा, छत्तीसगढ़ तथा केंद्रशासित प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव को शामिल करते हुए महाराष्ट्र जोन से कुल 1,07,603 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है। इसमें 79,162 टीमों ने हिस्सा लिया है, जबकि 32,298 प्रतिभागियों ने अपनी प्रोफाइल पूरी की है। इसके अलावा 6,192 महिलाओं और 18 वर्ष से कम आयु के 4,549 प्रतिभागियों ने भी पंजीकरण कराया है। सामान्य वर्ग से 21,550 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। प्रतियोगियों की ओर से कुल 16,057 नवाचारपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

युवाओं की उद्यमशील क्षमता का प्रमाण

■ मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने कहा कि ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ को मिला उत्साहजनक प्रतिसाद युवाओं की रचनात्मकता और उद्यमशील क्षमता का प्रमाण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में महाराष्ट्र को देश की ‘इनोवेशन कैपिटल’ बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता के 50 विजेताओं को प्रत्येक 10 लाख रुपए, यानी कुल 5 करोड़ रुपए के कार्यादेश दिए जाएंगे। युवाओं के विचारों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें धरातल पर उतारने का अवसर उपलब्ध कराना इस पहल का मुख्य उद्देश्य है। हम युवाओं को नौकरी मांगने वाले नहीं, बल्कि रोजगार पैदा करने वाले उद्यमी और नवाचारक बनाना चाहते हैं।

नवाचारपूर्ण समाधान खोजे जाएंगे

■ प्रतियोगिता के माध्यम से कृषि, कानून एवं व्यवस्था, महिला एवं बाल कल्याण, नगर विकास, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाएं, रक्षा, स्थिरता (ऊर्जा, जलवायु एवं संबंधित क्षेत्र), बुनियादी ढांचा एवं परिवहन, उभरती प्रौद्योगिकी (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन एवं अन्य तकनीक) तथा शिक्षा एवं रोजगार क्षमता जैसे 10 प्रमुख क्षेत्रों की समस्याओं के लिए नवाचारपूर्ण समाधान खोजे जाएंगे। प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र के अंतर्गत पांच उपक्षेत्र शामिल किए गए हैं। इस प्रकार कुल 50 उपक्षेत्रों से विजेताओं का चयन किया जाएगा। प्रतियोगिता के 50 विजेताओं को प्रत्येक 10 लाख रुपए के कार्यादेश दिए जाएंगे। इसके लिए कुल 5 करोड़ रुपए का फंड उपलब्ध कराया जाएगा।

सीएम महाफंड योजना

■ महाराष्ट्र को नवाचार की राजधानी बनाने के उद्देश्य से इस योजना के तहत 30 लाख नवाचार करने वाले युवाओं में से चयनित एक लाख युवाओं को 5 से 10 लाख रुपये तक का बिना किसी गारंटी (कोलेटरल फ्री) और बेहद कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने की योजना है। इसके साथ ही नए उद्यमियों और नवाचार करने वाले युवाओं को अपना स्टार्टअप शुरू करने के लिए विशेषज्ञों के माध्यम से मार्गदर्शन भी दिया जाएगा।

अल्पकालीन पाठ्यक्रम

■ युवाओं को आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण देकर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न अल्पकालीन पाठ्यक्रम निःशुल्क चलाए जा रहे हैं। इनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा, ड्रोन तकनीक, इलेक्ट्रिक वाहन तकनीक, सौर ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, मोबाइल रिपेयरिंग एवं टेक्नीशियन कोर्स तथा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर जैसे आधुनिक रोजगारोन्मुखी कौशल शामिल हैं। सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में चरणबद्ध तरीके से आधुनिक तकनीक पर आधारित नए पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं। इनमें सोलर टेक्नीशियन (इलेक्ट्रिकल), इलेक्ट्रिक वाहन मैकेनिक, ड्रोन टेक्नीशियन, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग टेक्नीशियन (3D प्रिंटिंग), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रोग्रामिंग असिस्टेंट तथा इंडस्ट्रियल रोबोटिक्स एवं डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग जैसे पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीक से संबंधित आधुनिक कौशल सीखने का अवसर मिलेगा।

100 कौशल प्रशिक्षण केंद्रों को मंजूरी

■ आज के तेजी से बदलते तकनीकी और प्रतिस्पर्धात्मक दौर में युवाओं को रोजगार के योग्य बनाने के उद्देश्य से महाराष्ट्र सरकार के कौशल विकास विभाग ने ‘महात्मा ज्योतिबा फुले कौशल प्रशिक्षण केंद्र’ योजना शुरू की है। मेट्रो चौक स्थित एल्फिंस्टन टेक्निकल हाईस्कूल परिसर के दक्ष हॉल में इस योजना का ऑनलाइन उद्घाटन कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा के हाथों किया गया। इस योजना के तहत मात्र 300 वर्ग फुट जगह में भी कौशल प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने की अनुमति दी गई है। पहले चरण में राज्यभर में 100 केंद्रों को प्रायोगिक आधार पर मंजूरी दी गई है, जिनमें से 12 केंद्रों का उद्घाटन किया गया। इस पहल के माध्यम से कौशल प्रशिक्षण की सुविधा गांव-गांव और बस्ती-बस्ती तक पहुंचाने का सरकार का प्रयास है। मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले कौशल प्रशिक्षण केंद्र भारत का पहला ऐसा उपक्रम है। राज्य के झुग्गी-बस्तियों, दुर्गम, पहाड़ी, नक्सल प्रभावित और आदिवासी क्षेत्रों के जरूरतमंद युवक-युवतियों को कौशल विकास प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। प्रमोद महाजन कौशल विकास एवं उद्यमिता अभियान के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने के लिए जगह संबंधी नियमों में छूट दी गई है।

मुंबई-कोंकण के बीच नियमित हवाई सेवा!



पर्यटन और रोजगार को मिलेगी नई रफ्तार

मुंबई। महाराष्ट्र के तटवर्ती सिंधुदुर्ग जिले के पर्यटन और आर्थिक विकास को नई गति मिलने वाली है। 16 नवंबर से सिंधुदुर्ग के चिपी एयरपोर्ट और नवी मुंबई के बीच नियमित विमान सेवा शुरू होगी। यह उड़ान सप्ताह के सातों दिन उपलब्ध रहेगी। जिले के पालकमंत्री एवं राज्य के शिपिंग मंत्री नितेश राणे ने इसकी घोषणा की। इस सेवा के शुरू होने से मुंबई और सिंधुदुर्ग के बीच आवागमन आसान होने के साथ पर्यटन कारोबार को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

रोजाना मिलेगी हवाई यात्रा की सुविधा

■ नितेश राणे के मुताबिक, फ्लाय 91 एयरलाइन की नियमित उड़ान सिंधुदुर्ग के लिए महत्वपूर्ण शुरुआत है। अब पर्यटक नवी मुंबई से सीधे हवाई मार्ग के जरिए जिले तक पहुंच सकेंगे। इससे यात्रा का समय कम होगा और अधिक पर्यटक सिंधुदुर्ग का रुख कर सकेंगे। होटल, परिवहन, टूर गाइड और स्थानीय कारोबार से जुड़े लोगों को इसका फायदा मिलने की संभावना है।

1999 में मिला था पर्यटन जिले का दर्जा

■ राणे ने बताया कि वर्ष 1999 में तत्कालीन मंत्री नारायण राणे ने सिंधुदुर्ग को पर्यटन जिला घोषित करने का निर्णय लिया था। इसके पीछे खेती और मछली पालन के साथ पर्यटन को भी जिले की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बनाने की सोच थी। इसी उद्देश्य से चिपी-वेंगुर्ला में महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडल (एमआईडीसी) के माध्यम से एयरपोर्ट का निर्माण कराया गया था।

सुविधाओं के विकास पर सरकार का जोर

■ चिपी एयरपोर्ट पर तकनीकी और अन्य समस्याओं के कारण पहले विमान सेवाएं बंद हो गई थीं। पिछले दो वर्षों में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महायुति सरकार ने एयरपोर्ट को विकसित करने पर जोर दिया।

एनएमएसीसी में ‘द लाइब्रेरी’ का उद्घाटन



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। नीता अंबानी ने मुंबई स्थित नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र (एनएमएसीसी) में एक नए साहित्यिक और सांस्कृतिक केंद्र 'द लाइब्रेरी' का शुभारंभ किया है। इस पुस्तकालय में विश्वभर के प्रकाशकों की 4,500 से अधिक पुस्तकें संग्रहित हैं। इसमें कथा साहित्य, बाल साहित्य, कला, डिजाइन, इतिहास, संस्कृति, खान-पान और यात्रा से संबंधित पुस्तकें शामिल हैं। साथ ही, इसमें अमर चित्र कथा का संपूर्ण संग्रह भी उपलब्ध है, जो इसे पाठकों और परिवारों के लिए एक नया आकर्षण केंद्र बनाता है। इस अवसर पर साहित्य जगत के कई मशहूर गणमान्यों के अलावा करीना कपूर खान, सैफ अली खान जैसे बॉलीवुड सेलिब्रिटीज भी शामिल हुए। मुंबई में आयोजित इस समारोह में रिलायंस फाउंडेशन की फाउंडर-चेयरपर्सन, नीता अंबानी समेत अंबानी परिवार के सदस्य शामिल हुए। एनएमएसीसी में शुरू हुई यह सुविधा आज यानी एक नवंबर से आधिकारिक रूप से आम जनता के लिए खोल दी जाएगी। कंपनी के मुताबिक इसकी ऑफिशियल पब्लिक ओपनिंग एक नवंबर से करने का फैसला लिया गया है।

पुस्तकालय की विशेषताएँ

■ यह पुस्तकालय एक ऐसे स्थान के रूप में बनाया गया है जहाँ आगंतुक पढ़ सकते हैं, किताबें देख सकते हैं, भोजन का आनंद ले सकते हैं और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। इसमें पुस्तकालय, किताबों की दुकान और भोजनालय की सभी सुविधाएँ मौजूद हैं। यहाँ 4,500 से अधिक पुस्तकें हैं। संग्रह में कई विषयों पर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकें शामिल हैं। आगंतुक पढ़ने के साथ-साथ भोजन और पेय पदार्थों का भी आनंद ले सकते हैं।

आशीष शाह ने तैयार की डिज़ाइन

■ इस पुस्तकालय को वास्तुकार और डिजाइनर आशीष शाह ने डिजाइन किया है। दो मंजिला यह स्थान पारंपरिक विश्वविद्यालय पुस्तकालयों और मिलान की आंतरिक सज्जा शैली से प्रेरित है।

‘प्रमुख उपनिषद’ पुस्तक का लोकार्पण एवं काव्य गोष्ठी संपन्न



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। शनिवार को आर के पब्लिकेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दीनानाथ साह एवं महेश चन्द्र जोशी द्वारा लिखित पुस्तक ‘प्रमुख उपनिषद’ का खारघर स्थित ओएसिस क्लब हाउस, साई मन्नत सोसायटी में लोकार्पण संपन्न हुआ । समारोह की अध्यक्षता गर्वित भारत शोधकेन्द्र के अध्यक्ष श्री विपुल सेन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ लेखक श्री कामता प्रसाद पाण्डेय, विशेष अतिथि श्री सेवा सदन प्रसाद एवं कवि श्री पवन तिवारी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने अपने वक्तव्य में कहा कि उपनिषद भारतीय आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन के महत्त्वपूर्ण आधार हैं। ऐसे विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्यों और चिंतन-परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वक्ताओं ने इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय ज्ञान-परंपरा, उपनिषदों के चिंतन और भारतीय दर्शन की समृद्ध विरासत से परिचित कराने का प्रयास किया । समारोह का संचालन सुश्री भावना ने किया । आर के पब्लिकेशन के निदेशक रामकुमार ने दोनों लेखकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया एवं उपस्थित अतिथियों, साहित्यकारों एवं साहित्यप्रेमियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि राकेश मणि त्रिपाठी के संचालन में हुकुमचंद कोठारी, विश्वम्भर दयाल, लता तेजेश्वर, त्रिलोचन सिंह अरोरा, नंदलाल क्षितिज, प्रकाश झा, विनोद चतुर्वेदी, कामता प्रसाद पांडेय,पवन तिवारी, विपुल सेन, सेवा सदन,महेश जोशी आदि ने अपनी स्वरचित कविता का पाठ किया। इस कार्यक्रम में आशुतोष जोशी, विनोद किल्ला, सुयश मोहन,विवेक साह, एम एम शर्मा, सृजित श्रीनिवासन, कोमल जोशी, रमेश बिंदल, राजन गोयल,अर्चना साह,अनीता गुप्ता, गीता जोशी,समीर सक्सेना सहित अनेक प्रबुद्ध साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

शिक्षकों की पदोन्नति पर लगी रोक

हाईकोर्ट के आदेश तक प्रक्रिया रोकने के निर्देश

मुंबई। महाराष्ट्र में जिला परिषद स्कूलों में कार्यरत हजारों शिक्षकों को पदोन्नति के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा। राज्य सरकार ने शिक्षकों की प्रमोशन प्रक्रिया पर फिलहाल रोक लगाने का फैसला किया है। मुंबई में हुई एक विशेष बैठक के बाद शालेय शिक्षण राज्यमंत्री पंकज भोयर ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि मुंबई हाईकोर्ट का अंतिम या अंतरिम आदेश आने तक पदोन्नति की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ाई जाए। इस फैसले से लंबे समय से प्रमोशन की प्रतीक्षा कर रहे शिक्षकों को निराशा हाथ लगी है।

हाईकोर्ट के आदेश तक रुकी रहेगी प्रक्रिया



■ जिला परिषद शिक्षकों की पदोन्नति और शिक्षक पात्रता परीक्षा से जुड़े नियमों को लेकर विभिन्न मामले न्यायालय में विचाराधीन हैं। इसी कानूनी स्थिति को देखते हुए सरकार ने फिलहाल प्रमोशन प्रक्रिया रोकने का निर्देश दिया है। राज्यमंत्री पंकज भोयर ने अधिकारियों से कहा है कि अदालत का स्पष्ट आदेश आने के बाद ही इस संबंध में आगे की कार्रवाई की जाए।

न्यायालय के फैसले पर टिकी निगाहें

■ शिक्षक संगठनों का कहना है कि सरकार को हाईकोर्ट में शिक्षकों के हितों का मजबूती से पक्ष रखना चाहिए, ताकि योग्य शिक्षकों को जल्द पदोन्नति मिल सके। फिलहाल सभी की निगाहें मुंबई हाईकोर्ट के अगले आदेश पर टिकी हैं।

शिक्षक संगठनों ने उठाईं 28 मांगें

हाल ही में महाराष्ट्र राज्य शिक्षक परिषद के प्रतिनिधियों ने मंत्रालय में राज्यमंत्री पंकज भोयर से मुलाकात की थी। इस दौरान शिक्षकों की पदोन्नति के अलावा पुरानी सेवानिवृत्ति योजना, रिक्त पदों को भरने और शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों से राहत देने सहित करीब 28 मांगों पर चर्चा हुई। शिक्षक संगठनों ने इन मुद्दों पर सरकार से सकारात्मक निर्णय लेने की मांग की।

पालघर से काशी तक अहिंसा योग का शंखनाद

मानवता का संदेश लेकर निकले योगीराज भारत भूषण भारतेंदु

वाग्ज्योति संवाददाता

पालघर। महाराष्ट्र के पालघर से आज अहिंसा योग के एक विशेष जनजागरण अभियान का शुभारंभ हुआ। ‘सेव सेल्फ – द अवेकिंग यात्रा (फेज-2)’ के अंतर्गत ब्रह्मर्षि योगीराज श्री भारत भूषण भारतेंदु जी महाराज पालघर से काशी (वाराणसी) के लिए 14 दिवसीय आध्यात्मिक एवं जनजागरण यात्रा पर रवाना हुए। श्री हरि नारायण सेवा संस्थान, पालघर एवं अहिंसा योग के तत्वावधान में आयोजित इस यात्रा का उद्देश्य योग, अहिंसा, आत्मजागरण, मानसिक शांति, स्वास्थ्य, करुणा, मानवीय संवेदना और विश्व बंधुत्व का संदेश जन-जन तक पहुँचाना है। यात्रा के दौरान महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए योगीराज काशी पहुँचेंगे।



एडीजी कृष्णा प्रकाश ने दिखाई हरी झंडी

■ अपर पुलिस महानिदेशक कृष्णा प्रकाश ने योगीराज की प्रशंसा करते हुए इस यात्रा से सभी को जुड़ने का आह्वान किया और कहा आज के समय में योगीराज का यह मिशन विश्व को एक नई राह की तरफ ले जाएगा। उन्होंने कहा कि “अहिंसा योग किसी एक जाति, धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं है। यह संपूर्ण मानवता के लिए शांति, स्वास्थ्य और सद्भाव का मार्ग है।” इस अभियान के माध्यम से योगीराज का प्रयास है कि युवा पीढ़ी आत्मअनुशासन, नशामुक्ति, मानसिक संतुलन, भारतीय संस्कृति, संगीत और मानवीय मूल्यों से जुड़े।

इनकी रही उपस्थिति

■ इस अवसर पर सोहन लाल बाफना, राहुल ठाकरे, प्रवीण झा, जयंतिलाल बाफना, जितेंद्र यादव, संपतलाल बाफना, उत्कर्ष पाण्डेय, रमेश बाफना, विजय शंकर पांडे, रुद्र बाफना, श्रीकांत मिश्रा, विरल बाफना, भोगीलाल वीरा, शत्रुघ्न प्रसाद, भावेश बाफना, श्रीराम मणि त्रिपाठी, जयेश बाफना, शैलेश बाफना, जिगर बाफना, हर्षद शाह, पुन्नर तिवारी, शैलेश शाह, अविनाश श्रीवास्तव, संतोष बरनवाल, उमेश गावली (डीवाईएसपी), उत्तम घरत (नगराध्यक्ष), केरल ढोखा, प्रकाश शाह, रमेश शाह की उपस्थिति रही। संचालन आयुष भारत ने किया।

काव्य रसधारा में सराबोर हुए हजारों श्रोता

■ **श्री ब्रजमंडल पं संस्था का 35वाँ विराट कवि सम्मेलन भव्यता के साथ संपन्न**

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। साहित्य, संस्कृति और भक्ति के त्रिवेणी संगम का अनुपम दृश्य उस समय साकार हो उठा, जब गिरगांव चौपाटी स्थित आलोकित ब्रजधाम में श्रीकृष्ण रासलीला महोत्सव के समापन अवसर पर श्री ब्रजमंडल पं संस्था, मुंबई की ओर से 35वें विराट कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। हास्य, व्यंग्य, वीर रस, गीत, गजल और शृंगार की काव्यधारा में हजारों श्रोता देर रात तक भावविभोर होते रहे। संस्था के अध्यक्ष अनिल आर. अग्रवाल एवं मंत्री ओमप्रकाश बी. अग्रवाल के मार्गदर्शन में आयोजित इस साहित्यिक समारोह को कोषाध्यक्ष प्रदीप आर. लाड़ीवाल, कवि सम्मेलन संयोजक एवं ट्रस्टी कानबिहारी अग्रवाल तथा श्रीकृष्ण रासलीला संयोजक विवेक अग्रवाल ने सफल बनाया। संचालन कानबिहारी अग्रवाल ने किया। समारोह का शुभारंभ जीटीवी ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन महेश बंशीधर अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर समारोह अध्यक्ष कैलाश अग्रवाल, मुख्य अतिथि अनिल एम. गुप्ता, सरस्वती पूजनकर्ता अमरीशचंद अग्रवाल, दीप प्रज्ज्वलनकर्ता राजीव एस. अग्रवाल तथा स्वागत अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण अग्रवाल (मन्नू सेठ) की गरिमामयी उपस्थिति रही।



इनकी रही उपस्थिति

■ समारोह में श्यामलाल अग्रवाल, प्रदीप जैन, श्रीमती रानी पांडे (राजरानी फाउंडेशन), शशिधर पांडे, चमनलाल अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, पवन अग्रवाल, संजय अग्रवाल एवं घनश्याम अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। संस्था के ट्रस्टी एवं पदाधिकारियों सुरेशचंद अग्रवाल, बृजकिशोर अग्रवाल, रविशंकर अग्रवाल, गोविंद डी. अग्रवाल एवं अनिल पी. अग्रवाल की सहभागिता उल्लेखनीय रही। वहीं कार्यकारिणी पदाधिकारियों एवं सदस्यों राजेश मित्तल, गौरव शर्मा, संदीप पी. अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, अशोक बी. अग्रवाल, नरेंद्र अग्रवाल, धर्मेश गर्ग, पवन अग्रवाल एवं उमेश मित्तल ने भी आयोजन की गरिमा बढ़ाई। आयोजन समिति के उदेश अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, राजेश बी. अग्रवाल, मुकुंद शर्मा, देवेंद्र अग्रवाल, विकास डी. अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, दीपक अग्रवाल एवं कौशल पिपरिया सहित अन्य सदस्यों का सहयोग सराहनीय रहा।

महाराष्ट्र बोर्ड का बड़ा ऐलान!

10वीं-12वीं की फरवरी-मार्च 2027 परीक्षा का फाइनल टाइमटेबल जारी



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा मंडल ने फरवरी-मार्च 2027 में आयोजित होने वाली 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं का अंतिम टाइमटेबल जारी कर दिया है। बोर्ड की ओर से जारी आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार, 12वीं की लिखित परीक्षाएं 8 फरवरी 2027 से शुरू होंगी, जबकि 10वीं की लिखित परीक्षाओं का आगाज 15 फरवरी 2027 से होगा। इसके साथ ही प्रैक्टिकल, मौखिक और आंतरिक मूल्यांकन परीक्षाओं की तारीखें भी निर्धारित कर दी गई हैं। बोर्ड ने इस संबंध में आधिकारिक परिपत्र जारी किया है। विद्यार्थी महाराष्ट्र बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर परीक्षा का टाइमटेबल देख सकते हैं। इस बार राज्य के पुणे, नागपुर, छत्रपति संभाजीनगर, मुंबई, कोल्हापुर, अमरावती, नासिक, लातूर और कोंकण सहित सभी नौ विभागीय मंडलों के माध्यम से परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी।

12वीं की परीक्षा का पूरा शेड्यूल

■ महाराष्ट्र बोर्ड के अनुसार, 12वीं यानी उच्च माध्यमिक प्रमाणपत्र (एचएससी) की प्रैक्टिकल, श्रेणी, मौखिक और आंतरिक मूल्यांकन परीक्षाएं 20 जनवरी 2027 से 6 फरवरी 2027 तक आयोजित की जाएंगी। वहीं, 12वीं की लिखित परीक्षाएं 8 फरवरी 2027 से शुरू होकर 18 मार्च 2027 तक चलेंगी।

10वीं की परीक्षा की तारीखें घोषित

■ इसी तरह 10वीं यानी माध्यमिक शालांत प्रमाणपत्र (एसएससी) की प्रैक्टिकल, श्रेणी, मौखिक और आंतरिक मूल्यांकन परीक्षाएं 28 जनवरी 2027 से 13 फरवरी 2027 तक होंगी। 10वीं की लिखित परीक्षाएं 15 फरवरी 2027 से शुरू होकर 15 मार्च 2027 तक आयोजित की जाएंगी। टाइमटेबल जारी होने के बाद अब विद्यार्थियों को अपनी परीक्षा की तैयारी और रिवीजन की योजना बनाने में आसानी होगी। महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा मंडल ने बताया है कि दोनों परीक्षाओं का टाइमटेबल 6 नवंबर 2026 से आधिकारिक वेबसाइट WWW.MAHAHSSCBOARD.IN पर उपलब्ध करा दिया गया है। विद्यार्थी वेबसाइट पर जाकर इसे डाउनलोड कर सकते हैं। हालांकि, बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि वेबसाइट पर उपलब्ध टाइमटेबल केवल जानकारी के लिए है। स्कूल या जूनियर कॉलेज के माध्यम से मिलने वाला प्रिंटेड टाइमटेबल ही अंतिम और प्रमाणिक माना जाएगा। इसलिए विद्यार्थियों को अपने स्कूल या कॉलेज से प्राप्त छपी हुई समय-सारणी के अनुसार ही परीक्षा की तारीखों की पुष्टि करनी चाहिए।

फर्जी टाइमटेबल से सावधान रहने की अपील

■ महाराष्ट्र बोर्ड के सचिव डॉ. दीपक माली ने विद्यार्थियों और अभिभावकों से अपील की है कि वे व्हाट्सऐप और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल होने वाले फर्जी टाइमटेबल या भ्रामक संदेशों पर भरोसा न करें।

मुंबई में सीएनजी फिर महंगा

91.50 रुपए पहुंची कीमत

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। पुणे, पिंपरी-चिंचवड़ और नासिक के बाद अब मुंबई और आसपास के इलाकों में भी सीएनजी की कीमतों में बढ़ोतरी कर दी गई है। महानगर गैस लिमिटेड (एमजीएल) ने सीएनजी के दाम में 1.50 रुपए प्रति किलो की वृद्धि करने का फैसला किया है। नई दरें शनिवार मध्यरात्रि से लागू होंगी। इस बढ़ोतरी के बाद मुंबई में सीएनजी की कीमत बढ़कर 91.50 रुपए प्रति किलो हो गई है। सीएनजी के दाम बढ़ने से मुंबई में ऑटो रिक्शा और टैक्सी से सफर करना महंगा होने की आशंका है। इसका सीधा असर रोजाना यात्रा करने वाले यात्रियों और सीएनजी पर निर्भर वाहन चालकों की जेब पर पड़ सकता है। गौरतलब है कि दिवाली से ठीक पहले 1 नवंबर को भी महानगर गैस ने सीएनजी की कीमत में एक रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी की थी। अब दिवाली के बाद एक बार फिर कीमतें बढ़ाने का फैसला लिया गया है।



वाग्ज्योति टाइम्स
मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

देवउठनी अथवा प्रबोधिनी एकादशी

देवता को जगाने से पहले अपने भीतर के देवत्व को जगाएं



भारतीय संस्कृति में पर्व और त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे जीवन को नई दिशा देने वाले सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अवसर भी हैं। कार्तिक मास का विशेष महत्त्व इसी दृष्टि से देखा जाता है। दीपदान, तुलसी पूजन, तीर्थ स्नान, व्रत, कथा और भजन-कीर्तन के माध्यम से यह मास मनुष्य को संयम, पवित्रता और आत्मचिंतन की प्रेरणा देता है। इसी क्रम में आने वाली देवउठनी अथवा प्रबोधिनी एकादशी विशेष आध्यात्मिक महत्त्व रखती है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी से योगनिद्रा में गए भगवान विष्णु कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागृत होते हैं। इस दिन से चातुर्मास की समाप्ति और मांगलिक कार्यों के पुनः आरंभ की परंपरा जुड़ी हुई है। लेकिन इस धार्मिक प्रतीक का एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ भी है। क्या भगवान को जगाने का यह पर्व वास्तव में हमें स्वयं को जगाने का संदेश नहीं देता?

मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार की व्यस्तताओं, इच्छाओं और प्रतिस्पर्धाओं में उलझा रहता है। कभी अहंकार उसे घेर लेता है, कभी स्वार्थ उसकी संवेदनाओं को सीमित कर देता है और कभी भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में वह अपने सामाजिक दायित्वों को भूल जाता है। ऐसे में प्रबोधिनी एकादशी हमें आत्ममंथन का अवसर देती है। यह पूछने का समय है कि क्या हमारे भीतर करुणा जागृत है? क्या हम दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझते हैं? क्या हमारी सफलता में समाज के प्रति कोई योगदान भी शामिल है?

भारतीय दर्शन में धर्म का अर्थ केवल पूजा-पद्धति का निर्वाह नहीं है। धर्म वह आचरण है जो जीवन को संतुलित करता है और समाज में सद्भाव स्थापित करता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में निष्काम कर्म का संदेश देते हुए मनुष्य को अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी है। इसी भावना में सेवा, परोपकार, सत्य और करुणा का समावेश है।

प्रबोधिनी एकादशी के साथ तुलसी विवाह की परंपरा भी जुड़ी है। तुलसी भारतीय जनजीवन में केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना का भी प्रतिनिधित्व करती है। तुलसी पूजन हमें स्मरण कराता है कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता भी हमारी सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा है।

आज समाज को ऐसे धार्मिक जागरण की आवश्यकता है जो मनुष्य को विभाजित नहीं, बल्कि जोड़ने का कार्य करे। मंदिरों में दीप प्रज्वलित करने के साथ यदि हम किसी जरूरतमंद के जीवन में आशा का दीप जला सकें, किसी निराश व्यक्ति को सहारा दे सकें और किसी पीड़ित के चेहरे पर मुस्कान ला सकें, तो हमारी भक्ति अधिक सार्थक हो जाएगी।

वास्तविक जागरण वही है जिसमें मनुष्य अपने भीतर के अज्ञान, अहंकार, ईर्ष्या और स्वार्थ को त्यागकर ज्ञान, विनम्रता, प्रेम और सेवा को अपनाए। देवउठनी एकादशी का सबसे सुंदर संदेश यही है कि भगवान के जागरण का उत्सव मनाते हुए हम अपनी सोई हुई मानवीय संवेदनाओं को भी जागृत करें।

धर्म और संस्कृति



तुलसी विवाह : प्रकृति, परंपरा और पारिवारिक संस्कारों का उत्सव

भारतीय संस्कृति में तुलसी का स्थान केवल एक पौधे तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आस्था, पवित्रता, स्वास्थ्य और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। सनातन परंपरा में तुलसी को माता का स्वरूप प्रदान किया गया है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आयोजित होने वाला तुलसी विवाह इसी श्रद्धा और सांस्कृतिक चेतना का विशिष्ट पर्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तुलसी का विवाह भगवान विष्णु के स्वरूप शालिग्राम के साथ संपन्न कराया जाता है। इसे देवउठनी एकादशी से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक अलग-अलग क्षेत्रों और परंपराओं में मनाया जाता है। इस अवसर पर घरों और मंदिरों में तुलसी के पौधे को आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। मंडप बनाया जाता है, मंगलगीत गाए जाते हैं और पारंपरिक विवाह की भांति धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं। तुलसी विवाह से जुड़ी पौराणिक कथा में वृंदा और भगवान विष्णु का उल्लेख मिलता है। वृंदा की अटूट भक्ति और तपस्या की कथा तुलसी के पवित्र स्वरूप से जुड़ी हुई है। इस परंपरा में भगवान विष्णु और तुलसी के मिलन को शुभता, समर्पण और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। इस पर्व का सामाजिक महत्त्व भी कम नहीं है। भारतीय परिवारों में तुलसी विवाह सामूहिक सहभागिता और पारिवारिक एकता का अवसर बनता है। परिवार के बड़े-बुजुर्ग बच्चों को धार्मिक परंपराओं, मंगलगीतों और संस्कारों से परिचित कराते हैं। इस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण होता है।

तुलसी का महत्त्व पर्यावरण और वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है। तुलसी एक सुगंधित औषधीय वनस्पति है, जिसका भारतीय घरेलू जीवन में लंबे समय से उपयोग होता आया है। इसके पत्तों में अनेक जैव सक्रिय यौगिक पाए जाते हैं। हालांकि इसके औषधीय उपयोग को लेकर वैज्ञानिक दावों और पारंपरिक मान्यताओं के बीच अंतर समझना आवश्यक है। तुलसी का संरक्षण घरों में पौधारोपण और हरियाली के प्रति जागरूकता को भी प्रोत्साहित कर सकता है। आज जब पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसी चुनौतियां सामने हैं, तब तुलसी विवाह जैसे पर्वों का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। ये हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, संरक्षण और सह-अस्तित्व की भावना अपनाने की प्रेरणा देते हैं। वास्तव में तुलसी विवाह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय परिवार, लोकसंस्कृति, प्रकृति और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर संगम है। इस पर्व की सार्थकता तभी है जब हम तुलसी पूजन के साथ प्रकृति की रक्षा, पारिवारिक सद्भाव और जीवन में सात्त्विक मूल्यों को भी अपनाएं।

जीवन और अध्यात्म

अध्यात्म : जीवन को संवारने की सहज साधना

जीवन और अध्यात्म जीवन को सुंदर बनाने की कला है अध्यात्म अध्यात्म का अर्थ संसार से दूर होकर एकांत में बैठ जाना नहीं, बल्कि संसार के बीच रहते हुए अपने भीतर की चेतना को जागृत रखना है। यह जीवन को देखने की वह दृष्टि है, जो हमें सुख में विनम्र, दुःख में धैर्यवान और विपरीत परिस्थितियों में भी आशावान बने रहने की प्रेरणा देती है। मनुष्य का जीवन अनेक अनुभवों से गुजरता है। कभी सफलता उसका उत्साह बढ़ाती है, तो कभी असफलता उसे निराश करती है। कभी संबंधों की मधुरता आनंद देती है, तो कभी अपेक्षाओं का बोझ मन को अशांत कर देता है। ऐसे में अध्यात्म हमें स्वयं से जुड़ना सिखाता है। यह समझाता है कि परिस्थितियां हमेशा हमारे नियंत्रण में नहीं होतीं, लेकिन उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया हमारे विवेक और संस्कारों से निर्धारित होती है। अध्यात्म की वास्तविक परीक्षा हमारे रोजमर्रा के व्यवहार में होती है। उदाहरण के लिए, कार्यालय में कोई सहकर्मी हमारी आलोचना कर दे, तो तत्काल क्रोधित होने के बजाय उसकी बात को शांत मन से सुनना और उचित हो तो अपनी गलती स्वीकार करना आध्यात्मिक समझ है। सड़क पर किसी जरूरतमंद को देखकर केवल सहानुभूति जताने के बजाय यथासंभव उसकी सहायता करना करुणा का व्यावहारिक रूप है। घर में किसी बुजुर्ग की बात धैर्यपूर्वक सुनना, बच्चों की छोटी गलतियों पर उन्हें अपमानित करने के बजाय समझाना और परिवार के सदस्यों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करना भी अध्यात्म ही है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने समत्व भाव को जीवन की महत्वपूर्ण साधना बताया है। सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय में संतुलित रहना ही आंतरिक स्थिरता का आधार है। मान लीजिए, किसी विद्यार्थी को परीक्षा में अपेक्षा से कम अंक मिलते हैं। वह निराश होकर प्रयास छोड़ने के बजाय अपनी कमियों को पहचानकर नए उत्साह से तैयारी शुरू करे, तो यह समत्व और कर्मयोग की भावना का उदाहरण है। इसी तरह व्यापार में नुकसान होने पर निराशा में डूबने के बजाय कारणों का विश्लेषण करके आगे की योजना बनाना भी इसी जीवन-दृष्टि को दर्शाता है। अध्यात्म हमें अपने व्यवहार में करुणा, क्षमा, प्रेम और सेवा जैसे गुणों को स्थान देने की सीख देता है। किसी विवाद में अपनी बात मनवाने के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग न करना, गलती करने वाले व्यक्ति को सुधार का अवसर देना और किसी अनजान व्यक्ति की परेशानी में बिना स्वार्थ सहायता करना आध्यात्मिक जीवन के सहज उदाहरण हैं। आज जब मनुष्य भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में मानसिक शांति तलाश रहा है, तब अध्यात्म का महत्व और बढ़ जाता है। प्रतिदिन कुछ समय आत्मचिंतन, प्रार्थना, ध्यान या मौन के लिए निकालना मन को संयमित करने में सहायक हो सकता है। दिन के अंत में स्वयं से तीन प्रश्न पूछना भी एक सरल अभ्यास है—आज मैंने किसकी सहायता की? क्या मेरे किसी व्यवहार से किसी को ठेस पहुंची? कल मैं अपने आचरण को कैसे बेहतर बना सकता हूं? वास्तव में, अध्यात्म जीवन से पलायन नहीं, जीवन को बेहतर ढंग से जीने की कला है। मंदिर में दीप जलाना आस्था है, लेकिन किसी के जीवन में आशा का दीप जलाना भी अध्यात्म है। ईश्वर की आराधना तभी सार्थक होती है, जब उसका प्रकाश हमारे आचरण में दिखाई दे। जीवन का सच्चा अध्यात्म यही है कि हमारा मन निर्मल हो, विचार उदार हों और हमारे कारण किसी दूसरे के जीवन में थोड़ी-सी प्रसन्नता बढ़े।



क्षमा : मनुष्य के चरित्र का सबसे बड़ा आभूषण

भारतीय धर्म-दर्शन में क्षमा को मनुष्य के श्रेष्ठ गुणों में स्थान दिया गया है। क्षमा केवल किसी की गलती को अनदेखा कर देना नहीं, बल्कि अपने मन को द्वेष, प्रतिशोध और कटुता से मुक्त करने का संकल्प है। जो व्यक्ति दूसरों की भूल को समझने और परिस्थितियों के अनुरूप उदारता दिखाने का सामर्थ्य रखता है, वही वास्तविक अर्थों में धैर्यवान और विवेकशील कहलाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने दैवी गुणों का वर्णन करते हुए क्षमा को मनुष्य की श्रेष्ठ विशेषताओं में शामिल किया है।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।

- (श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 16, श्लोक 3) **अर्थात** तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, किसी के प्रति द्वेष न रखना और अहंकार से दूर रहना दैवी गुण हैं।

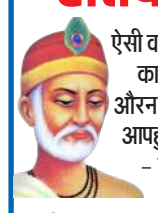
आज के प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में छोटी-छोटी बातों पर नाराजगी, ईर्ष्या और वैमनस्य बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में क्षमा का गुण परिवार, समाज और संबंधों को मजबूत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हालांकि क्षमा का अर्थ अन्याय को स्वीकार करना या गलत कार्यों को प्रोत्साहित करना नहीं है। इसका अर्थ है कि हम उचित सीमाएं बनाए रखते हुए अपने मन में प्रतिशोध की भावना को स्थान न दें।



वास्तव में क्षमा कमजोर व्यक्ति की विवशता नहीं, बल्कि आत्मबल से संपन्न व्यक्ति की उदारता है। जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही दूसरों की भूलों को क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है।

सार रूप से कहें तो दूसरों को क्षमा करना उनके लिए उपकार हो सकता है, लेकिन अपने मन को द्वेष से मुक्त करना स्वयं के लिए सबसे बड़ा उपहार है।

संतवाणी



ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय॥
- संत कबीरदास

भावार्थ : संत कबीर दास कहते हैं कि मनुष्य को सदैव ऐसी मधुर और विनम्र वाणी बोलनी चाहिए, जिससे दूसरों को सुख और शांति मिले। वाणी ऐसी हो कि उसकी शीतलता का प्रभाव न केवल सुनने वाले पर बल्कि बोलने वाले के मन पर भी पड़ता है।

जीवन संदेश : शब्दों में इतनी शक्ति होती है कि वे रिश्ते बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। अतः इनका प्रयोग बहुत ही सावधानी से करना चाहिए।

धर्म और विज्ञान : विरोध नहीं, संवाद की आवश्यकता

धर्म और विज्ञान को अक्सर एक-दूसरे का विरोधी मान लिया जाता है, जबकि दोनों का उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में अलग-अलग ढंग से योगदान देना है। विज्ञान प्रकृति के रहस्यों को तर्क, प्रयोग और प्रमाण के आधार पर समझता है, वहीं धर्म मनुष्य को नैतिकता, करुणा, संयम और सदाचार का मार्ग दिखाता है। एक बाहरी संसार की खोज करता है, तो दूसरा मनुष्य के अंतर्मन को परिष्कृत करने का प्रयास करता है। भारतीय परंपरा में प्रकृति के प्रति सम्मान और उसके संरक्षण की भावना प्राचीन काल से विद्यमान रही है। नदियों को जीवनदायिनी मानकर पूजना, वृक्षों को देवतुल्य स्थान देना और सूर्य को ऊर्जा का स्रोत मानकर अर्घ्य देना हमारी सांस्कृतिक चेतना के परिचायक हैं। आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि नदियाँ, वन, जल, वायु और सूर्य का प्रकाश जीवन के लिए अनिवार्य हैं। हालाँकि धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक निष्कर्षों के बीच अंतर समझना आवश्यक है; किसी परंपरा का सांस्कृतिक महत्व अपने आप में किसी वैज्ञानिक दावे का प्रमाण नहीं होता। हमारे दैनिक जीवन में भी धर्म और विज्ञान के बीच सार्थक संवाद दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, दीपावली पर घरों की सफाई और स्वच्छता का संदेश आज सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। योग और ध्यान की परंपरा को आधुनिक शोध ने तनाव प्रबंधन तथा मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में उपयोगी पाया है। इसी प्रकार व्रत और उपवास धार्मिक आस्था का विषय हैं, लेकिन इनके स्वास्थ्य संबंधी लाभ प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक स्थिति पर निर्भर करते हैं; इन्हें सभी के लिए समान रूप से लाभकारी नहीं माना जा सकता। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब आस्था के नाम पर अप्रमाणित दावों को विज्ञान घोषित कर दिया जाता है अथवा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के नाम पर मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की जाती है। अंधविश्वास से मुक्ति और विवेकपूर्ण आस्था- दोनों ही स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक हैं। वास्तव में, विज्ञान हमें प्रश्न पूछना सिखाता है और धर्म हमें अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देता है। विज्ञान की उपलब्धियाँ जब मानवीय मूल्यों से जुड़ती हैं, तभी उनका उपयोग लोककल्याण के लिए होता है।



अष्टावक्र महागीता



राजा जनक ने जीवन-भर विद्वानों की संगत की, वे शास्त्रार्थ में रुचि लेते रहे, परंतु उन्हें अभी तक सच्चे गुरु की प्राप्ति न हो सकी थी। अनेक वेदाचार्य, विद्वान एवं मनीषी उनके समक्ष अपने-अपने ज्ञान द्वारा आत्मा-परमात्मा की व्याख्या करते रहे, पर जिज्ञासु जनक को संतुष्टि प्राप्त न हुई। वह सब तो उन्होंने विद्यार्थी जीवन में ही सुन-पढ़ लिया था। उन्होंने उसका अनुसरण भी किया था, पर सत्यबोध न हो सका था। जनक के पास वैभव, भोग सब था, पर शांति न थी। जो था, वह अस्थायी था। कुछ देखते-देखते नष्ट हो गया था और कुछ हो जाना निश्चित था, फिर एक दिन स्वयं भी नष्ट होना था, परंतु वह क्या था, जो अनश्वर है! जो न जन्मता है, न मृत्यु को प्राप्त करता है? ऐसे अनेक प्रश्न राजा जनक की जिज्ञासाओं का भार थे। अनेकानेक विद्वानों ने इन प्रश्नों के अपनी प्रतिभा के अनुसार उत्तर भी दिए, परंतु उन्हें शांति न मिली। अभी तक द्वैतवाद पर ही सबका बल रहा। आत्मा-परमात्मा का अंश है और आत्मा अपनी जीवनयात्रा पूरी करके पुनः परमात्मा में विलीन हो जाती है, द्वैतवाद का यही मत था। राजर्षि जनक संतुष्ट नहीं थे, क्योंकि घट नहीं मानता था, विवेक नहीं मानता था कि आत्मा केवल यात्री है। कुछ विद्वानों ने आत्म-सत्ता को प्रमुख बताया, पर उसकी विवेचना न कर सके। गुरु वास्तव में ऐसा होना चाहिए, जो अपनी बात कहे और विरोधियों की मिथ्या बातों का प्रामाणिक खंडन करे या फिर त्वरित बोध करा दे जिससे शिष्य को किसी प्रमाण की आवश्यकता ही न रहे। गुरु-वाक्य, ब्रह्म-वाक्य हो- ऐसा अनुभव वही गुरु करा सकते हैं जिन्हें आत्म-बोध हो। केवल ज्ञान का प्रदर्शन करके शिष्य को प्रभावित कर देना गुरु-प्रवृत्ति नहीं। राजा जनक संशय से परे विश्वासपूर्वक निष्ठित हो चुके थे कि जिस तत्त्व-ज्ञानी की खोज में आयु का अंतिम चरण आ गया, वे वही अष्टावक्र थे। जनक को सांसारिक ज्ञान न लेना था। सांसारिकता में तो उनका अनुभव विराट था। वे तो अध्यात्म के उस मूल ज्ञान को प्राप्त करने के इच्छुक थे, जो योनिचक्र को काट दे। अष्टावक्र ने उन्हें निराश नहीं किया और प्रथम अध्याय में ही आत्म-साक्षात्कार के द्वारा बोध की प्राप्ति कराई।

- क्रमशः

(महर्षि अष्टावक्र द्वारा महाराज जनक को प्रदान किया गया दिव्य ज्ञान, जिसे प्राप्त करके वे देह होते हुए भी विदेह कहलाए।)

तीर्थ दर्शन



पंढरपुर : भक्ति और समता की अनूठी परंपरा



महाराष्ट्र की पावन भूमि पर स्थित पंढरपुर केवल एक तीर्थस्थल नहीं, बल्कि भक्ति, प्रेम, समर्पण और सामाजिक समरसता की सदियों पुरानी परंपरा का जीवंत प्रतीक है। चंद्रभागा नदी के तट पर बसा यह नगर भगवान विठ्ठल और माता रुक्मिणी की भक्ति के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। यहाँ आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु अपने आराध्य के दर्शन के साथ एक ऐसी सांस्कृतिक चेतना का अनुभव करता है, जिसने समाज को समानता और मानवता का संदेश दिया है। पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ भगवान को भक्तवत्सल रूप में पूजा जाता है। कमर पर हाथ रखकर ईंट पर खड़े विठ्ठल की प्रतिमा भक्तों को उस पौराणिक प्रसंग की याद दिलाती है, जिसमें भगवान अपने भक्त पुंडलिक की मातृ-पितृ सेवा से प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हुए थे। यह कथा संदेश देती है कि माता-पिता की सेवा भी ईश्वर की आराधना का श्रेष्ठ स्वरूप है। पंढरपुर की पहचान महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है। संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम और संत चोखामेला जैसे संतों ने अपनी वाणी और जीवन के माध्यम से भक्ति को जनसामान्य तक पहुँचाया। उन्होंने जाति, वर्ग और सामाजिक ऊँच-नीच से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण को महत्व दिया। संत चोखामेला का जीवन विशेष रूप से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध भक्ति की शक्ति का प्रतीक माना जाता है।

वारी : आस्था के साथ समता की यात्रा

पंढरपुर की आषाढ़ी और कार्तिकी वारी इस परंपरा का सबसे अद्भुत रूप है। महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से संत ज्ञानेश्वर और संत तुकाराम की पालखियों सहित अनेक पालखियाँ पंढरपुर की ओर प्रस्थान करती हैं। लाखों वारकरी पैदल यात्रा करते हुए 'ज्ञानोबा-तुकाराम' और 'विठ्ठल-विठ्ठल' का जयघोष करते हैं। इस यात्रा में किसान, श्रमिक, विद्यार्थी, महिलाएँ, बुजुर्ग और विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोग एक साथ चलते हैं। उनके बीच न कोई बड़ा होता है, न छोटा—सबकी पहचान एक ही होती है, वे विठ्ठल के भक्त हैं। वारी केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि अनुशासन, सामूहिकता, सेवा और सहअस्तित्व का पाठ भी है। रास्ते में वारकरियों के लिए भोजन, पानी और विश्राम की व्यवस्था करने वाले अनेक सेवाभावी लोग इस परंपरा को मानवीय संवेदना से जोड़ते हैं।

अभंगों में सामाजिक चेतना

वारकरी संतों ने मराठी अभंगों के माध्यम से अध्यात्म को जनभाषा में व्यक्त किया। संत तुकाराम की वाणी में भक्ति के साथ नैतिकता और सामाजिक चेतना का स्वर मिलता है। संत नामदेव ने प्रेम और समर्पण को महत्व दिया, वहीं संत ज्ञानेश्वर ने आध्यात्मिक ज्ञान को सामान्य जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इन संतों की रचनाएँ आज भी लोगों को सद्भाव, विनम्रता और परोपकार की प्रेरणा देती हैं।

पंढरपुर की सबसे बड़ी सीख यही है कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग केवल कर्मकांड से नहीं, बल्कि निर्मल मन, निष्कपट प्रेम और मानवीय व्यवहार से भी प्रशस्त होता है। जब समाज में जाति, भाषा, वर्ग और आर्थिक स्थिति के आधार पर दूरियाँ बढ़ती हैं, तब वारकरी परंपरा हमें साथ चलने, साथ गाने और एक-दूसरे का सम्मान करने का संदेश देती है। पंढरपुर की चंद्रभागा के तट पर गूँजता विठ्ठल नाम केवल धार्मिक उद्घोष नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का स्वर है। यही कारण है कि पंढरपुर महाराष्ट्र की आस्था का केंद्र होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में भक्ति और समता की अनूठी परंपरा का अमूल्य प्रतीक बना हुआ है।

वाग्ज्योति टाइम्स
मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026
www.vagjyotitimes.com
@vagjyotitimes

मुख्यमंत्री की अपील का असर

आदिवासी परिवारों संग मंत्री लोढ़ा ने मनाया त्यौहार





वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अपील पर कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने गोरेगांव पूर्व स्थित आरे मिल्क कॉलोनी के खांबांचा पाड़ा में आदिवासी परिवारों के साथ दिवाली मनाई। इस दौरान उन्होंने बच्चों को साइकिल, खिलौने, शैक्षणिक सामग्री, पटाखे और बिस्कुट वितरित किए। आदिवासी परिवारों के साथ फराल का आनंद लेने के साथ ही वह पारंपरिक तारपा नृत्य में भी शामिल हुए। वनवासी कल्याण आश्रम, महाराष्ट्र और लोढ़ा फाउंडेशन की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में मंत्री लोढ़ा ने आदिवासी परिवारों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और त्योहार की खुशियां साझा कीं। लोढ़ा फाउंडेशन की पहल के तहत शहर के नागरिकों से एकत्र की गई पुरानी साइकिलों और खिलौनों की मरम्मत कर उन्हें जरूरतमंद बच्चों को वितरित किया गया। इस अवसर पर मंगलप्रभात लोढ़ा ने कहा कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस वर्ष किसानों और आदिवासी भाई-बहनों के साथ दिवाली मनाने की अपील की थी। आरे कॉलोनी परिसर में कुल 27 आदिवासी इलाके हैं। राज्य सरकार में मंत्री और मुंबई उपनगर के सह-पालकमंत्री के रूप में यहां के नागरिकों को जब भी किसी सहायता की जरूरत होगी, वह उसके लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

बच्चों के साथ मंत्री ने फोड़े पटाखे

मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने आदिवासी पाड़े के बच्चों के साथ पटाखे फोड़कर दिवाली मनाई। उन्होंने घर-घर जाकर परिवारों को दिवाली त्योहार का फराल भी वितरित किया। साइकिल, खिलौने और अन्य उपहार पाकर बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

घर-घर बांटा फराल

■ उन्होंने कहा कि लोढ़ा फाउंडेशन के माध्यम से अनुपयोगी वस्तुओं को एकत्र कर उनकी मरम्मत कराई जाती है, ताकि साइकिल और खिलौने जैसी चीजें जरूरतमंद बच्चों के काम आ सकें। उन्होंने हर साल अलग-अलग आदिवासी पाड़ों में दिवाली मनाने का संकल्प भी जताया। प्रकृति के बीच आदिवासी परिवारों के साथ त्योहार मनाना उनके लिए दिवाली की सबसे खास यादों में से एक रहा। कार्यक्रम में आदिवासी कलाकारों ने पारंपरिक तारपा नृत्य प्रस्तुत किया। इसकी धुन पर मंत्री लोढ़ा भी खुद को रोक नहीं पाए और आदिवासी भाई-बहनों के साथ नृत्य में शामिल हो गए। उन्होंने बच्चों के साथ पटाखे फोड़े और घर-घर जाकर दिवाली का फराल भी वितरित किया। इस अवसर पर नगरसेविका प्रीति साटम, वनवासी कल्याण आश्रम के कार्याध्यक्ष सुशील जाजू सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति और बड़ी संख्या में आदिवासी परिवार उपस्थित थे।

तारपा नृत्य में शामिल हुए मंत्री लोढ़ा

■ कार्यक्रम में आदिवासी समुदाय का पारंपरिक तारपा नृत्य आकर्षण का केंद्र रहा। कलाकारों की प्रस्तुति और संगीत से उत्साहित होकर मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा भी नृत्य में शामिल हो गए। उन्होंने आदिवासी भाई-बहनों के साथ कदम मिलाकर उनका उत्साह बढ़ाया।

किसानों का मददगार बना सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्ट

मुख्यमंत्री को सौंपा 10 करोड़ का चेक



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में सूखे की स्थिति से परेशान किसानों को आर्थिक राहत देने के लिए मुंबई के प्रसिद्ध श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर ट्रस्ट ने 10 करोड़ रुपए की सहायता दी है। मंदिर ट्रस्ट की ओर से यह राशि मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा कराई गई है। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को 10 करोड़ रुपए का चेक सौंपा। मंदिर ट्रस्ट के को षाध्यक्ष पवन त्रिपाठी ने बताया कि महाराष्ट्र के कई हिस्सों में सूखे के कारण किसान आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। ऐसे मुश्किल समय में किसानों और प्रभावित नागरिकों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से ट्रस्ट की प्रबंध समिति ने मुख्यमंत्री राहत कोष में 10 करोड़ रुपए देने का निर्णय लिया है।

इनकी रही उपस्थिति

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को सहायता राशि का चेक सौंपने के अवसर पर मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं पूर्व शिवसेना विधायक सदा सर्वणकर, कोषाध्यक्ष पवन त्रिपाठी सहित ट्रस्ट के सदस्य मीना कांबली, महेश मुदलियार, गोपाल दलवी, जितेंद्र राउत, मनीषा तुपे और सुदर्शन सांगले उपस्थित थे। इस अवसर पर ट्रस्ट की कार्यकारी अधिकारी राखी चव्हाण भी मौजूद रहीं। उल्लेखनीय है कि श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर का संचालन एक ट्रस्ट के माध्यम से किया जाता है, जिसमें राज्य सरकार की ओर से नियुक्त सदस्य भी शामिल हैं।

'महाराष्ट्र बाल संसद 2026' : 34 जिलों के 100 से अधिक बाल प्रतिनिधि होंगे शामिल

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। बच्चों की निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ाने, उनमें नेतृत्व क्षमता और लोकतांत्रिक मूल्यों को विकसित करने तथा विकसित महाराष्ट्र के निर्माण में उनके विचारों, अपेक्षाओं और सुझावों को शामिल करने के उद्देश्य से राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा 20 नवंबर को पुणे में 'महाराष्ट्र बाल संसद 2026' का आयोजन किया गया है। इस बाल संसद में राज्य के 34 जिलों के 100 से अधिक बाल प्रतिनिधि शामिल होंगे।

विधायक संजय उपाध्याय का संकल्प

1,000 सोसायटियों में बनवाएंगे वर्षा जल संचयन कुएं



▸▸ पश्चिमी उपनगरों में बोरीवली को मॉडल बनाने की तैयारी

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। इस वर्ष औसत से कम बारिश होने के कारण समूचा महाराष्ट्र सूखे की मार झेल रहा है। मुंबई में कम बारिश और अल नीनो के प्रभाव के चलते जल संकट की आशंका के बीच बोरीवली विधानसभा क्षेत्र में वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल करने का संकल्प लिया गया है। इसके तहत बोरीवली की 1,000 से अधिक हाउसिंग सोसायटियों में बारिश के पानी को जमा करने के लिए कुएं बनवाने की योजना है। संजय उपाध्याय ने दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम में पत्रकारों को संबोधित करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इसके अलावा बोरीवली रेलवे स्टेशन पर आधुनिक और स्वच्छ शौचालय बनाने, स्टेशन के आसपास से अतिक्रमण हटाने तथा यात्रियों की भीड़ नियंत्रित करने के लिए भी कदम उठाए जाएंगे। शहर में पानी की बचत और वर्षा जल संचयन को लेकर गंभीरता से काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मुंबई में सड़कों और हाउसिंग सोसायटियों में बड़े पैमाने पर पेवर ब्लॉक लगाए गए हैं। दूसरी ओर, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से हरित क्षेत्र प्रभावित हो रहा है और भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है। ऐसे में सोसायटियों में वर्षा जल संचयन के लिए कुएं बनाने की पहल भविष्य में पानी की उपलब्धता बढ़ाने में मददगार साबित हो सकती है।

मुंबई यूनिवर्सिटी में 'मुंबई बुक फेस्टिवल'

7 लाख स्क्वॉयर फ़ीट में 600 से ज्यादा लगेंगे स्टॉल

24 को मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस करेंगे उद्घाटन

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में किताबों का बड़ा महोत्सव 'मुंबई बुक फेस्टिवल' का आयोजन 24 से 29 नवंबर के बीच होगा। 'मुंबई बुक फेस्टिवल' का उद्घाटन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस करेंगे। मुंबई यूनिवर्सिटी के कालीना परिसर में 7 लाख स्क्वॉयर फीट में होने वाले इस फेस्टिवल में 600 से ज्यादा स्टॉल होंगे। यहां हर दिन बच्चों के लिए ड्रॉइंग, स्टोरी टेलिंग जैसी कई स्पर्धाएं होंगी। पुस्तकों की बिक्री के साथ-साथ यहां साहित्यिक चर्चाएं, पुस्तक विमोचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। 'मुंबई बुक फेस्टिवल' के मुख्य संयोजक आचार्य पवन त्रिपाठी ने बताया कि मोबाइल के जमाने में पढ़ने की आदत विकसित करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि नेशनल बुक ट्रस्ट, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय, महाराष्ट्र सरकार, बीएमसी और मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस फेस्टिवल में करीब 300 प्रकाशक हिस्सा लेंगे। इसमें दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू, प्रसून जोशी, मनोज मुंतशिर, कैलाश खेर, आचार्य प्रशांत समेत



कई प्रमुख विद्वान मंच साझा करेंगे। आम जनता व पाठकों के लिए महोत्सव में प्रवेश निःशुल्क रहेगा। आचार्य पवन त्रिपाठी ने कहा कि मुंबई में पठन-पाठन की संस्कृति को विकसित करने के लिए भव्य बुक फेस्टिवल का आयोजन हो रहा है। इसमें हर दिन करीब एक लाख लोगों के आने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि डिजिटल दुनिया से असल दुनिया में लाकर लोगों को वैचारिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक रूप से विकसित करने की यह पहल है।

राजस्थानी महिला मंडल का दीपावली स्नेह सम्मेलन

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। राजस्थानी महिला मंडल की सांस्कृतिक समिति द्वारा दीपावली के पावन पर्व पर भव्य दीपावली स्नेह सम्मेलन का आयोजन 'समुद्र मंथन' की मनमोहक संगीतमय प्रस्तुति के साथ बड़े हर्षोल्लास और उत्साहपूर्वक किया गया। इस भव्य आयोजन में 200 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर राजस्थानी महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती मंजू लोढ़ा ने माँ महालक्ष्मी की मनमोहक भूमिका निभाई। मंडल की सदस्याओं ने इस संगीतमय कार्यक्रम में पूरे उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया तथा अपनी शानदार प्रस्तुति से समारोह को यादगार बना दिया। कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण भारत की विभिन्न पारंपरिक बुनाई कलाओं एवं वस्त्र परंपराओं को दर्शाती सुंदर साड़ियाँ रहीं। सभी सदस्याओं ने अलग-अलग क्षेत्रों की पारंपरिक साड़ियों के माध्यम से भारत की समृद्ध हथकरघा विरासत एवं सांस्कृतिक विविधता का सुंदर परिचय दिया। इस प्रस्तुति में मंजू लोढ़ा, अनुपमा जालान, लक्ष्मी करनानी, मीना अग्रवाल, अर्चना बजाज, स्वप्ना पोद्दार, संगीता जालान, सुनीता मंडेलिया, मुदिता अग्रवाल, मयूरी सेक्सरिया, प्रभा लोढ़ा, सुनीता काबरा, साधना केजरीवाल, मंजू नेवटिया एवं साधना सिंघानिया ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। इस भव्य आयोजन को साकार करने में श्रीमती शुभांगी घटनेकर का विशेष योगदान रहा। संयोजिका के रूप में उन्होंने पूरी प्रस्तुति की परिकल्पना, तैयारी, समन्वय एवं मंचन को बेहद कुशलता और रचनात्मकता के साथ साकार किया। उनके विशेष प्रयासों और समर्पण के लिए विशेष धन्यवाद एवं सराहना व्यक्त की गई। कार्यक्रम में मंडल की मंत्रिणी श्रीमती मुदिता जटिया द्वारा सभी अतिथियों एवं सदस्याओं के लिए स्वादिष्ट भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई, जिसकी सभी ने सराहना की। इस अवसर पर मंडल के सभी ट्रस्टी भी उपस्थित रहे और उन्होंने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। संगीत, संस्कृति, परंपरा, आपसी सौहार्द और महिला एकता से सजी यह शाम सभी के लिए अविस्मरणीय बन गई। 'समुद्र मंथन' की इस अनूठी प्रस्तुति ने दीपावली के उत्सव में भक्ति, सौंदर्य और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के रंग भर दिए।



'समुद्र मंथन' की संगीतमय प्रस्तुति ने मोहा मन

एकता-अखंडता के संदेश संग पवई में 'रन ऑफ यूनिटी'

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। देश की एकता, अखंडता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से जलाजा फाउंडेशन की ओर से रविवार, 1 नवंबर को पवई स्थित हीरानंदानी परिसर में 'रन ऑफ यूनिटी' का भव्य आयोजन किया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब पांच हजार लोगों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। जलाजा फाउंडेशन की ओर से पिछले नौ वर्षों से लगातार इस दौड़ का आयोजन किया जा रहा है। हर वर्ष इस आयोजन में लोगों की भागीदारी बढ़ रही है। इस बार भी बड़ी संख्या में युवाओं, महिलाओं, बच्चों और विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने उत्साह के साथ हिस्सा लेकर एकता के संकल्प को मजबूत किया। इस रन ऑफ यूनिटी कार्यक्रम में प्रसिद्ध अभिनेता और फिल्म कलाकार सुरेंद्र पाल सिंह, बोरीवली विधायक संजय उपाध्याय, चांदिवली विधानसभा क्षेत्र से शिवसेना विधायक दिलीप (मामा) लांडे, भाजपा नेता अमरजीत सिंह के अलावा फाउंडेशन के अध्यक्ष जय प्रकाश शेट्टी, शिल्पा शेट्टी, संजना शेट्टी, शुभ महादिक महेश शेट्टी, सुरेंद्र यादव ,वीरेंद्र दुबे, सीताराम तिवारी, करण शेट्टी, भाजपा नेता शुभ्रांशु दीक्षित और अभिनेता सरहान सिंह उपस्थित थे। शुभ्रांशु दीक्षित ने बताया कि साल 2017 से सरदार पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में रन ऑफ यूनिटी का आयोजन किया जा रहा है जिसे नौ साल पूरे हो चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने मन की बात में भी रन ऑफ यूनिटी का जिक्र कर चुके हैं। कार्यक्रम में प्रतिभागियों की सुविधा और उनकी क्षमता को ध्यान में रखते हुए 10 किलोमीटर, 5 किलोमीटर और 3 किलोमीटर की तीन अलग-अलग श्रेणियों में दौड़ आयोजित की गई। सुबह से ही हीरानंदानी परिसर में प्रतिभागियों का उत्साह देखने लायक था। दौड़ में शामिल लोगों ने पूरे जोश और उमंग के साथ निर्धारित दूरी पूरी की। आयोजन के समापन पर विभिन्न श्रेणियों में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विजेताओं को मेडल देकर सम्मानित किया गया। विजेताओं के सम्मान के दौरान प्रतिभागियों में खासा उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर खेल भावना, अनुशासन और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी प्रोत्साहित किया गया।



▸▸ पांच हजार लोगों ने लगाई दौड़

▸▸ सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर अनूठी पहल

मेहता ने किया सूर्या जल प्रकल्प का दौरा



वाग्ज्योति संवाददाता

मीरा-भायंदर। पानी की कटौती के चलते लोगों में भारी रोष दिखाई दे रहा है। इसलिए विधायक नरेंद्र मेहता, महापौर डिंपल मेहता, मनपा आयुक्त राधाबिनोद शर्मा आदि ने सूर्या जल प्रकल्प का दौरा किया। इस दौरान विधायक मेहता ने प्रकल्प को लेकर हो रही देरी के लिए अधिकारियों को आड़े हाथों लिया। वर्सोवा खाड़ी के पास चल रहा टनल का काम 200 मीटर लंबा होना था, लेकिन यह 70 मीटर है, तो उन्होंने अधिकारियों से इस बाबत सवाल पूछे। मेहता ने अधिकारियों को आड़े हाथों लिया क्योंकि अगर काम समय पर पूरा नहीं हुआ तो मीरा-भायंदर शहर में जल वितरण शुरू होने में देरी हो सकती है।

'परोपकार' का दीपावली स्नेह सम्मेलन संपन्न



वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। 'परोपकार' संस्था की ओर से रविवार, 1 नवंबर को उषा किरण, कामाइकल रोड, मुंबई में भव्य दीपावली स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह में उत्साह, उमंग और आपसी भाईचारे का सुंदर संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में संस्था के सदस्यों एवं गणमान्य अतिथियों ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं देकर पर्व की खुशियां साझा कीं। कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा मुख्य अतिथि के रूप में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू लोढ़ा के साथ उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्रीमती मंजू लोढ़ा ने दीपावली के अवसर पर सुंदर कविता प्रस्तुत की, वहीं मंगलप्रभात लोढ़ा ने उपस्थित सभी लोगों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। संस्था के अध्यक्ष रामकिशोर दरक ने स्वागत भाषण में संस्था की विभिन्न सामाजिक एवं सेवा गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए अतिथियों और उपस्थित सदस्यों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। समारोह में संस्था के ट्रस्टी एवं पदाधिकारी शंकर केजरीवाल, कैलाश अग्रवाल, विनोद अग्रवाल, विजय लोहिया, राजेंद्र झुनझुनवाला, प्रमोद गोयल, सत्यप्रकाश जोशी, बीरेंद्र अग्रवाल, आनंद शेखावत, नवलकिशोर सोनी, नरेश बंसल, नटवरलाल डागा, मुरलीमनोहर तापड़िया सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी सदस्यों ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। सदस्यों के आपसी सहयोग, सहभागिता और उत्साह से पूरा आयोजन यादगार बन गया। समारोह के अंत में कार्यक्रम के संयोजक प्रमोद गोयल ने सभी अतिथियों एवं सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस प्रकार 'परोपकार' संस्था का दीपावली स्नेह सम्मेलन सौहार्द, आत्मीयता और उल्लास के वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

जैन समाज ने मुख्यमंत्री सहायता निधि में दिए 51 लाख रुपए



आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के सशक्तीकरण को सरकार प्रतिबद्ध : शेलार

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। जैन समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार की ओर से ब्याजमुक्त ऋण, नए उद्यमों और स्वरोजगार को प्रोत्साहन दिया जाएगा। साथ ही जैन समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सुनियोजित योजना तैयार की जाएगी। प्राकृत, संस्कृत और मराठी साहित्य के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक के उपयोग को भी प्रोत्साहित किया जाएगा। यह बात सांस्कृतिक कार्य मंत्री एड. आशिष शेलार ने कही। वे आराध्य भक्ति पार्क में जैन अल्पसंख्यक विकास आर्थिक महामंडल की ओर से आयोजित ऋण वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर कौशल, रोजगार एवं उद्यमिता मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा, महामंडल के अध्यक्ष ललित गांधी, प्रमुख संयोजक पराग शाह, महामंडल के समन्वयक संदीप भंडारी, जैन मुनि नम्र मुनि महाराज, साध्वी तथा जैन समाज के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सांस्कृतिक कार्य मंत्री एड. शेलार ने कहा कि जैन धर्म की अहिंसा, जीवदया, समर्पण और विश्व कल्याण की शिक्षाएं पूरे समाज के लिए प्रेरणादायी हैं। जैन समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सक्षम बनाकर आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार प्रयासरत है।



सूखाग्रस्त लोगों की मदद को आगे आएं : लोढ़ा

कौशल, रोजगार एवं उद्यमिता मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने राज्य में सूखे की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जैन समाज से सूखाग्रस्त लोगों की सहायता के लिए आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति मुख्यमंत्री सहायता निधि में कम से कम 100 रुपए जमा कर सरकार के राहत कार्यों में सहयोग करे। उन्होंने कहा कि जैन धर्म की परंपरा प्राचीन है और इसका भारतीय संस्कृति से अटूट संबंध है। व्यापक सांस्कृतिक एकता की भावना के साथ समाज के सभी वर्गों को मिलकर आगे बढ़ना चाहिए। महामंडल के अध्यक्ष ललित गांधी ने बताया कि जैन अल्पसंख्यक विकास आर्थिक महामंडल के माध्यम से छात्रवृत्ति, विधवा महिलाओं को व्यवसाय के लिए अनुदान, पाठशालाओं के आधुनिकीकरण तथा विहारधाम के निर्माण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

511 लाभार्थियों को 51 करोड़ रुपए का ऋण वितरित

कार्यक्रम में सेठ वालचंद हीराचंद स्वरोजगार ऋण ब्याज प्रतिपूर्ति योजना, कर्मवीर भाऊराव पाटिल उच्च शिक्षा ऋण योजना और महिला स्वयं सहायता समूह ऋण योजना के तहत सांस्कृतिक कार्य मंत्री एड. आशिष शेलार के हाथों सांकेतिक रूप से लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति के चेक प्रदान किए गए। इन योजनाओं के पहले चरण में कुल 511 लाभार्थियों को 51 करोड़ रुपए का ऋण वितरित किया गया। महामंडल के समन्वयक संदीप भंडारी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की और संचालन किया। इस अवसर पर जैन मुनि नम्र मुनि महाराज, जैन साध्वियों तथा अन्य मुनियों ने उपस्थित लोगों को आशीर्वचन दिए।

साठ्ये महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन



शोधकर्ताओं ने सीखें लेखन के गुण

वाग्ज्योति संवाददाता

मुंबई। पार्ले तिलक विद्यालय एसोसिएशन के साठ्ये महाविद्यालय (स्वायत्त) ने भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार), विज्ञान भारती (कोंकण क्षेत्र) और 'सृष्टिज्ञान' के सहयोग से साठ्ये कॉलेज में नवोदित लेखकों के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी और व्यावहारिक अनुभव कार्यशाला का आयोजन किया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य युवा विज्ञान शोधकर्ताओं को मराठी भाषा में विज्ञान के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना था। इसके साथ ही, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले नए विकासों को आम जनता तक ऐसी सरल भाषा में पहुँचाना था, जिसे वे आसानी से समझ सकें। संगोष्ठी का आयोजन साठ्ये कॉलेज के भौतिकी विभाग की अध्यक्ष सुकृता पेठे के संयोजन एवं भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) की शैक्षणिक समन्वयक डॉ. रचना विश्वकर्मा के सह-संयोजन में किया गया। संगोष्ठी का समापन सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के प्रोफेसर और विज्ञान-कथा लेखक डॉ. संजय ढोले की उपस्थिति में हुआ। इस संगोष्ठी में कुल 143 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह जानकारी समन्वयक सुकृता पेठे ने दी।

विद्वानों ने किया मार्गदर्शन

■ संगोष्ठी का उद्घाटन वरिष्ठ वैज्ञानिक और विज्ञान लेखक डॉ. बाल फोंडके के उद्घाटन भाषण के साथ हुई। प्राचार्य डॉ. माधव राजवाड़े ने प्रतिभागियों को साठ्ये कॉलेज और भारतीय भाषा समिति का परिचय दिया। नरेश चाफेकर ने विज्ञान भारती के बारे में बताया, जबकि डॉ. जयंत जोशी ने विज्ञान भारती और 'सृष्टिज्ञान' का परिचय कराया। इस बात को केंद्र में रखते हुए डॉ. बाल फोंडके, हेमंत लागवणकर, डॉ. शशिकांत धारणे, डॉ. मेधा लिमये, नूतन कर्णिक, डॉ. अनुराधा गर्ग, स्मिता पोतनीस, अभिजीत मुल्ये, प्रो. आलोक दाभाड़े (सांख्यिकी / स्टैटिस्टिक्स), डॉ. मनीष भट, प्रो. डॉ. अमोल दिघे तथा डॉ. कल्पित म्हात्रे ने मार्गदर्शन किया। संचालन डॉ. सुधीर पानसे ने किया। लाइब्रेरियन स्वप्ना गावड़े, और उनके सहयोगियों ने एक व्यावहारिक सत्र आयोजित किया। सत्र समन्वय डॉ. शशिकांत धारणे और डॉ. जयंत जोशी ने किया गया।

वाग्ज्योति टाइम्स

मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

संपादकीय

सफलता के शिखर से आगे, सद्प्रयासों का करें सम्मान

किसी की सफलता का उत्सव मनाना अच्छी बात है, लेकिन किसी दूसरे के संघर्ष और प्रयास को कमतर आँककर ऐसा करना उचित नहीं। विडंबना है कि हमारा समाज उपलब्धियों का मूल्यांकन तो करता है, लेकिन उन प्रयासों को अक्सर अनदेखा कर देता है, जो सफलता की परिभाषा में भले ही फिट न बैठें, किंतु सम्मान के पूरे अधिकारी हैं। हमारा समाज सफल व्यक्तियों की सराहना करने में कभी पीछे नहीं रहता। किसी ने बड़ा पद हासिल किया, कोई लोकप्रिय हो गया, किसी ने आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर ली या किसी ने अपनी प्रतिभा से दुनिया में पहचान बना ली, तो उसके गुणगान होने लगते हैं। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। लेकिन विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या सफलता ही सम्मान का एकमात्र पैमाना होनी चाहिए? क्या वह व्यक्ति सम्मान का अधिकारी नहीं, जो तमाम झंझावातों, विपरीत परिस्थितियों और मानसिक दबावों के बीच भी अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन कर रहा है? हाल ही में शुभंकर मिश्रा के पॉडकास्ट में अभिनेता आशीष विद्यार्थी ने एक बेहद महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया। उन्होंने पूछा कि क्या अमिताभ बच्चन ही सफल हैं, अभिषेक बच्चन नहीं? यह प्रश्न केवल फिल्म जगत की दो पीढ़ियों या दो व्यक्तित्वों की तुलना तक सीमित नहीं है। यह हमारी उस मानसिकता पर सवाल खड़ा करता है, जिसमें हम किसी व्यक्ति की सफलता को किसी दूसरे की उपलब्धियों के सापेक्ष मापने लगते हैं। आखिर कब हम यह समझेंगे कि हर व्यक्ति की अपनी क्षमता, अपनी परिस्थितियाँ और अपनी अलग जीवन यात्रा होती है? हर रोहन गावस्कर को सुनील गावस्कर और हर अर्जुन तेंदुलकर को सचिन तेंदुलकर की कसौटी पर परखने की प्रवृत्ति क्या उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों और पहचान के साथ न्याय करती है? किसी प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेना किसी की अपनी उपलब्धियों को छोटा नहीं कर सकता। न ही किसी महान व्यक्तित्व की संतान होना उस व्यक्ति के लिए जीवनभर तुलना का दंश झेलने की बाध्यता बनना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पहचान और अपनी उपलब्धियों के आधार पर पहचाने जाने का अधिकार है। यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है कि तुलना अपने आप में अनुचित नहीं है। तुलना तभी सार्थक है, जब उसका उद्देश्य प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना और बेहतर करने की प्रेरणा देना हो। लेकिन जब तुलना किसी की उपलब्धियों को छोटा साबित करने या उसके आत्मविश्वास को चोट पहुँचाने का माध्यम बन जाए, तब वह सकारात्मक आलोचना नहीं, बल्कि मानसिक संकीर्णता का परिचायक बन जाती है। हमें अपने शब्दों और अभिव्यक्तियों के प्रति सजग होना होगा। एक क्षण ठहरकर उन लोगों के विषय में भी सोचिए, जिनके योगदान के बिना किसी की सफलता संभव नहीं होती। सफल व्यक्ति के माता-पिता और गुरु को भले ही दुनिया न जानती हो, लेकिन क्या उनका योगदान किसी सम्मान से कम है? क्या वे असफल हैं, क्योंकि उन्हें प्रसिद्धि नहीं मिली? किसी उपलब्धि के पीछे वर्षों का त्याग, अनगिनत प्रोत्साहन और अनेक अनाम प्रयास होते हैं। सफलता का श्रेय केवल उस व्यक्ति तक सीमित कर देना उन सभी योगदानों के साथ अन्याय है। हमारे पौराणिक और ऐतिहासिक आख्यान भी इस विषय में अद्भुत दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रणकौशल और पराक्रम से कौन परिचित नहीं है? लेकिन चक्रव्यूह में कौरव सेना के महारथियों के सामने अदम्य साहस के साथ खड़े सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु का शौर्य क्या कम सम्माननीय है? क्या अभिमन्यु को सम्मान पाने के लिए अर्जुन जैसा या उससे बड़ा धनुर्धर बनना आवश्यक था? नहीं! उसका साहस, समर्पण और कर्तव्य के प्रति निष्ठा ही उसे युगों-युगों तक स्मरणीय बनाती है। उसका मूल्यांकन इस आधार पर नहीं किया जा सकता कि वह अर्जुन से कितना आगे या पीछे था। इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम का आचरण भी हमें एक बड़ी सीख देता है। रामसेतु निर्माण में नल-नील जैसे कुशल शिल्पियों के योगदान को जितना महत्व मिला, उतना ही स्नेह और सम्मान उस नन्ही गिलहरी के प्रयास को भी मिला, जो अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेतु निर्माण में सहयोग कर रही थी। प्रभु श्रीराम की दृष्टि में योगदान का महत्व था, योगदान देने वाले की क्षमता या आकार का नहीं। यही वह दृष्टि है, जिसकी आज हमारे समाज को सर्वाधिक आवश्यकता है। दरअसल, हर व्यक्ति की सफलता का स्वरूप अलग होता है। किसी के लिए सफलता बड़ा पद प्राप्त करना है, तो किसी के लिए अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाना। किसी के लिए आर्थिक समृद्धि उपलब्धि है, तो किसी के लिए विपरीत परिस्थितियों में भी अपने नैतिक मूल्यों से समझौता न करना। किसी के लिए प्रसिद्धि सफलता है, तो किसी के लिए बिना किसी अपेक्षा के अपने कर्तव्य का निर्वहन करना। इन सभी प्रयासों को एक ही तराजू पर तौलना उचित नहीं है। हमें सफलता के शिखर पर पहुँचे व्यक्तियों का सम्मान अवश्य करना चाहिए, लेकिन उन लोगों के प्रयासों को भी पहचानना चाहिए, जो अपनी सीमित क्षमताओं और विषम परिस्थितियों के बावजूद निरंतर संघर्षरत हैं। हर प्रयास का परिणाम पुरस्कार, पद, प्रतिष्ठा या लोकप्रियता के रूप में सामने आए, यह आवश्यक नहीं। कई बार परिस्थितियों से लड़ते हुए अपनी जिम्मेदारियों को निभा लेना ही किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी विजय होती है। मेरा मानना है कि हर वह व्यक्ति सफल है, जो अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार अपनी जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करता है। हर वह व्यक्ति आदरणीय है, जिसके आचरण में शुद्धता, कर्म में कर्तव्यपरायणता, व्यवहार में विनम्रता और हृदय में कृतज्ञता का भाव है। समाज को अपनी सफलता की परिभाषा का विस्तार करना होगा। हमें केवल विजेताओं का अभिनंदन करने वाली मानसिकता से आगे बढ़कर संघर्ष करने वालों का मनोबल भी बढ़ाना होगा। क्योंकि किसी एक को बड़ा साबित करने के लिए दूसरे को छोटा करना न तो न्यायसंगत है और न ही मानवीय। आइए, हम केवल सफलतम व्यक्तियों का नहीं, बल्कि सद्प्रयास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना सीखें। आखिर सम्मान का वास्तविक अधिकारी केवल वह नहीं, जो दूसरों से आगे निकल गया, बल्कि वह भी है, जो अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपने कर्तव्य के पथ पर अडिग रहा।

किसी से कोई होड़ नहीं... योगी तेरा तोड़ नहीं!



अमरजीत मिश्र
उपाध्यक्ष, मुंबई भाजपा

सत्ताधीश की भाषा में घमंड नहीं दिखना चाहिए, लेकिन स्वाभिमान की धमक अवश्य होनी चाहिए। सत्ता का वास्तविक प्रभाव भाषणों की ऊँचाई से नहीं, बल्कि समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के मन में पैदा होने वाले विश्वास से दिखाई देता है। सरकार किसी गरीब, वंचित, शोषित और उपेक्षित व्यक्ति की हर आवश्यकता पूरी कर पाए या न कर पाए, लेकिन उसे यह अहसास अवश्य होना चाहिए कि व्यवस्था में उसकी भी अहमियत है। उसकी गरीबी का उपहास नहीं उड़ाया जा सकता, उसकी विवशता का फायदा नहीं उठाया जा सकता और उसके अधिकारों को कोई अपनी जागीर नहीं समझ सकता। लोकतंत्र में सरकारों से शत-प्रतिशत अपेक्षाओं की पूर्ति संभव नहीं होती। संसाधनों की सीमाएँ होती हैं, चुनौतियाँ होती हैं और विकास की अपनी गति होती है। लेकिन किसी भी सरकार की पहली जिम्मेदारी है कि वह समाज के कमजोर व्यक्ति को भयमुक्त जीवन का भरोसा दे। उसे विश्वास दिलाए कि उसकी बहन-बेटियों की इज्जत पर कोई गंदी नजर डालने का दुस्साहस करेगा तो कानून का शिकंजा उस तक अवश्य पहुँचेगा। किसी दबंग की दबंगई गरीब की बेबसी पर भारी नहीं पड़ेगी और राजनीतिक रसूख के आगे कानून घुटने नहीं टेकेगा। मैं दो घटनाओं का उल्लेख करना चाहूँगा। इनके माध्यम से वर्ष 2017 के पहले और उसके बाद के उत्तर प्रदेश की राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का आकलन करने में आसानी होगी।

पहली घटना : मुख्यमंत्री की भाषा में बेटियों की सुरक्षा की धमक

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जब किसी जनसभा में कहते हैं कि एक चौराहे पर कोई किसी बेटी पर गंदी निगाह डालेगा तो दूसरे चौराहे पर उसे गोली मार दी जाएगी, तो देश के बहुत से पढ़े-लिखे लोगों को उनकी यह भाषा नागवार गुजरती है। वे इसे कानून की भाषा के बजाय आक्रामक राजनीतिक भाषा मान सकते हैं। लेकिन इस कथन के पीछे छिपे उस सामाजिक भय को भी समझने की जरूरत है, जिसने उत्तर प्रदेश की लाखों बेटियों और उनके परिवारों को लंबे समय तक असुरक्षा के साये में रखा। जरा वर्ष 2017 के पहले के उत्तर प्रदेश को याद कीजिए। वह दौर, जब अपराधियों के हौसले बुलंद होने की शिकायतें आम थीं। राजनीतिक संरक्षण और बाहुबल शासन-प्रशासन की निष्पक्षता पर सवाल खड़े करते थे। किसी गरीब परिवार के लिए न्याय की लड़ाई लड़ना भी बड़ी चुनौती बन जाता था। एक बेबस पिता के सामने उसकी जवान बेटी की अस्मिता को रौंदने और फिर उसे जिंदा जला देने जैसी हृदयविदारक घटना ने सभ्य समाज की आत्मा को झकझोर दिया था। ऐसी घटनाएँ केवल किसी एक परिवार की त्रासदी नहीं होतीं, बल्कि पूरे समाज के माथे पर कलंक होती हैं। उस पिता की बेबसी और न्याय की प्रतीक्षा में तड़पते परिजनों की पीड़ा को महसूस कीजिए। जिस समाज में बेटी का पिता अपनी बच्ची की सुरक्षा को लेकर आश्वस्त न हो, वहाँ विकास की उपलब्धियाँ भी अधूरी हैं। ऐसे माहौल में जब कोई मुख्यमंत्री अपराधियों को खुली चेतावनी देता है कि बेटियों की सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा, तो उसके पीछे आम आदमी की उस अपेक्षा को समझना चाहिए, जो चाहता है कि कानून का भय अपराधी के मन में हो, न कि पीड़ित परिवार के मन में। बेशक, गोली किसी भी अपराध का न्यायिक विकल्प नहीं हो सकती। अपराधी को सजा संविधान और कानून के मुताबिक ही मिलनी चाहिए। लेकिन अपराधियों के मन में कानून का भय पैदा करना और पीड़ित के मन से भय निकालना किसी भी मजबूत सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। योगी आदित्यनाथ के शासन की चर्चा इसी कठोर संदेश और कानून-व्यवस्था को लेकर बनी राजनीतिक पहचान के संदर्भ में होती है।



दूसरी घटना : आजम की आँखों में झलकती बेबसी

दूसरी घटना समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान की है, जो लंबे अरसे तक जेल की सलाखों के पीछे रहने के बाद बाहर आए। उनके सार्वजनिक रूप से सामने आने पर चेहरे पर दिखाई देने वाली थकान और बेबसी ने राजनीतिक गलियारों में अनेक चर्चाओं को जन्म दिया। कभी सत्ता के गलियारों में जिनकी आवाज का अपना वजन हुआ करता था, उनके चेहरे पर समय की मार साफ दिखाई दे रही थी। भरे हुए गालों की जगह गड्ढे नजर आ रहे थे। आँखें जैसे बीते दिनों की अनगिनत कहानियाँ कह रही थीं। गला रूँध रहा था और आवाज काँप रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वक्त ने एक लंबे राजनीतिक अध्याय को अचानक आईने के सामने खड़ा कर दिया हो। मैं यह नहीं कहता कि किसी व्यक्ति की शारीरिक स्थिति उसके अपराध या निर्दोष होने का प्रमाण होती है। प्रत्येक नागरिक के साथ मानवीय गरिमा का व्यवहार होना चाहिए और न्यायिक प्रक्रिया निष्पक्ष होनी चाहिए। लेकिन इस दृश्य ने मेरे मन में एक अलग ही विचार पैदा किया। मेरे कानों में जैसे एक शेर गूँजने लगा-

वक्त तुम्हें तुम्हारा हर जुल्म लौटा देगा,
वक्त के पास कहाँ रहम-ओ-करम होता है।

जानते हैं क्यों? क्योंकि मेरी आँखों के सामने वर्ष 2013 का जलता हुआ मुजफ्फरनगर घूमने लगा। वह दौर, जब सांप्रदायिक तनाव और हिंसा ने हजारों परिवारों की जिंदगी प्रभावित की थी। लोग अपने घरों से बेघर हुए, परिवारों में भय और असुरक्षा का वातावरण था और आम नागरिक सत्ता से संरक्षण तथा न्याय की उम्मीद लगाए बैठा था। मुजफ्फरनगर की उस त्रासदी को केवल राजनीतिक आंकड़ों में नहीं समेटा जा सकता। उसके पीछे उजड़े घर, बिछड़े परिवार और असुरक्षित भविष्य की पीड़ा थी। जिन लोगों का किसी राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन से कोई लेना-देना नहीं था, वे भी उसकी कीमत चुकाने को विवश हुए। उस समय सत्ता के चेहरे पर जो राजनीतिक आत्मविश्वास और गुरूर दिखाई देता था, उसके सामने पीड़ित जनता की आँखों में आँसू थे। आज समय का पहिया घूम चुका है। कभी सत्ता में रह चुके लोगों को भी वक्त की कठोरता का सामना करना पड़ रहा है। यहाँ मेरा सवाल किसी व्यक्ति विशेष की पीड़ा पर प्रसन्न होने का नहीं है। मेरा सवाल उस राजनीतिक सोच से है, जिसमें सत्ता को स्थायी और जनता की पीड़ा को अस्थायी समझ लिया जाता है। सत्ता का सिंहासन जनता की अमानत है। जो शासक यह भूल जाता है, इतिहास उसे कभी माफ नहीं करता। राजनीति में प्रतिशोध नहीं, न्याय होना चाहिए और शासन में पक्षपात नहीं, निष्पक्षता होनी चाहिए। लोकतंत्र में जनता से बड़ा कोई नहीं और वक्त से बड़ा कोई शिक्षक नहीं।

योगी आदित्यनाथ के शासन की चर्चा क्यों?

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य का शासन चलाना आसान काम नहीं है। यहाँ जातीय समीकरण, धार्मिक विविधता, क्षेत्रीय असमानताएँ, बेरोजगारी, किसानों की समस्याएँ और दशकों से चली आ रही प्रशासनिक जटिलताएँ हैं। ऐसे राज्य में शासन की सफलता का मूल्यांकन केवल सड़कों, पुलों, एक्सप्रेसवे और निवेश प्रस्तावों से नहीं किया जा सकता। यह भी देखना होगा कि आम आदमी के मन में सुरक्षा का कितना विश्वास पैदा हुआ है। योगी आदित्यनाथ की राजनीतिक शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनका स्पष्ट और दो टूक संवाद है। वे अपनी बात को घुमा-फिराकर कहने के बजाय सीधे कहते हैं। उनकी भाषा में कई बार कठोरता दिखाई देती है, लेकिन उनके समर्थकों को उसमें शासन के संकल्प और अपराध के प्रति सख्ती का संदेश सुनाई देता है। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था, माफिया के विरुद्ध कार्रवाई, महिला सुरक्षा, प्रशासनिक जवाबदेही और गरीब कल्याण जैसे मुद्दों को शासन की प्राथमिकताओं में प्रमुखता से रखा गया है। बुलडोजर कार्रवाई को लेकर बहस और आलोचनाएँ भी हुई हैं। किसी भी कार्रवाई की वैधता का निर्धारण कानून और न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही होना चाहिए। फिर भी यह स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में अपराध और कानून-व्यवस्था पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे बन चुके हैं। यही वह परिवर्तन है जिसे समझना आवश्यक है। जब किसी गरीब को यह विश्वास होता है कि थाने में उसकी बात सुनी जाएगी, किसी बेटी के परिवार को लगता है कि अपराधी चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उस पर कार्रवाई हो सकती है और किसी कमजोर व्यक्ति को न्याय मिलने की उम्मीद दिखाई देती है, तब शासन की सार्थकता सामने आती है। मैं मानता हूँ कि मुख्यमंत्री को अपनी भाषा में अहंकार नहीं पालना चाहिए। मुख्यमंत्री का पद जनता की सेवा का दायित्व है, व्यक्तिगत श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र नहीं। लेकिन विनम्रता का अर्थ कमजोरी नहीं होता और शालीनता का अर्थ अपराधियों के सामने समर्पण भी नहीं है। एक शासक को गरीब के सामने संवेदनशील, अपराधी के सामने कठोर, पीड़ित के सामने सहृदय और भ्रष्ट व्यवस्था के सामने निर्भीक होना चाहिए। सत्ता का सबसे बड़ा आभूषण अहंकार नहीं, जनता का विश्वास है। योगी आदित्यनाथ की कार्यशैली में मुझे यही राजनीतिक दृढ़ता आकर्षित करती है। वे शासन को केवल फाइलों और बैठकों तक सीमित नहीं रखना चाहते, बल्कि अपने निर्णयों के माध्यम से स्पष्ट संदेश देना चाहते हैं। हाँ, किसी भी सरकार की आलोचना होनी चाहिए। उसकी कमियों पर सवाल उठने चाहिए। विपक्ष का मजबूत होना लोकतंत्र की आवश्यकता है। लेकिन आलोचना तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए और उपलब्धियों का मूल्यांकन भी निष्पक्षता से होना चाहिए। लोकतंत्र में किसी मुख्यमंत्री को लोकप्रियता के आधार पर कानून से ऊपर नहीं रखा जा सकता और न ही राजनीतिक विरोध के कारण उसकी हर उपलब्धि को नकारा जा सकता है। मेरे लिए योगी आदित्यनाथ का महत्व इस बात में है कि उन्होंने उत्तर प्रदेश की राजनीति में शासन की दृढ़ता, अपराध के प्रति कठोरता और गरीब के प्रति संवेदनशीलता को एक बड़े राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया है। अंततः बात केवल योगी की नहीं, उस भरोसे की है जो आम आदमी चाहता है। एक गरीब पिता को अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए किसी नेता के दरवाजे पर हाथ जोड़कर खड़ा न होना पड़े। किसी कमजोर परिवार को दबंग के सामने अपनी जमीन बचाने के लिए वर्षों तक चक्कर न लगाने पड़ें। किसी पीड़ित को जाति, धर्म, क्षेत्र या राजनीतिक पहचान के आधार पर न्याय से वंचित न होना पड़े। किसी महिला को रात में घर लौटते समय भय के कारण अपने कदम न रोकने पड़ें और किसी युवा को यह न लगे कि उसकी योग्यता से अधिक महत्व किसी की सिफारिश का है। रामराज्य की अवधारणा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि लोककल्याणकारी शासन की भी प्रेरणा है। जहाँ कमजोर की रक्षा हो, न्याय सुलभ हो, शासन जवाबदेह हो और शासक स्वयं को जनता का सेवक समझे। योगी आदित्यनाथ जब उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान, रामराज्य और सुशासन की बात करते हैं, तो उनके सामने इस आदर्श को व्यवहार में उतारने की बड़ी जिम्मेदारी भी है। मैं योगी आदित्यनाथ का प्रशंसक इसलिए नहीं हूँ कि वे सत्ता में हैं। सत्ता में तो अनेक लोग आए और चले गए। मेरा आकर्षण उस राजनीतिक दृढ़ता से है, जो अपराधियों को चुनौती देने का साहस रखती है, गरीब को सम्मान देने की बात करती है और शासन को भयमुक्त समाज की दिशा में ले जाने का संकल्प व्यक्त करती है। इसीलिए जब उत्तर प्रदेश की राजनीति में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की चर्चा होती है, तो मेरे मन में एक ही भाव उठता है। यह भाव किसी से प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि एक राजनीतिक व्यक्तित्व के प्रति मेरी प्रशंसा का है। और फिर मेरी कलम अनायास ही लिख उठती है—

किसी से कोई होड़ नहीं,
योगी, तेरी तोड़ नहीं।

दो सौम्य चेहरों के वार - पलटवार की दिलचस्प दास्तान



अशोक गहलोत और भजनलाल शर्मा। दोनों सरल। दोनों सहज। दोनों सौम्य। और दोनों सामान्य। मगर राजस्थान की राजनीति में दोनों के बीच असामान्य असहजता है। वार पर वार। पलटवार। और हर बयान के पीछे एक नई राजनीतिक पहेली। एक तरफ अशोक गहलोत हैं। पूर्व मुख्यमंत्री। अनुभवी। धुरंधर। फिलहाल लगभग अकेले। दूसरी तरफ भजनलाल शर्मा हैं। मुख्यमंत्री। सत्ता उनके पास है। सरकार उनके साथ है। प्रशासन उनके हाथ है। और संसार की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बीजेपी का संगठन भी है। लेकिन सत्ता का यह विशाल आभामंडल भी उनकी व्यक्तिगत राजनीतिक पहचान की तलाश खत्म नहीं कर पाया है। यही इस वाक युद्ध की असली तस्वीर है। गहलोत से भिड़कर शर्मा अपनी सियासी जमीन मजबूत करना चाहते हैं? या गहलोत को कमजोर करके कांग्रेस को कमजोर करने की रणनीति पर चल रहे हैं? सवाल कई हैं। मगर इस मुकाबले का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि गहलोत का फिलहाल ऐसा कोई सीधा नुकसान दिखाई नहीं देता, जिससे उनकी राजनीतिक हैसियत कमजोर हो। हां, मुख्यमंत्री की अतिरिक्त सक्रियता उन्हें आक्रामक नेता के रूप में जरूर पेश कर रही है। लेकिन आक्रामकता और राजनीतिक प्रभाव में फर्क होता है। और राजनीति में यह फर्क अक्सर बहुत महंगा पड़ता है।

आरोपों की आग, गहलोत का जवाब

नवंबर 2026 में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के आरोपों के बाद अशोक गहलोत ने सबूत पेश करने या माफी मांगने की मांग की। बात यहीं से तीखी हुई। गहलोत ने आरोपों को हवा में उड़ाने के बजाय उनके आधार पर सवाल खड़े किए। संदेश साफ था। आरोप लगाइए। मगर प्रमाण भी दीजिए। राजनीति के इस पुराने हथियार का गहलोत इस्तेमाल करना बेहतर जानते हैं। वे मुख्यमंत्री के आरोपों को केवल बयानबाजी मानकर छोड़ने के मूड में नहीं हैं। बल्कि उन्हें जवाबदेही के सवाल में बदल रहे हैं। इससे मुख्यमंत्री के सामने भी मुश्किल खड़ी होती है। आरोप लगाना आसान है। साबित करना मुश्किल। और जब सामने गहलोत जैसा अनुभवी नेता हो, तो राजनीतिक चुनौती और बढ़ जाती है। गहलोत तो जानते हैं कि कब चुप रहना है। कब बोलना है। कब मुद्दे को लंबा खींचना है। और कब विरोधी के आरोपों को उसी के खिलाफ इस्तेमाल करना है। मुख्यमंत्री शर्मा के लिए यह मुकाबला अपेक्षाकृत नया है। वे पहली बार विधायक बने। सीधे मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचे। राजनीति में यह उपलब्धि है। मगर अनुभव का विकल्प नहीं।

गहलोत बीजेपी के सॉफ्ट टारगेट हैं?

मुख्यमंत्री शर्मा गहलोत को ही निशाना क्यों बना रहे हैं? क्या गहलोत को कमजोर करके कांग्रेस को कमजोर करने की रणनीति है? या फिर मुख्यमंत्री अपनी राजनीतिक पहचान मजबूत करने के लिए गहलोत को सबसे उपयोगी प्रतिद्वंद्वी मान रहे हैं? राजस्थान की राजनीति में ये सवाल बार-बार सामने आ रहे है। लेकिन दोनों संभावनाएं हैं। गहलोत राजस्थान कांग्रेस का सबसे बड़ा राजनीतिक चेहरा हैं। उनके खिलाफ हमला कांग्रेस के पिछले शासनकाल को चर्चा में लाने का अवसर देता है। बीजेपी के लिए यह राजनीतिक रूप से उपयोगी हो सकता है। लेकिन इसमें बड़ा जोखिम भी है। जिस नेता को लगातार निशाना बनाया जाता है, उसकी राजनीतिक प्रासंगिकता भी बनी रहती है। और गहलोत जैसे नेता के मामले में यह जोखिम कुछ ज्यादा है। क्योंकि राजस्थान कांग्रेस में उनके मुकाबले का कोई दूसरा चेहरा फिलहाल उतना बड़ा दिखाई नहीं देता। गहलोत पर हमला कांग्रेस को कमजोर करने के बजाय उन्हें कांग्रेस की राजनीति के केंद्र में बनाए रख सकता है। राजनीति का यह अजीब गणित है। कभी-कभी विरोधी को कमजोर करने की कोशिश ही उसे ज्यादा मजबूत बना देती है।

अनुभवी गहलोत, शर्मा की पहली राजनीतिक पारी

अशोक गहलोत का राजनीतिक सफर लंबा है। बहुत लंबा। पांच बार सांसद। छह बार विधायक। तीन बार मुख्यमंत्री। तीन प्रधानमंत्रियों के साथ केंद्र में मंत्री। दो बार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष। दो बार अखिल भारतीय कांग्रेस के महासचिव। संगठन से सरकार तक। दिल्ली से जयपुर तक। चुनाव से प्रशासन तक। गहलोत ने लगभग हर मोर्चे पर अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है। उनका अनुभव केवल पदों की सूची नहीं है। वे राजस्थान की राजनीति के सामाजिक समीकरणों को समझते हैं। संगठन की ताकत को तो जानते ही हैं, संगठन की कमजोरियों की ताकत को भी समझते हैं। और विरोधियों की चालों को पढ़ने की क्षमता रखते हैं। इसके मुकाबले भजनलाल शर्मा का सार्वजनिक जीवन छोटा है। पहली बार विधायक। पहली बार मुख्यमंत्री। उन्होंने केवल एक विधानसभा चुनाव लड़ा है। यही अंतर दोनों के बीच राजनीतिक मुकाबले को ज्यादा दिलचस्प बनाता है। गहलोत के लिए यह पुरानी राजनीतिक दुनिया है। शर्मा के लिए यह नई चुनौती। राजनीति में नए खिलाड़ी को अक्सर अपनी पहचान स्थापित करने के लिए किसी बड़े प्रतिद्वंद्वी की जरूरत पड़ती है। गहलोत इस भूमिका में फिट हैं।

मुख्यमंत्री पद सुरक्षित, मगर प्रतिष्ठा की तलाश

भजनलाल शर्मा के सामने सबसे बड़ी चुनौती मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बने रहना नहीं है। असली चुनौती है राजनीतिक पहचान बनाना। कुर्सी पार्टी देती है। लेकिन राजनीतिक कद जनता के बीच बनता है। बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व का भरोसा महत्वपूर्ण है। संगठन का समर्थन भी जरूरी है। लेकिन अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करना एक अलग राजनीतिक मुकाम है। शर्मा जानते हैं कि मुख्यमंत्री होना और जननेता होना एक ही बात नहीं है। इसीलिए गहलोत से मुकाबला उनके लिए राजनीतिक अवसर बन सकता है। मुख्यमंत्री अपने समर्थकों को संदेश दे सकते हैं कि वे विपक्ष के सबसे बड़े चेहरे से सीधे मुकाबला कर रहे हैं। लेकिन इस रणनीति की सफलता केवल आरोपों से तय नहीं होगी। राजनीति में केवल विरोधी को कमजोर करना पर्याप्त नहीं होता। अपनी ताकत भी दिखानी पड़ती है।

गहलोत को कमजोर करना आसान नहीं

गहलोत के सामने भी चुनौतियां कम नहीं हैं। कांग्रेस को राजस्थान में अपना संगठन मजबूत करना है। राजनीतिक आधार बचाना है। आगामी चुनावों की तैयारी करनी है। गहलोत यदि लगातार मुख्यमंत्री के आरोपों का जवाब देने में ही उलझे रहते हैं, तो कांग्रेस के वास्तविक मुद्दे पीछे छूट सकते हैं। लेकिन गहलोत की राजनीतिक समझ उन्हें इस खतरे से अनजान नहीं रहने देगी। वे जानते हैं कि राजनीतिक मुकाबले को केवल व्यक्तिगत आरोपों तक सीमित नहीं रखना चाहिए। उनके लिए यह अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने का अवसर भी है। मुख्यमंत्री के आरोपों का जवाब देकर वे राजस्थान कांग्रेस के सबसे प्रभावशाली नेता के रूप में अपनी स्थिति और मजबूत कर रहे हैं। लेकिन इस मुकाबले में एक बात साफ है। गहलोत को कमजोर करने की कोशिश तभी सफल होगी, जब उनके मुकाबले कोई मजबूत राजनीतिक विकल्प भी दिखाई दे। और फिलहाल राजस्थान की राजनीति में यह मुकाबला दो नेताओं के बीच है। एक अनुभवी। दूसरा अपनी पहचान की तलाश में। भजनलाल शर्मा और अशोक गहलोत के बीच जारी वार-पलटवार में गहलोत अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा के आधार पर जवाब दे रहे हैं। हालांकि इस पूरे घटनाक्रम में फिलहाल गहलोत को कोई निर्णायक राजनीतिक नुकसान दिखाई नहीं देता।

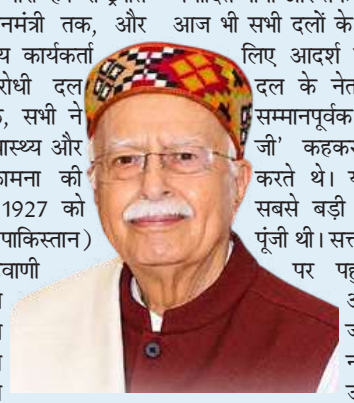


- निरंजन परिहार
(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं)

शतायु हुए भारत के 'लौह पुरुष' आडवाणी

'जीवन ही राष्ट्रसेवा का इतिहास'

भारतीय राजनीति के युगपुरुष, पूर्व उप-प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न से सम्मानित लालकृष्ण आडवाणी जी ने आज अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए। शतायु होने पर देशभर में उन्हें बधाई और शुभकामनाएं देने का सिलसिला जारी है। राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री तक, और गांव के सामान्य कार्यकर्ता से लेकर विरोधी दल के नेताओं तक, सभी ने उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की है। 8 नवंबर 1927 को कराची (अब पाकिस्तान) में जन्मे आडवाणी जी ने बचपन में ही विभाजन की त्रासदी को देखा। अपना घर-बार छोड़कर भारत आए इस परिवार के सामने कठिनाइयों का पहाड़ था, लेकिन युवा लालकृष्ण ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्रीयऊ स्वयंसेवक संघ को समर्पित कर दिया और प्रचारक के रूप में राजस्थान से लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में संगठन का कार्य किया। आडवाणी जी भारतीय जनसंघ के प्रमुख स्तंभ रहे। बाद में जब भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ, तो अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ मिलकर उन्होंने पार्टी को नई दिशा दी। एक समय जब लोकसभा में भाजपा की मात्र 2 सीटें थीं, तब भी आडवाणी जी का संकल्प नहीं डगमगाया। उनकी संगठन क्षमता, स्पष्ट वक्तव्य और सिद्धांतों पर अडिग रहने की प्रवृत्ति ने ही भाजपा को आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाया।



वर्ष 1990 में सोमनाथ से अयोध्या तक निकाली गई उनकी ऐतिहासिक रथयात्रा भारतीय राजनीति का एक निर्णायक मोड़ साबित हुई। इस यात्रा ने देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना को जागृत किया। राम मंदिर आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने में आडवाणी जी की भूमिका को इतिहास कभी भुला नहीं पाएगा। आज अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर खड़ा है, उसकी नींव में आडवाणी जी के संघर्ष, त्याग और संकल्प की ही ईंट लगी है। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में आडवाणी जी ने देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किया। संसद में उनकी शालीनता, मर्यादित भाषा और तर्कपूर्ण वक्तव्य आज भी सभी दलों के नेताओं के लिए आदर्श हैं। विरोधी दल के नेता भी उन्हें सम्मानपूर्वक 'आडवाणी जी' कहकर संबोधित करते थे। यही उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी थी। सत्ता के शिखर पर पहुंचकर भी आडवाणी जी ने सादगी नहीं छोड़ी। उनका जीवन अनुशासन, अध्ययन और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक रहा है। भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया, जो उनके कृतित्व का सच्चा सम्मान है। आज की युवा पीढ़ी के लिए आडवाणी जी का जीवन एक पाठशाला है। उन्होंने सिखाया कि राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का संकल्प है। पद आते-जाते रहते हैं, लेकिन चरित्र और सिद्धां

आस्था, अध्यात्म और पर्यावरण का पर्व 'छठ'



प्रो. (डॉ.) शीतला प्रसाद दुबे
पूर्व कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी

भारतवर्ष त्योहारों का देश है। यहां पूरे वर्ष भर विविध प्रकार के त्यौहार और पर्व मनाए जाते हैं। सभी त्योहारों और पर्वों का संबंध मानव जीवन और उससे जुड़े हुए विविध संदर्भों से है। ऐसा ही एक महापर्व है जिसे छठ कहा जाता है। छठ महापर्व दीपावली के बाद चौथे दिन यानी कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से मनाया जाना शुरू होता है, जिसमें महिला और पुरुष दोनों मिलकर भगवान सूर्य की आराधना करते हैं। अन्य व्रत-त्योहरों की ही तरह व्रत के सारे नियम -विधानों का पालन स्त्रियां करती हैं, पुरुष उनके सहयोगी की भूमिका में रहते हैं। भगवान सूर्य का यह व्रत विशेष कठिन व्रत माना जाता है, इसलिए कि तीन दिन तक इस व्रत में कुछ भी खाने-पीने की मनाही है। पहले दिन नहा खाकर शुद्ध होकर शाम को कद्दू की सब्जी और पकवान बनाकर खाया जाता है जिसे 'नहाए खाए' का नाम दिया गया है। दूसरे दिन सुबह से ही बिना अन्न- जल ग्रहण किये भगवान सूर्य की आराधना का व्रत शुरू होता है। इसे 'खरना' कहा जाता है। यह खरना छठ पर्व का दूसरा दिन होता है और कार्तिक शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। जिसमें भक्त पूरे दिन उपवास रखते हैं। उपवास भी ऐसा कि जिसमें अनाज खाने की बात तो दूर सूर्यास्त से पहले पानी की एक बूंद तक ग्रहण करने की मनाही है। शाम को सूर्यास्त के समय चावल, गुड़ और गन्ने के रस में खीर बनाई जाती है। भगवान सूर्य को नैवेद्य चढ़ाकर व्रत रखा जाता है। जिस घर में भगवान सूर्य को नैवेद्य चढ़ाया जाता है उसे बंद कर परिवार के लोग उससे बाहर चले जाते हैं मान्यता यह है कि भगवान सूर्य देव शांत स्थान पर आकर उस नैवेद्य को ग्रहण करते हैं और व्यक्ति की मनोकामना को पूरी करने का आशीर्वाद देते हैं। सुबह परिवार के सभी लोग साथ आकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस संपूर्ण प्रक्रिया को खरना कहा जाता है। इसके बाद 36 घंटे के लिए भक्त निर्जला व्रत रहते हैं। स्वयं निर्जला व्रत रहते हुए भी छठ माता के लिए जिसे सूर्य देव की बहन माना जाता है ,उन्हें प्रसन्न करने के लिए विशेष रूप से ठेकुआ बनाया जाता है। तीसरे दिन संध्या अर्घ्य का विधान है। इसमें सभी लोग पूरे दिन भर छठ पर्व की पूजा की तैयारी करते हैं, जिसमें ठेकुआ चावल के लड्डू अनेक प्रकार के फल और पूजा की सामग्री दौरा या बांस की बनी हुई बड़ी टोकरी में रखकर पुरुष सिर पर लिए नदी या तालाब के घाट पर जाते हैं। महिलाएं पीछे-पीछे छठ माता के गीत गाते हुए चलती हैं। - 'कांचहिं बांस के बहंगिया,बहंगी लचकती जाय।' यह अभूतपूर्व दृश्य उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल बिहार, बंगाल और झारखंड में देखा देखा जा सकता है। पुरुष सिर पर पगड़ी बांधे दौरा या गंठरी को सिर पर रखे, हाथ में गन्ने को लिए छठ माता की पूजा करने के लिए चलते हैं। पीछे-पीछे औरतें- बच्चे इस खुशी में नाचते -गाते -झूमते चलते हैं ,मन में उत्साह, शरीर में उमंग और हृदय में छठ माता की भक्ति से सराबोर भक्तों का रेला पूजा-अर्चना करने हेतु उमड़ पड़ता है। एक तरह से पूरे परिवार का सम्मिश्रित यह व्रत महा पर्व के रूप में परिवर्तित हो जाता है। नदी या तालाब के किनारे पहुंचकर स्त्रियां एक चबूतरे पर बैठकर नदी या तालाब के किनारे से मिट्टी निकालकर छठ माता का चौरा बनाती हैं। पूजा की सामग्री और उस पर नारियल दीप आदि चढ़ाकर छठ माता से अपनी मनोकामना पूर्ति की आराधना करती हैं। सूर्यास्त के कुछ समय पहले ही पूजा का सारा सामान लेकर सभी व्रती घुटने भर जल में खड़े हो जाते हैं और डूबते हुए सूर्य देव को अर्घ्य देकर परिक्रमा करते हैं। व्रती इस संध्या अर्घ्य के पश्चात् वहां से लौट कर घर नहीं आते बल्कि वहीं छठ मैया का गीत गाते हुए पूजा सामग्री के साथ इंतजार करते हैं, और सुबह उदीयमान सूर्य की आराधना करने का व्रत लेते हैं। सूर्योदय से पहले ही व्रती तालाब या नदी के किनारे घुटने भर जल में खड़े होकर हाथ में पूजा के सामान नारियल आदि से भरे सूप लेकर दीप जलाकर उगते सूर्य की आराधना करते हैं। उगते सूर्य की प्रतीक्षा में सूर्य उपासना करते समय वे भगवान सूर्य देव का स्मरण करते हैं और सूर्योदय के पश्चात् प्रसाद आदि का वितरण कर वे घर आते हैं। घर आकर अपने व्रत का पारण करते हैं। खरना के दिन से ही निर्जला व्रत रखने वाले व्रती अब उषा अर्घ्य देने के बाद ही भोजन करते हैं।

यह व्रत कठिनतम व्रत में से एक माना जाता है जिसमें सूर्य देव की आराधना घुटने भर जल में खड़े होकर की जाती है। घुटने भर जल में पूजा सामग्री से भरे सूप को हाथों में लिए घंटों खड़े रहना आत्मिक संयम, आध्यात्मिक शक्ति और मानव कल्याण का अप्रतिम उपक्रम माना जाता है। सूर्योदय की पैरा बैंगनी किरणें जल के अभिसिंचित वातावरण में अद्वितीय शक्ति का संचार करती हैं। प्रातः काल का वातावरण, पवित्र जल का सानिध्य और उगते भगवान सूर्य की आराधना,एक तरह से भौतिक पंच महाभूतों के साथ दैविक शक्ति के समंजन का अद्भुत उदाहरण है यह पर्व। संयम, अध्यात्म और लोक कल्याण के अप्रतिम संगम के रूप में प्रतिष्ठित यह पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा का अद्वितीय नमूना है। भक्ति का ऐसा स्रोत जो पूरे वातावरण को पवित्र बना दे अन्यत्र दुर्लभ है। यहां पर्यावरण का ध्यान विशेष तौर पर रखा जाता है। साफ-सफाई और शरीर को अधिक से अधिक कष्ट देकर, भोग से दूर रहकर अपनी आस्था को फलवती होते हुए देखना ही व्रतियों का मुख्य उद्देश्य होता है। इस अर्थ में यह एक तरह का आध्यात्मिक पर्व है ,जिसमें स्त्री -पुरुष सभी भोग विलास को भौतिक अपने सुख के साधन को छोड़कर नदी या तालाब के किनारे जल में खड़े होकर सूर्य देव की आराधना करते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि- सूर्य ऊर्जा और शक्ति हैं ,सूर्य ही सत्य हैं और सूर्य ही सभी ग्रहों के स्वामी हैं। वही पूरे ब्रह्मांड के प्रकाश -पुंज हैं। उन्हीं से सारी सृष्टि है, उन्हीं से पृथ्वी पर जीवन है। वे अंधकार का नाश करने वाले उजाले के पर्याय हैं। ऐसे सूर्य देव की आराधना करते हुए व्रती समस्त पृथ्वी के कल्याण की कामना करते हैं।

ऐसी मान्यता है कि छठी माता का व्रत करने वाले व्यक्तियों की मनोकामना छठी माता अवश्य पूर्ण करती हैं।

छठ पर्व का विशेष महत्व इस अर्थ में भी है कि सनातन धर्म में हम जिस भगवान अथवा ईश्वर की आराधना करते हैं उसमें एकमात्र सूर्य ऐसे देवता हैं, जिनको हम मूर्त रूप में देख सकते हैं। सगुण साकार रूप में सूर्य को देखा और उनकी ऊष्मा को महसूस किया जा सकता है। उषा को सूर्य की पत्नी के रूप में माना जाता है ,इसीलिए उषा काल में सूर्योदय के समय उनकी आराधना करने का विशेष महत्व है। सूर्य और शक्ति से ही जीवन है,उसी से जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। दोनों की आराधना से आत्मोन्नति का द्वार खुलता है।

वैसे तो सीधे-सीधे इस व्रत के उद्भव का पता लगाना मुश्किल है, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि सूर्य देव की आराधना का पहला संदर्भ ऋग्वेद में प्राप्त होता है। ऋग्वेद के पश्चात् उपनिषद आदि ग्रंथों में भी सूर्य उपासना और उसके महत्व का वर्णन प्राप्त होता है। देवता के सगुण रूप में सूर्य को प्रमाण मानने और उनकी आराधना उत्तम फल प्राप्ति का सूत्र है। उत्तर वैदिक काल में सूर्य को शक्ति का प्रतीक माना गया और पृथ्वी के कल्याण के लिए सूर्य की आराधना का विशेष महत्व स्थापित हुआ , इसीलिए सूर्य मंदिर आदि की स्थापना की गई।

भगवान सूर्य को आरोग्य के देवता के रूप में भी माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सूर्य की सुबह की किरणें इतनी क्षमतावान होती हैं कि मनुष्य के शरीर की अनेक व्याधियों को दूर करने की शक्ति रखती हैं। इसलिए भी उषा काल में सूर्य- उपासना को महत्वपूर्ण बताया गया है।

छठ पर्व की परंपरा पर यदि हम दृष्टिपात करें तो सबसे पहले रामायण काल में छठ पूजा का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है ,जिसमें श्रीलंका को जीतने के बाद भगवान राम सीता जी के साथ जब अयोध्या में राम राज्य की स्थापना करने के लिए आए तो माता सीता ने सूर्य देव की आराधना की और छठ व्रत रखा। इस छठ व्रत के अनुष्ठान से सूर्य का आशीष ग्रहण किया कि राम राज्य सुचारू रूप से संचालित होता रहे। यहां छठ पूजा का मुख्य उद्देश्य प्रजा का कल्याण और समुचित प्रशासन का संचालन ही था।

महाभारत काल में भी छठ पर्व मनाने का संदर्भ आता है। एक मान्यता के अनुसार राजा प्रियंवद को कोई संतान नहीं थी। उनके आग्रह पर महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञ की आहुति के लिए बनाई खीर का प्रसाद दिया, जिसके प्रभाव से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। लेकिन दुर्दैववश पैदा होते ही वह पुत्र मर गया। पुत्र वियोग में पिता और माता दोनों प्राण त्यागने के लिए तैयार हो गए, लेकिन उसी समय ब्रह्मा जी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और उसने कहा कि मैं छठी कहलाती हूं। हे राजन् आप हमारी पूजा करें और लोगों को भी छठी माता की पूजा के लिए प्रेरित करें, जिससे लोगों को पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। यह पूजा कार्तिक शुक्ल की छठ को हुई थी , इसीलिए तब से कार्तिक शुक्ल की छठ को इसे मनाने की मान्यता चलती आ रही है। छठ पर्व और इसके व्रत का सामाजिक- सांस्कृतिक महत्व तो है ही , विशेष तौर पर यह भक्ति और आध्यात्मिक पर्व है ,जिसमें व्रती भगवान सूर्य और उनकी बहन छठ माता को प्रसन्न कर अपने जीवन को धन-धान्य और आरोग्य से संपन्न करना चाहता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस पर्व में किसी पुरोहित आदि की कोई आवश्यकता नहीं होती। कोई भी व्यक्ति सामान्य रूप से व्रत के नियमों का पालन करते हुए इसका अनुष्ठान उठा सकता है। अतः एक तरह से यह बड़ा ही लोकतांत्रिक पर्व है, जो विराट मानव समाज के कल्याण के लिए कार्य करता है। इसमें भक्ति और सेवा दोनों का सामंजस्य है।

भारतीय संस्कृति की सच्ची संवाहक 'हिंदी'



यह शाश्वत सत्य है कि भाषा, मनुष्य के भावों व विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त साधन है। यह भी देखने में आया है कि संसार में जितने भी राष्ट्र हैं, प्रायः उनकी राजभाषा वही है जो वहाँ की संपर्क भाषा है तथा वही राष्ट्रभाषा है जो वहाँ की राजभाषा है। भारत विविधताओं से भरा देश है जहाँ अनेकता में एकता झलकती है। भारतीय उपमहाद्वीप के प्रत्येक राज्य में सुसंस्कारित एवं समृद्ध राज्य-भाषाएँ एवं अनेक उपभाषाएँ बोली जाती हैं, अतः यह कहना समीचीन होगा कि भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। इस परिदृश्य में किसी एक भाषा को महत्व देना कठिन हो जाता है, लेकिन आजादी के बाद सभी भारतीय भाषाओं मे जो भाषा मनोरंजन, साहित्यिक एवं संपर्क भाषा के रुप में ऊभरी है वह हिंदी ही है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत ही बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है।

आज हिन्दी को जिस रूप में हम देखते हैं उसकी बाहरी आकृति भले ही कुछ शताब्दियों पुरानी हो, किन्तु उसकी जड़ें संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश रूपी गहरे धरातल में फैली हैं। वैज्ञानिक आधार पर विश्व स्तर पर किए गए भाषा-परिवारों के वर्गीकरण के अनुसार हिन्दी को भारतीय आर्य भाषा परिवार से उत्पन्न माना जाता है। अतः हिन्दी आनुवंशिक रूप से आर्य भाषा-संस्कृत से संबद्ध है। भारतीय भाषाओं के इतिहास का पुनर्लेखन करते हुए भाषा वैज्ञानिक डॉ. जॉन बीम्स ने भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं में हिंदी के अलावा पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, उड़िया और बंगाल की भाषाओं को समाहित करते हुए लिखा है कि "हिन्दी राष्ट्र के अंतरंग की भाषा है। हिन्दी संस्कृत की वैध उत्तराधिकारी है और आधुनिक भारतीय भाषा व्यवस्था में उसका वही स्थान है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था"।

वैदिक संस्कृत में ऋग्वेद की रचना होना माना जाता है, ऋग्वेद की रचनाओं में हमें प्राचीनतम आर्य भाषा की बानगी मिलती है। उस समय साहित्यिक संस्कृत और बोलचाल की लौकिक संस्कृति के बीच अंतर बढ़ रहा था किन्तु साहित्यिक संस्कृत के रूप में व्याकरण के नियम भी विकासित हो रहे थे। भगवान बुद्ध के उपदेशों और अशोक की धर्मलिपियों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पाली उस समय की बोलचाल और साहित्यिक भाषा का मिश्रित रूप थी जो मूलतः मगध और कौशल की बोली का परिवर्तित रूप थी। गौतम बुद्ध के उपदेशों को अधिकतम प्रचारित करने के उद्देश्य से तत्कालीन पाली भाषा को अधिक से अधिक सरल बनाने पर जोर दिया जा रहा था, फलस्वरूप यहां आते-आते संस्कृत के अनेक जटिल स्वरूप लुप्त हो गए और उच्चारण में भी परिवर्तन आ गया।

साहित्यिक प्रयोग के कारण ये व्याकरण के कठिन और अस्वाभाविक नियमों में बांध दी गई, परिणामस्वरूप उनका साहित्यिक विकास रुक गया, किन्तु बोलचाल में इनका मनमाने ढंग से प्रयोग होता रहा। फलस्वरूप भाषाओं का जो बिगड़ाव हुआ या उनमें जो परिवर्तन आया, उसके चलते इन बोलचाल की भाषाओं को अपभ्रंश या बिगड़ी हुई भाषा कहा जाने लगा। इन अपभ्रंश भाषाओं का विकास विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली प्राकृत भाषाओं से ही हुआ। धीरे-धीरे ये अपभ्रंश भाषाएँ भी साहित्यिक भाषाएँ बनती चली गई। व्याकरण की अत्यधिक जटिलता और नियमबद्धता के कारण इन अपभ्रंश भाषाओं से पुनः स्थानीय बोलचाल की भाषाओं का जन्म हुआ जिन्हें हम आज की आधुनिक भारतीय भाषाओं के रूप में जानते हैं।

हिन्दी भाषा के विकास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ ही प्रारंभ होती है। खड़ी बोली या खिचड़ी भाषा के रूप में पहचानी जाने वाली हिन्दी भाषा का वास्तविक विकास इन चार चरणों में हुआ माना जा सकता है:

1. आदिकाल 2. मध्य काल
3. आधुनिक काल 4. वर्तमान काल

1947 से लेकर अब तक का समय हिन्दी का वर्तमान काल कहलाता है। देश की आजादी के साथ ही हमें भौगोलिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ भाषागत स्वतंत्रता भी प्राप्त हुई। इस काल में हिन्दी का आधुनिकीकरण और मानकीकरण हुआ। किन्तु इन सबसे पहले देश की वैधानिक व्यवस्था में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने का सर्वोच्च कर्तव्य पूरा हुआ। संविधान की धारा 343 के अंतर्गत हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित हुई और धारा 353 में हिन्दी के विकास की दिशा तय की गई जिसमें शासन की ओर से हिन्दी के विकास के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी तय किया गया।

आजादी से पूर्व खड़ी बोली हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही सामान्य बोलचाल की एकमात्र ऐसी भाषा थी जो किसी न किसी रूप में देश के ज्यादातर भागों में समझी और बोली जाती थी। अतः एक राष्ट्र और एक राष्ट्रभाषा की भावना यहां जागृत हो उठी और हिन्दी सबसे आगे निकलकर राष्ट्र भाषा, संपर्क भाषा और मानक भाषा बनती चली गई। इस अभियान में गांधी जी की भूमिका अहम रही जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में राजनीतिक और सामाजिक मान्यता और संरक्षण प्रदान किया तथा इसका परिणाम यह रहा कि उत्तरी भारत में हिंदी साहित्य सम्मेलन और दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा जैसी हिन्दी सेवा संस्थाओं का जन्म हुआ, जिसके माध्यम से हजारों अहिंदी भाषी भारतीयों ने स्वैछिक तौर पर हिन्दी को सीखना और अपनाना शुरू किया।

राजनीतिशास्त्र के कई विद्वानों ने इस बात को दोहराया है कि जब कोई देश किसी दूसरे देश को पराजित कर अपना गुलाम बना लेता है, तो वह पराजित देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा आदि को नष्ट करने का भरसक प्रयास करता है, पराधीन देश पर आक्रांताओं द्वारा अपनी भाषा को राजकाज की भाषा के रुप में जबरदस्ती थोपा जाता है ताकि पराधीन देश की आने वाली पीढ़ी यह भूल जाए कि वे कौन थे, उनकी संस्कृति एवं राजभाषा क्या थी। हिन्दी को राजभाषा का स्थान केवल इसलिए नहीं दिया गया कि वह देश की एक मात्र संपर्क भाषा है, बल्कि अंग्रेजी शासन को जड़ों से उखाड़ने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि क्रांतिकारियों के बीच में कोई एक भाषा हो जिसमें वह अपनी बात एक दूसरे को समझा सके। यह वह दौर था जब देश अंग्रेजो के शासन से त्रस्त था, लोग आज़ादी के लिए तरस रहे थे।अंग्रेजी विदेशी भाषा थी, जो विदेशी शासन का अनिवार्य अंग थी, अंग्रेजी शासन का विरोध करने के साथ-साथ अंग्रेजी का विरोध करना या उससे संबंधित वस्तुओं का विरोध भी आवश्यक हो गया था।

अतः स्वाधीनता संग्राम के वक्त राष्ट्रीय नेताओं ने स्वदेशीपन या राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया। देशवासियों के बीच एकता का संचार करने वाली भाषा के रुप में हिन्दी उभर कर सामने आई। देश को आजादी मिलने के बाद यह सामने आया कि देश में संचार की भाषा कोई हो सकती है तो वह हिन्दी ही है। संपर्क या व्यवहार की भाषा के रूप में हिन्दी की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया जाने लगा। हिन्दी की इसी विशेषता को ध्यान में रखकर भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को मुंशी अय्यंगर फार्मूले के आधार पर हिन्दी को भारत-संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में इसे राजभाषा दिवस के रुप में मनाया जाता है।

संविधान के अनुच्छेद 343 में यह विशेष रुप से उल्लेख किया गया कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है और जिसकी लिपि देवनागरी होगी। आखिर वह दिन भी आया जब 26 जनवरी, 1950 को गणतांत्रिक भारत का संविधान लागू हो गया, संविधान के लागू होने के साथ ही विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका से जुड़ें कामकाज को हिन्दी में पूरा करना अपेक्षित हो गया।

भविष्य में निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि बहुभाषी समाज में अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए संपर्क भाषा हिन्दी ही हो सकती है। यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा समस्त देश-विदेशवासियों को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा है। मेरा मानना है कि भाषाएँ आपसी समरसता का साधन हैं। स्थानीय भाषा और राजभाषा हिंदी के बीच कोई स्पर्धा नहीं हो सकती, क्योंकि ये दोनों भाषाएँ सगी बहनों की तरह हैं। आज हमें एक ऐसे वातावरण के निर्माण करने की आवश्यकता भर है, जिसमें राजभाषा हिंदी का विकास सहज रूप से हो सके। मुझे विश्वास है कि समस्त अधिकारी व कर्मचारी अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का प्रयास करेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाकर हम देश की एकता की कड़ी को मजबूती प्रदान करने में अपना योगदान दे सकते हैं।



सलीम अ. खान
प्रमुख – राजभाषा, एचपीसीएल
एवं सदस्य सचिव मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति





मदन गोपाल गुप्ता 'अकिंचन'

छठ शब्द में छ का अर्थ है, शुद्ध और ठ का अर्थ है, सूर्य। इस तरह छठ पर्व कामनाओं से शुद्ध अर्थात निष्काम होकर सूर्य की उपासना का पर्व है। श्रीराम का जन्म सूर्य वंश में हुआ था। वे सूर्यों के सूर्य हैं और सूर्यदेव, जिन्हें आदित्य के नाम से जाना जाता है, उनके इष्टदेव हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार "आदित्यहृदयस्तोत्र" की उपासना के पुण्यफलस्वरूप ही वे रावण का वध करने में सफल हुए थे, आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जब रावण का अंत हो गया और वे अयोध्या वापस लौट जाए, तत्पश्चात अपना आभार प्रकट करने के लिए उन्होंने सरयू के तट पर सूर्यदेव की उपासना की थी। ऋषि विश्वामित्र भी आदित्य की उपासना के फलस्वरूप ब्रह्मणत्व प्राप्त कर सके थे।

योग की भाषा में मनुष्य का शरीर सूक्ष्मतौर से एक छोटा-सा ब्रह्माण्ड है। मनुष्य एक छोटे से अस्तित्व में सघनरूप से समाया हुआ है। बाहर का जो ब्रह्माण्ड है, वह कुछ और नहीं, मनुष्य के अन्तर-अस्तित्व का विस्तार है। जो कुछ बाहर अस्तित्व रखता है, ठीक वही मनुष्य के भीतर अस्तित्व रखता है। बाहर के सूर्य की भाँति ही मनुष्य के भीतर एक सूर्य है। वह आदित्य के नाम से जाना जाता है। आदित्य का अर्थ है, जिसका अस्तित्व आरम्भ से हो। परिवर्तित होते हुए प्राणियों के कर्मफलों का उपादान आदित्य के कारण ही होता है। वह हमारे भीतर कर्मफलों का आदान करते हुए भ्रमण करता है, आददाना यन्ति, इस व्युत्पत्ति के अनुसार आदित्य कहलाता है।

ब्रह्मसूत्र ३२५ कहता है, तत् अभावो नाडीषु तत् श्रुतेः आत्मनि च, हमारे भीतर कामवासना का केन्द्र वह आदित्य है, हमारे अन्तस के सौरतंत्र का केन्द्र। वह प्रजननतंत्र में छिपा है। योग उसे मूलाधार कहता है। जब तक व्यान ऊर्जा नाड़ी तंत्र में बह रही होती है, हम सुप्त अवस्था में बने रहते हैं, हमारा चैतन्य सोया होता है, हम शरीर से जुड़े रहते हैं और भीतर के आदित्य को नहीं जान पाते।

भीतर के आदित्य को कैसे जाना जाय? योग कहता है कि सबसे पहले आदित्य की नील प्रभा में प्रवेश करना होगा। निर्मल आकाश का वर्ण नीला है, विष्णु का रंग नीला है, शुद्ध जल से व्याप्त समुद्र नीले रंग का प्रतीत होता है। नील वर्ण पवित्रता का प्रतीक है, इसलिए उसे विशुद्धचक्र से जोड़ा गया है। जब चैतन्य ऊर्जा सुषुम्ना में प्रवेश करके हृदयचक्र से होते हुए विशुद्धचक्र को खोलती है, तब वह जिस रूप को प्राप्त होती है, वह नीलवर्णीय होता है। वहाँ कामनाओं का विष निरस्त हो जाता है, नीलग्रीवो विलोहितः। ग्रीवा का सम्बन्ध विशुद्धचक्र से है और विशुद्धचक्र का सम्बन्ध पवित्रता से है। वही है नीलवर्णीय आभा लिए शिव का स्वरूप। हालाहल विष पीनेवाले श्वेतवर्णीय शिव के गले का नीलवर्णीय होना उस बात का प्रतीक है।

योग कहता है कि सुषुम्ना में प्रवाहित होती हुई आदित्य ऊर्जा की पवित्र धारा में बह जाओ। फिर एक दिन श्रीराम के धाम साकेतधाम पहुँच जाओगे। वह धाम हिरण्यवर्णीय है। वहाँ आदित्य ऊर्जा की स्वर्णिम आभा का दर्श होता है। वह बोधत्व का वर्ण है, श्रीराम का मौलिकस्वरूप। छठ का पर्व यह स्मरण दिलाने के लिए है कि अपने अंतस में स्थित सूर्यों के सूर्य, श्रीराम को अपनी स्मृति से कभी भी विस्मृत न होने देना।

'टालमटोल' की प्रवृत्ति का अर्थशास्त्रीय विवेचन

क्या आपने कभी ऐसी अवस्था का अनुभव किया है, जब आप सचमुच कुछ नया करने के इच्छुक हों, किंतु मन से अपने सुविधा-क्षेत्र को छोड़ने के लिए तत्पर न हों?

नियमित रूप से व्यायामशाला जाने का सामान्य उदाहरण लीजिए। पूर्ण उत्साह, पूर्ण प्रोत्साहन - आप भीतर जाते हैं और सदस्यता ले लेते हैं। उसके बाद का चरण है उसका वास्तव में उपयोग करना। "ठहरिए, मैं सोमवार से आरंभ करूँगा, आने वाले सप्ताह की नई शुरुआत। और भी अच्छा होगा कि अगले माह की पहली तिथि से करूँ।" किंतु वह एक सोमवार, वह एक पहली तिथि, कभी आती ही नहीं। परिणाम? प्रेरणा का अभाव, स्वास्थ्य-समस्याओं की अधिकता, और सुविधा का अवसर-मूल्य - आपका धन और आपकी सदस्यता, दोनों अप्रयुक्त पड़े रह जाते हैं। विद्यार्थी भी यही करते हैं। "मैं कल से पढ़ूँगा," वे कहते हैं - जब तक परीक्षा की समय-सारणी सामने नहीं आ जाती, और वह एक 'कल' कभी आया ही नहीं। वस्तुतः बात यह है: समस्या कभी योजना में नहीं थी। समस्या क्रियान्वयन में है।

वर्तमान में 'आप' बनाम भविष्य के 'आप'

अर्थशास्त्रियों ने इसका एक नाम रखा है: अतिपरवलयिक अवमूल्यन। सरल शब्दों में, हम तात्कालिक सुविधा को भविष्य के पुरस्कार से कहीं अधिक महत्त्व देते हैं, चाहे हमें ज्ञात हो कि भविष्य का पुरस्कार बड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो आपका मस्तिष्क निरंतर 'वर्तमान में आप' और 'भविष्य के आप' के बीच मोल-भाव कर रहा हो - और सदा 'वर्तमान आप' की ही विजय होती है, अधिकतर इसलिए कि 'भविष्य के आप' उस कक्ष में उपस्थित ही नहीं होते कि पलटकर उत्तर दे सकें।

जब-जब आप किसी कार्य को "कल" पर टालते हैं, तब आप उतने आलसी नहीं हैं जितना आप समझते हैं। आप एक आर्थिक विनिमय कर रहे होते हैं - अभी की सुविधा, उस मूल्य के बदले जिसे आप चुपचाप अपने भविष्य-स्वरूप को सौंप रहे हैं, जिसने उसे चुकाने की कभी सहमति दी ही नहीं थी।

मस्तिष्क प्रतिरोध क्यों करता है?

मस्तिष्क विकास के प्रति किसी द्वेष के कारण विपरीत नहीं गढ़ा गया है - वह कार्यकुशलता के लिए गढ़ा गया है। आदतें तंत्रिका-विज्ञान की दृष्टि से सस्ती होती हैं। नया व्यवहार महँगा होता है। जब-जब आप किसी दिनचर्या को बदलने का प्रयास करते हैं, तब आप अपने मस्तिष्क से उसकी इच्छा से अधिक ऊर्जा व्यय करवा रहे होते हैं। सुविधा तत्क्षण सुखद लगती है; विकास का फल कालांतर में मिलता है। और हमारा मस्तिष्क "कालांतर" की प्रतीक्षा करने में अत्यंत दुर्बल है। इसी कारण प्रेरणा के उफान में मोल ली गई पुस्तक अछूती पड़ी रहती है। इसी कारण जिस पाठ्यक्रम में आपने प्रवेश लिया था, वह अब भी 3% पर अटका है। इसी कारण "अगले माह से धन बचाऊँगा" वाली बात भी अगले माह कभी आरंभ नहीं होती। यह इच्छाशक्ति की समस्या नहीं है - यह अवमूल्यन की समस्या है।

"किसी दिन" का भ्रम

"किसी दिन" टालमटोल करने वाले की शब्दावली का सबसे संकटमय शब्द है - क्योंकि यह कोई तिथि नहीं, बल्कि बच निकलने का मार्ग है। यह योजना जैसा प्रतीत होता है, किंतु वास्तव में यह बिना समय-सीमा की प्रतिज्ञा है, जिसका अर्थ है कि यह वस्तुतः कोई प्रतिज्ञा है ही नहीं। आपके मस्तिष्क को "किसी दिन" इसलिए प्रिय है क्योंकि उसे परिवर्तन का विचार बनाए रखने को मिल जाता है - आगे बढ़ने का संकल्प कर लेने का संतोष - वास्तव में बदलने का मूल्य चुकाए बिना। आपको संकल्प का भावनात्मक पुरस्कार मिल जाता है, कर्म के घर्षण के बिना। यह सबसे सस्ता व्यसन है: केवल उत्पादक होने की योजना बनाकर ही स्वयं को उत्पादक अनुभव करना। किंतु "किसी दिन" किसी पंचांग में नहीं होता। वह तभी आता है जब आप उसकी प्रतीक्षा करना छोड़कर कोई वास्तविक दिन का चयन कर लेते हैं।

कितना प्रभावशाली है मनोदशा

प्रेरणा एक मनोदशा है, और मनोदशाएँ समय-सारणी के अनुसार नहीं आतीं। जो कारगर होता है, वह है पहले चरण को अपने प्रतिरोध से छोटा बना देना:

- यह न कहिए "मैं व्यायामशाला जाऊँगा।" कहिए "मैं प्रातः 7 बजे जूते पहन लूँगा।" शेष कार्य गति सँभाल लेगी।
- "3 घंटे पढ़ूँगा" का लक्ष्य न रखिए। लक्ष्य रखिए 2 मिनट के लिए पुस्तक खोलने का।
- निर्णय लेने और कर्म करने के बीच का घर्षण घटाइए - टालमटोल उसी अंतराल में निवास करती है।
- छोटे, विशिष्ट और तात्कालिक कदम, बड़े, अस्पष्ट और भविष्य के कदमों को हर बार परास्त करते हैं।

वास्तविक मूल्य

प्रत्येक "मैं कल से आरंभ करूँगा" आपके भावी स्वरूप से लिया गया एक छोटा-सा ऋण है - ब्याज सहित। और वह ब्याज उसी मुद्रा में चक्रवृद्धि होता है, जिससे यह लेख आरंभ हुआ था: धन, स्वास्थ्य, गति, और वह समय जिसे आप दो बार व्यय नहीं कर सकते। तो यह है वह वास्तविक प्रश्न जिस पर ठहरकर विचार करना उचित है: वह एक कार्य कौन-सा है जिसे आप स्वयं से कहते आए हैं कि "सोमवार से" आरंभ करेंगे?

संभवतः आज यह जाँचने के लिए उत्तम दिन है कि वह सोमवार सचमुच अस्तित्व में है भी या नहीं।





- निशी शर्मा, के. सी. महाविद्यालय, मुंबई

वाग्ज्योति टाइम्स
मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर का नाम ने केवल महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में अपितु पूरे देश में बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। वह एक पराक्रमी योद्धा थी। अहिल्याबाई होलकर के शासनकाल के दौरान मराठा-मालवा साम्रज्य ने बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त की थी। उन्होंने कई सारे हिंदू मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। महारानी अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई, 1725 को महाराष्ट्र के चैंडी गांव में हुआ था, बचपन से ही उनके मन में दया भाव बहुत अधिक थी। लोग आज भी उन्हें अहिल्याबाई के नाम से उनका स्मरण करते हैं। वहीं इंदौर शहर को अहिल्या नगरी भी कहा जाता है। अहिल्याबाई के पिता का नाम मानकोजी शिंदे था। वह धनगर समाज से ताल्लुक रखते थे। वह एक सरपंच थे। अहिल्याबाई किसी राजघराने परिवार से नहीं थीं। अहिल्याबाई उस जमाने की थी जब लड़कियों के लिए शिक्षा अधिक मायने नहीं रखती थी ना ही उस दौरान शिक्षा का बहुत अधिक प्रचलन था। लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें घर पर ही पढ़ना-लिखना शुरू कर दिया। पढाई के साथ उन्हें शास्त्रज्ञान भी सिखाया।

एक दिन वह मंदिर में गरीबों को भोजन करा रही थी। उसी दौरान मालवा के अधिपति मल्हारराव होलकर की नजर अहिल्याबाई पर पड़ी। उसी



वक्त उन्होंने तय कर लिया की यही उनके बेटे खंडेराव होलकर की पत्नी बनेंगी। वर्ष 1733 में अहिल्याबाई का विवाह खंडेराव से हो गया। उस वक्त अहिल्याबाई की उम्र सिर्फ 8 वर्ष थी। खंडेराव अहिल्याबाई से 2 साल बड़े थे। शादी के बाद अहिल्याबाई महेश्वर आ गई। अहिल्याबाई खुश थी। उनका जीवन अच्छे से बीत रहा था। सन 1745 में उन्हें बेटा हुआ मालेराव होलकर और 1748 में उन्हें बेटी हुई मुक्ताबाई। सन 1754 में अहिल्याबाई के जीवन में अंधेरा छा गया। एक युद्ध के दौरान पति खंडेराव वीरगति को प्राप्त हो गए। यह खबर सुनते ही अहिल्याबाई सती हो जाना चाहती थी। लेकिन अहिल्याबाई को उनके ससुर ने रोका और मानसिक तौर पर उन्हें मजबूत किया। वह हर विपरित परिस्थिति में अहिल्याबाई के साथ खड़ें होते थे। स्वास्थ्य खराब होने के कारण बेटे की मृत्यु हो गई। और कुछ समय बाद ससुर मल्हारराव का भी निधन हो गया। पूरा भार अहिल्याबाई पर आ गया था। लेकिन अहिल्याबाई ने इस भार को भार नहीं बनने दिया और मालवा के शासन की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली।

अहिल्याबाई होलकर पर जब यह जिम्मेदारी आई वह तैयार थी लेकिन स्त्री होने के नाते उनकी राह आसान नहीं थी। चारों ओर से उन्हें विरोध की लौ में भी जलना पड़ना लेकिन वह उसमें और अधिक मजबूत बनकर उभरी। 11 दिसंबर, 1767 को वे स्वयं इंदौर की शासक बन गईं। राज्य में एक तबका था जो उनके विरोध में था लेकिन होलकर सेना हमेशा उनके समर्थन में रहीं। वहीं रानी भी हर लड़ाई में अपनी सेना के साथ ही खड़ी रहीं। अपनी सेना का नेतृत्व किया, उनका हौंसला बढ़ाया। अपने पंसदीदा हाथी पर चढ़कर युद्ध में उतरी, तीर-कमान से अन्य सेनाओं पर हमला किया।

अहिल्याबाई की बहादुरी देखकर समूचे देश में उनकी चर्चा होने लगी। उन्होंने मालवा और प्रजा की रक्षा की। क्षेत्रों को लूटने से बचाया। धीरे-धीरे अहिल्याबाई जिम्मेदारियों का बांटती गई। उन्होंने अपने विश्वसनीय सेनानी सूबेदार तुकोजीराव होलकर को सेना प्रमुख बनाया। अहिल्याबाई को बचपन से ही शस्त्र का ज्ञान और चलाना सीखाया गया। लेकिन इसके साथ वह एक अच्छी रणनीतिकार भी थी। अहिल्याबाई प्रजा कर समस्या के लिए हर दिन एक सार्वजनिक सभा रखती थीं। और जल्द से जल्द प्रजा की समस्या का निवारण करती थी। वह हमेशा अपने राज्य और लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। 30 साल के शासन में अहिल्याबाई ने एक छोटे से गांव का फलीभूत शहर का विकास किया। आज मालवा क्षेत्र में बने सड़कें, किले का श्रेय अहिल्याबाई को ही जाता है।

अहिल्याबाई को जीवन में बहुत अधिक दुख नहीं रहा क्योंकि वह उन सभी से उभर पाने में सक्षम रहीं। लेकिन एक बात का मलाल उन्हें हमेशा रहा कि अपनी जमाई की मृत्यु के बाद बेटी सती हो गई थी। रानी अहिल्याबाई का लंबे वक्त तक शासन रहा। 70 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। इसके बाद विश्वसनीय सेना प्रमुख रहें तुकोजीराव होलकर ने शासन की कमान संभाली। एनी बेसंट लिखती हैं, 'इंदौर अपनी उस महान और दयालु रानी के लिए जितना शोक मनाए कम था। आज भी उनको सभी अपार सम्मान के साथ याद करते हैं।' भारत के इतिहास की श्रेष्ठ योद्धा रानियों में शुमार हैं महारानी अहिल्याबाई होलकर।

लघु व्यंग्य

इंतज़ाम

■ जेल मंत्री ने जेल का दौरा किया और अपने वक्तव्य में कहा – "हमें नहीं भूलना चाहिये कि क़ैदी भी इंसान की श्रेणी में आते हैं। हमें उनके साथ जानवरों सदृश्य व्यवहार करने का कोई हक़ नहीं।" उधर एक पुराने क़ैदी ने अपने साथी क़ैदी से कहा "मंत्री जी केस हारने वाले हैं। हमें उनके स्वागत का इंतज़ाम करना चाहिये ."

तोहफ़ा

■ पिछले कई सालों से हर दीपावली को वह अपने सारे नौकरों को एक-एक जोड़ी नए कपड़े सिलवा कर देता है। इस वर्ष माँ और बाबूजी को भी नए कपड़े दीपावली पर मिले

युवा लेखिका और उम्र का दायरा

■ 20 वर्ष की एक नवयौवना अपनी 45-46 वर्ष की लेखिका माँ से बोली, मम्मा तुम अभी तक युवा विशेषांक में रचनाएँ भेजती हो। तुम बड़ी कब होगी। मम्मा बोली जब तेरी 50 -55 वाली मौसियाँ युवा विशेषांक से बाहर होंगी उसके 10 वर्ष बाद!



कचरा

■ सुनो अब दो दिन बिलकुल सामने वाले भाग की सफ़ाई मत करना।
■ पागल समझती है क्या मुझे। स्पर्श भी नहीं करूँगा।
■ रात को चुपके से पड़ोस का कचरा भी अपनी तरफ़ खींच लेना।
■ हाँ भाई हाँ। अड़ोस-पड़ोस दोनों का कचरा खींच लूँगा।
■ सावधान रहना कहीं ऐसा न हो कि हम सोते ही रह जायें और कोई हमारा कचरा ही ग़ायब कर दे।
■ इस साल तो मैं रात को कचरे के ढेर पर ही बैठा रहूँगा भागवान।
■ मीडिया वाले सुबह 9.00 बजे कवरेज को आ रहे हैं। हम दोनों झाड़ू मारते हुए ही उनका स्वागत करेंगे।
■ केवल झाड़ू नहीं। नई झाड़ू। आख़िर 2 अक्टूबर है। सफ़ाई तो बनती है।



सुधीर ओखदे
वरिष्ठ साहित्यकार
जलगाँव (महाराष्ट्र)

उपेक्षा

■ चेला - सर आपने उनकी वह रचना पढ़ी। अद्भुत है। भाषा तो वाह वाह
■ गुरु - उसकी इस रचना का उल्लेख कहीं मत करना। ये अच्छा लिखने वालों को उपेक्षा से ही मारा जा सकता है। उपेक्षा करो साले की
■ चेला - यानि आप अपनी पत्रिका में
■ गुरु - साले की किताब पर 3-3 आलेख आये हैं। एक भी नही छापूँगा।
■ चेला - और सर मैं
■ गुरु - इस बार तू देख तुझे कैसे शिखर पर बैठता हूँ।
■ चेला - लेकिन सर उनकी रचना
■ गुरु - कौन सी रचना
■ चेला - ओह उपेक्षा। कितना भद्दा लेखन है उनका।
■ गुरु मुस्कुराये। चेला खुश हुआ। और एक लेखक की उसी दिन मौत हो गई

पुस्तक समीक्षा

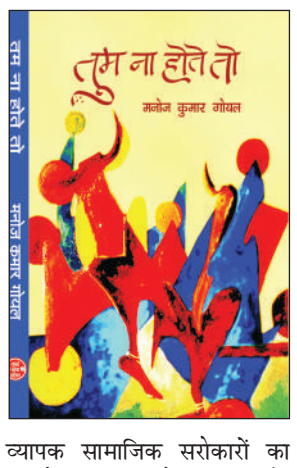
संबंधों की आत्मीय अभिव्यक्ति 'तुम न होते तो'

कवि : मनोज कुमार गोयल | काशक : मुंबई भाषा परिषद

किसी काव्य-संग्रह का शीर्षक यदि पाठक के मन में जिज्ञासा और भावात्मक हलचल पैदा कर दे, तो उसकी पहली साहित्यिक उपलब्धि वहीं दिखाई देने लगती है। कवि मनोज कुमार गोयल का काव्य-संग्रह 'तुम न होते तो' इसी दृष्टि से आकर्षित करता है। शीर्षक अपने आप में अनेक अर्थों और संभावनाओं को समेटे हुए है। इसे पढ़ते ही प्रश्न उठता है कि आखिर यह 'तुम' कौन है? मित्र, प्रेमिका, जीवनसाथी, संतान अथवा कोई ऐसा आत्मीय व्यक्तित्व, जिसके होने से जीवन को अर्थ मिलता है? इसकी विशेषता यही है कि कवि ने 'तुम' को किसी एक संबंध तक सीमित नहीं रखा है। प्रत्येक पाठक अपनी अनुभूतियों के अनुसार इसका अर्थ तलाश सकता है।

इस संग्रह में कवि के संवेदनशील मन और जीवन के प्रति गहरे अनुराग की अभिव्यक्ति हुई है। मनोज कुमार गोयल की कविताएँ व्यक्तिगत अनुभूतियों से आगे बढ़कर सामाजिक यथार्थ से संवाद करती हैं। जमीन से जुड़े होने के कारण वे आम आदमी की पीड़ा, अभाव, संघर्ष और परेशानियों को गहराई से महसूस करते हैं। उनकी रचनाओं में नारी की स्थिति, पारिवारिक संबंधों की मर्यादा, सामाजिक विसंगतियों और लोकतांत्रिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर भी विचार किया गया है। ZZसमकालीन जीवन में बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव अब पारिवारिक रिश्तों तक पहुँच गया है। स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा और भौतिक उपलब्धियों की दौड़ ने संबंधों की आत्मीयता को प्रभावित किया है। कवि इस बदलते सामाजिक परिवेश के प्रति चिंतित दिखाई देते हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी सजगता भी उल्लेखनीय है। वे प्रकृति के प्रति मानवीय जिम्मेदारी का एहसास कराते हैं। पत्रकारिता जगत की चाटुकारिता, व्यावसायिक दबाव और टीआरपी की प्रतिस्पर्धा भी कवि की चिंता के विषय हैं। पत्रकारिता के मूल उद्देश्यों और सामाजिक दायित्वों से जुड़ी इन विसंगतियों को रेखांकित करना उनके समकालीन बोध को दर्शाता है।

वस्तुतः किसी रचनाकार की सार्थकता उसके समय, समाज और परिवेश के प्रति सजग दृष्टि में निहित होती है। 'तुम न होते तो' में व्यक्तिगत संवेदनाओं के साथ



व्यापक सामाजिक सरोकारों का समावेश इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह काव्य-संग्रह पाठक को आत्मीय संबंधों की महत्ता का एहसास कराने के साथ अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है। यही इसकी प्रमुख विशेषता है।



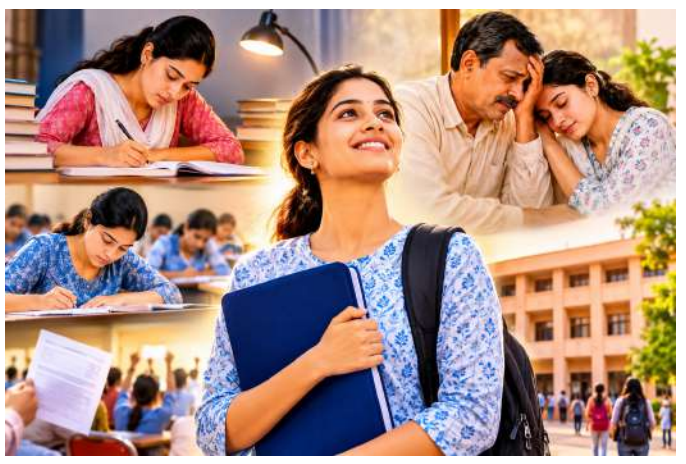
समीक्षक : रामकुमार त्रिपाठी

मौन की मुट्ठी में बंद सपना

कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जिनकी सबसे ऊँची आवाज़ उनका मौन होता है। मेरी यात्रा भी वैसी ही थी। मेरे भीतर यह विश्वास बहुत पहले जड़ें जमा चुका था कि नौकरी केवल आजीविका का साधन नहीं, स्वतंत्रता का दूसरा नाम है, आर्थिक भी और मानसिक भी। इसीलिए स्नातक की पढ़ाई पूरी होते ही मन ने एक राह चुन लीः बी. एड.। मेरी इच्छा थी कि विवाह की दहलीज़ तक पहुँचने से पहले मैं अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊँ।

पर राहें इतनी सीधी कहाँ होती हैं। उसी वर्ष कानों तक यह बात पहुँची कि बी. एड. में प्रवेश के लिए 'पहचान' चाहिए। कोई परीक्षा नहीं, बस एक बड़ी रकम, और तभी द्वार खुलेगा। पापा के हाथ उस बोझ को उठाने की स्थिति में नहीं थे। मेरा सपना देहरी पर ठिठककर रह गया, और मैंने एक पूरा वर्ष प्रतीक्षा में गुज़ार दिया।

फिर एक दिन एक नई बात सामने आई; प्रवेश परीक्षा होती है और तैयारी के बल पर सरकारी सीट भी मिल सकती है। उस क्षण भीतर कुछ बदल गया। मैं पुस्तकों में डूब गई। पर इस राह पर एक अनकही टीस भी साथ चल रही थी। मैं देखती थी कि सहेलियों की राहें आसान थीं। उन्हें साधन मिले, उनकी डिग्रियाँ पूरी हुईं, और विवाह से पहले ही वे नौकरी पाकर अपनी इच्छा से जीवन जीने लगीं। मन के किसी कोने में यह कसक उठती थी कि काश, पापा के पास भी सामर्थ्य होता और इसी कसक



के साथ मेरे शब्द धीरे-धीरे घटते गए, पहले पापा से, फिर सबसे।

सच तो यह था कि मैंने पापा को कभी दोषी नहीं ठहराया। मैं जानती थी कि उनकी जेब ख़ाली है, उनका मन नहीं। उनकी हर ज़रूरत समय पर पूरी करती रही, उनकी हर बात का ध्यान रखती रही। बस संवाद का सेतु टूट गया था। किसी से शिकायत नहीं की, किसी के सामने आँख नहीं छलकाई, जबकि भीतर आँसुओं का सागर उमड़ता रहा। मैंने मन को शांत रखा और शिकायतों की जगह स्वयं को अनुशासन की डोर से बाँध लिया। इस मौन में भी पापा और मेरा स्नेह कभी कम नहीं हुआ, बल्कि और गहरा होता गया। शब्द नहीं थे, पर रिश्ता था। पापा को लगता था कि वे अपनी बेटी के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं। मेरी चुप्पी उन्हें भीतर तक चुभती थी, वे परेशान रहते थे, पर असहाय थे। एक पिता की इससे बड़ी पीड़ा क्या होगी कि बेटी का सपना सामने हो और हाथ बँधे हों।

उसी मौन के गर्भ में एक ज़िद पल रही थीः यह डिग्री मैं लेकर ही रहूँगी, चाहे कुछ भी करना पड़े। और फिर दिन-रात का तप शुरू हुआ।

वह दिन मुझे आज भी याद है। घड़ी में पाँच बजने में बस पाँच मिनट बाकी थे। तभी एक नाम पुकारा गया, और खिड़की पर खड़े पापा फूट-फूटकर रो पड़े। उनके आँसुओं में मुझे उनकी कोई ग़लती नहीं दिखी। वे बस असहाय थे। और ऐसी घड़ी में ईश्वर के सिवा कोई साथ नहीं दे सकता, यह उसी क्षण मैंने जाना। मैंने ईश्वर से भी क्षमा माँगी और पापा से भी, अपने उस लंबे मौन के लिए, और मन ही मन दोनों का हृदय से आभार माना।

"जिसमें रंग है, उसमें रम जाओ", यह वाक्य मेरे जीवन का सूत्र बन गया। मैं जिस काम में रमी, उसे पाकर ही लौटी। पर मैंने यह भी जाना कि रमना जितना आवश्यक है, हँसना उससे कम नहीं। जब मन हँसी-ख़ुशी से किसी काम में लगता है, तो वह बोझ नहीं रहता और समय का पता ही नहीं चलता।

इस यात्रा ने मुझे एक सीख भी दी, जो किसी डिग्री से बड़ी है। आत्मनिर्भरता किसी भी लड़की की सबसे सच्ची पूँजी है। विवाह के बाद परिवार में उसका मूल्य उसके अपने पैरों पर खड़े होने से बनता है। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि घर की ज़िम्मेदारियों को अनदेखा करके कोई ऊँचाई स्थायी नहीं होती। बाहर की दुनिया और भीतर का आँगन, दोनों को एक साथ साधना ही सच्ची समझदारी है, और सम्मान भी वहीं बढ़ता है जहाँ यह संतुलन दिखता है। यह मैंने केवल सुना नहीं, जिया है।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो समझ आता है कि वह मौन मेरी कमज़ोरी नहीं था। वह मेरी तैयारी थी।

और हाँ, उस दिन खिड़की पर जो नाम पुकारा गया था, वह मेरा अपना था। वर्षों की चुप्पी, प्रतीक्षा और तपस्या का उत्तर एक पंक्ति में मिल गया था, और तब जाकर मैंने जाना कि मौन की उस मुट्ठी में क्या बंद था।

सरकारी महाविद्यालय में मेरा बी. एड. में प्रवेश हो गया था।



माधुरी सिंह
सहायक प्राध्यापक हिन्दी-विभाग साठे महाविद्यालय, विले पार्ले

(लघुकथा)

परिस्थिति

सैल गाँव के जाने-माने नाथू सेठ के घर मृत्यु हो गई। उनका पूरा परिवार शोक में डूबा था। पूरे गाँव में खबर फैल गई थी कि नाथू सेठ के घर में किसी की मृत्यु हो गई। एक ओर नाथू सेठ का घर था, जहाँ मृत्यु के शोक में पूरा परिवार दुःखी था और सभी की आँखों से आँसू बह रहे थे। वहीं दूसरी ओर उसी गाँव में एक झोपड़ी जो चपके हुए टिनों से बनी हुई थी। कहीं-कहीं टिनों में सूराख भी हो गये थे, जिसे काले डामर से भरा गया था। उस झोपड़ी में सुखराम का परिवार रहता था। जिसके घर में सुख का एक दिन भी नसीब नहीं होता था लेकिन आज उसके घर में दबी-दबी खुशियाँ उभर रही थी। मुस्कराहट को कितना भी छुपाने का प्रयास रहे थे , फिर भी चेहरे की चमक में खुशी साफ़ झलक रही थी। सुखराम उसकी पत्नी मंगला, 3 बेटियाँ नीला, शीला और सरला के साथ-साथ सबसे छोटा बेटा बालू जो कि 6 साल का था, खुश नज़र आ रहा था। उनके खुशी का कारण वही था जो गाँव के नाथू सेठ के परिवार के दुःख का कारण था...मृत्यु।

यह गाँव आकार में छोटा और आर्थिक रूप से बेहद पिछड़ा हुआ था। यहाँ लोगों को दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से नसीब होती थी। दो-दो दिन फांके करने पड़ते या किसी के घर से कोई सूखी रोटी मिल जाए तो उसको नमक-पानी में चुरमा बना कर उससे पेट भरकर काम चला लेते थे। गाँव में कुछ लोग थे जो तीन वक्त के भोजन के साथ-साथ अच्छा पहन और कमा भी लेते थे। उन्हें गाँव के लोग सेठ जी कहते थे। नाथू सेठ भी उनमें



से एक था। उनके यहाँ कोई भी कार्यक्रम होता था, तो बचा-कुचा भोजन गरीबों में बाँट दिया जाता था। आज मृत्यु के सोग में जो भोजन बनेगा वह भी इन गरीबों में बँटेगा और यह सोच कर सुखराम का पूरा परिवार खुश था कि आज न केवल भोजन मिलेगा बल्कि स्वादिष्ट भोजन मिलेगा।



रेश्मा शेख, सीबीडी बेलापुर

पंचतंत्र की कहानियां — अंधा गिद्ध

एक पेड़ पर बहुत सारी चिड़ियाँ रहती थी। एक दिन उसी पेड़ पर एक खोह में रहने के लिए एक अंधा गिद्ध आ गया। सभी चिड़ियों ने उसका स्वागत किया। गिद्ध बूढ़ा भी था, इसलिए सभी पक्षियों ने तय किया वे अपने-अपने भोजन में से उसे भी दे दिया करेंगे। बदले में अंधे गिद्ध ने तय किया कि वह उन सब पक्षियों के बच्चों की देखभाल किया करेगा। एक दिन, एक बिल्ली उसी पेड़ के पास से गुजरी। खुशी से चहचहाते हुए नन्हें चूजों की आवाज़ बिल्ली को सुनाई दी। जब चूजों की नज़र बिल्ली पर पड़ी तो ये डर के मारे चिल्लाने लगे। अंधा गिद्ध तुरंत जोर से चिल्लाया, ₹कौन है?₹ चालाक बिल्ली समझ गई कि पक्षियों के इन नन्हें-नन्हें बच्चों को वह तभी खा पाएगी, जब वह गिद्ध से दोस्ती कर ले। बिल्ली गिद्ध से बोली, ₹मैंने नदी किनारे आने वाले सभी पक्षियों से आपकी बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा सुनी है। आपकी प्रशंसा सुनकर ही मैं आपसे मिलने आई हूँ, भैया।₹ अपनी प्रशंसा सुनकर गिद्ध बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पूछा, ₹अच्छा! वैसे तुम हो कौन?₹ बिल्ली बोली, ₹मैं बिल्ली हूँ।₹ गिद्ध यह सुनकर जोर से चिल्लाया, ₹यहाँ से तुरंत भाग जाओ, वरना मैं तुम्हें खा जाऊँगा।₹ चालाक बिल्ली ने एक और चाल सोची। ₹मैं नदी के पार रहती हूँ। मैं माँस भी नहीं खाती। मैं आपको कर दिन नदी में स्नान कराने ले जाया करूँगी, वह बोली। ₹और वैसे भी मुझे नहीं लगता कि आप इतने समझदार होकर भी अपने एक मेहमान को खाएँगे।₹ बूढ़े गिद्ध ने जवाब दिया, ₹मैं तुम्हारा भरोसा कैसे करूँ, तुम तो पक्षियों को खा जाती हो!₹ ₹अरे नही, भैया!₹ बिल्ली बोली। ₹जो दूसरों को मारते हैं, उनको तो भगवान दंड देता है। जब जंगल में इतने स्वादिष्ट फल-फूल मौजूद हैं तो मैं अपना पेट भरने के लिए किसी को क्यों मारूँगी ? गिद्ध उसकी बातों में आ गया और उसने पेड़ की उसी खोह में उसे अपने साथ रहने की अनुमति दे दी। अब बिल्ली हर दिन एक चूजे को खा जाती और अंधे गिद्ध को पता तक नहीं चलता। जल्दी ही पक्षियों को महसूस हुआ कि उनके कुछ बच्चे कम हो रहे हैं! उन्होंने अपने बच्चों की तलाश करना शुरू कर दिया। जैसे ही बिल्ली को यह बात पता चली, वह पेड़ से निकलकर जंगल में भाग गई। अब बड़े पक्षी बूढ़े गिद्ध के पास अपने बच्चों के बारे में पूछने आए। गिद्ध सो रहा था। पक्षियों ने उसकी खोह में इधर-उधर देखा, तो वो हैरान रह गए ! वहाँ पर हड्डियों का ढेर लगा था! बिल्ली पक्षियों के बच्चों को खा जाती थी, और उनकी हड्डियाँ गिद्ध की खोह में छोड़ देती थी। सभी पक्षी गिद्ध के ऊपर बहुत गुस्सा हुए। उन्हें लगा कि गिद्ध ने उनके साथ विश्वासघात किया है और उन्हें मूर्ख बनाया है। उन्हें लगा कि गिद्ध ने ही उनके बच्चों को खा लिया है! वे जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगे और सबने मिलकर सोते हुए गिद्ध पर हमला कर दिया। बेचारे गिद्ध को समझ ही नहीं आया कि ये पक्षी क्यों उस पर टूट पड़े हैं और क्यों इतनी बेरहमी से उसे नोच रहे हैं। अंत में, सबने उसे बाहर निकाल दिया। अब उसके पास न कोई घर या और न कोई साथी।



पौराणिक कथा

दुर्योधन की चाल से भीम को मिला हजारों हाथियों का बल

द्वापर युग में पांडवों और कौरवों के बीच एक भीषण युद्ध लड़ा गया था, जिसे हम सभी महाभारत युद्ध के नाम से जानते हैं। पांच पांडवों में से एक भीम को लेकर यह कहा जाता है कि उनमें 10 हजार हाथियों का बल था, लेकिन क्या आप जानते हैं कि उन्हें यह बल कैसे मिला। अगर नहीं, तो चलिए जानते हैं इसके बारे में।



दुश्मनी का भाव रखता था दुर्योधन

■ महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार, दुर्योधन भीम से बचपन में ही बहुत ईर्ष्या करता था, क्योंकि भीम सभी खेलों में कौरवों को हरा देते थे। जब दुर्योधन ने सभी पांडवों समेत भीम को गंगा तट पर खेलने के लिए बुलाय। दुश्मनी की भावना के चलते दुर्योधन ने भीम के खाने में जहर मिला दिया, जिस कारण भीम अचेत हो गए। मौका पाकर दुर्योधन ने अपने भाई दुःशासन के साथ मिलकर भीम को गंगा में फेंक दिया।

जहर का असर हुआ कम

■ भीम अचेत अवस्था में ही नदी के द्वारा नागलोक पहुंच गए। जब भीम को होश आया, तो उन्होंने पाया कि वह भयंकर सांपों से घिरे हुए हैं। सांपों के काटने के कारण भीम के शरीर से जहर का असर कम हो गया था। उन्होंने सांपों को मारना शुरू कर दिया, जिससे डरकर सभी सांप नागराज वासुकी के पास गए और उन्हें पूरी बात बताई। तब नागराज वासुकि, आर्यक नाग के साथ भीम के पास पहुंचे।

आर्यक नाग के कारण मिला बल

■ तब आर्यक नाग भीम को पहचान गए और उनसे नागलोक आने की वजह पूछी। तब भीम ने उन्हें सारी बात बताई, जिसके बाद उन्होंने भीम को कुंडों का रस पिलाया था, जिसमें 10 हजार हाथियों का बल था। जब भीम वापस लौटा तो दुर्योधन को बहुत ही आश्चर्य हुआ। पांडव भी भीम को वापस आते हुए देखकर काफी खुश थे और यह महसूस कर सकते थे कि भीम अब पहले से अधिक बलवान नजर आ रहे हैं। सभी अचरज में पड़ गए कि यह चमत्कार कैसे हुआ।

हर भारतीय जानें कानून और अधिकार



भारतीय न्याय व्यवस्था ने अपने नागरिकों को बहुत ज़्यादा शक्ति दी है। दुख की बात है कि हर कोई इस शक्ति से वाकिफ़ नहीं है। एक भारतीय नागरिक के तौर पर आपके लिए उन अधिकारों और कानूनों को समझना बहुत ज़रूरी है जो आप पर लागू होते हैं। आइए बुनियादी मौलिक अधिकारों से शुरुआत करें और उसके बाद अन्य महत्वपूर्ण अधिकारों पर चर्चा करें।

1. सूचना का अधिकार, अनुच्छेद 19 (1)(ए)

भारतीय संसद द्वारा पारित एक कानून जिसे सूचना का अधिकार (आरटीआई) के नाम से जाना जाता है, सूचना के अधिकार को सभी भारतीय लोगों के लिए एक बुनियादी अधिकार के रूप में स्थापित करता है। संसद ने 15 जून, 2005 को इस सूचना के अधिकार को पारित किया और यह आधिकारिक तौर पर 12 अक्टूबर, 2005 को प्रभावी हुआ।

2. समानता का अधिकार, अनुच्छेद 14

भारतीय संविधान का समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14) भारतीय क्षेत्र में कानून के समक्ष समानता की गारंटी देता है। भारत की धरती पर रहने वाला हर व्यक्ति, जिसमें कॉर्पोरेट और विदेशी लोग और भारत के नागरिक शामिल हैं, इस कानून के अधीन हैं। अनुच्छेद 14 के तहत वर्गीकरण की अनुमति तब तक है जब तक यह उचित है, लेकिन वर्ग विधान की अनुमति नहीं है।

3. शिक्षा का अधिकार, अनुच्छेद 21 (ए)

4 अगस्त 2009 को भारतीय संसद ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(a) के अनुसार, यह कानून भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के महत्व की बारीकियों को रेखांकित करता है। 6 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है तथा आरटीई प्राथमिक संस्थानों के लिए न्यूनतम मानक स्थापित करता है। इस नियम के अनुसार, सभी निजी स्कूलों को अपने छात्रों के लिए 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित करनी होंगी (जिसकी प्रतिपूर्ति सार्वजनिक-निजी भागीदारी योजना के भाग के रूप में राज्य द्वारा की जाएगी।

4. जीवन का अधिकार, अनुच्छेद 21

अनुच्छेद 21 के अनुसार, किसी को भी, यहां तक कि सरकार को भी, आपकी जान लेने का अधिकार नहीं है। आपकी सुरक्षा के लिए कानून पारित करने के तहत, सरकार को इस कानून के तहत जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता होती है।

5. एफआईआर दर्ज करने का अधिकार

भारतीय दंड संहिता 166 ए के अनुसार, एक पुलिस अधिकारी को एफआईआर दर्ज करने से इनकार करने की अनुमति नहीं है। एक पुलिस अधिकारी जो संज्ञेय उल्लंघन के लिए एफआईआर दर्ज करने से इनकार करता है, वह भारतीय दंड संहिता की धारा 166 ए (सी) के तहत दंड के अधीन है, यदि वे भारतीय नागरिक हैं। सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, इन परिस्थितियों में पुलिस अधिकारी 'अभियोजन और सजा के लिए जिम्मेदार होगा।'

6. रिफ़ंड का दावा करने का अधिकार

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत प्रत्येक उपभोक्ता को पूर्ण धन वापसी का अधिकार है, यदि वह अपनी खरीद से असंतुष्ट है या जिन सेवाओं के लिए उसने भुगतान किया है, उनका उपयोग करने में असमर्थ है। सच तो यह है कि बिलों और चालानों पर 'कोई विनिमय या वापसी नहीं' छापना कानून के विरुद्ध है तथा यह अनुचित व्यावसायिक आचरण है। अगर कंपनी आपका पैसा वापस नहीं करती है तो आप कानूनी नोटिस जारी कर सकते हैं।

7. माता-पिता का भरण-पोषण पाने का अधिकार

माता-पिता (पिता या माता, चाहे जैविक, दत्तक, या सौतेले पिता या सौतेली माँ, चाहे वरिष्ठ नागरिक हों या नहीं) को सीआरपीसी की धारा 125 के तहत अपने वयस्क बच्चों से सहायता मांगने का अधिकार है। यदि आपके अधिकारों का उल्लंघन हो तो अदालत के सामने पर्याप्त सबूत पेश करें कि आपके बच्चे, जो आपका भरण-पोषण करने में सक्षम हैं, ने ऐसा नहीं किया है।

8. समान कार्य के लिए समान वेतन का अधिकार

समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 के अनुसार समान रूप से कठिन परिश्रम के लिए समान वेतन की आवश्यकता होती है। यदि दो या अधिक लोग समान परिस्थितियों में समान कार्य करते हैं तो उन्हें समान मुआवजा मिलना चाहिए। जब कोई नियोक्ता इन नियमों का उल्लंघन करता है, तो कर्मचारियों को संबंधित श्रम अधिकारियों के पास शिकायत दर्ज कराने का अधिकार है। मामले की योग्यता की पुष्टि करने के बाद, संबंधित श्रम प्राधिकरण जांच शुरू कर सकता है।

9. गिरफ्तार होने पर महिला के अधिकार

आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 46 के अनुसार, सूर्योदय से पहले या सूर्यास्त के बाद (शाम 6 बजे के बाद और सुबह 6 बजे से पहले) किसी भी महिला को हिरासत में नहीं लिया जा सकता। इसके अतिरिक्त, किसी पुरुष पुलिस अधिकारी को कभी भी किसी महिला को गिरफ्तार करने की अनुमति नहीं है।

10. पुलिस नहीं छीन सकती चाबी

कोई पुलिस अधिकारी आपके वाहन की चाबी छीन ले तो मोटर वाहन अधिनियम 1988 के अनुसार, आपके पास उस यातायात पुलिस अधिकारी के खिलाफ मुकदमा दायर करने का अधिकार है। तब स्थिति की तस्वीरें लें और यदि अधिकारी बिना कारण आपकी कार की चाबी छीन ले तो उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराएं।

11. मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961

मातृत्व लाभ अधिनियम 1961 के अनुसार, गर्भवती महिला को निगम द्वारा नौकरी से नहीं निकाला जा सकता। सजा के तौर पर अधिकतम तीन साल की जेल हो सकती है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के कर्मचारी इस नियम के अधीन हैं।

12. चेक बाउंस के विरुद्ध अधिकार

1881 के परक्राम्य लिखत अधिनियम की धारा 138 के अनुसार, चेक बाउंस होना एक उल्लंघन है जिसके लिए चेक की राशि का दोगुना जुर्माना, दो वर्ष तक की जेल या दोनों सजाएं हो सकती हैं। अगर आपको चेक बाउंस हो जाता है, तो आपको तुरंत किसी वकील से संपर्क करना चाहिए और जिम्मेदार पक्ष को कानूनी नोटिस देना चाहिए।

13. निःशुल्क कानूनी सहायता का अधिकार

सरकार ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39-ए के अनुसार यह कानून पारित किया है, ताकि ऐसे किसी भी व्यक्ति को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान की जा सके जो वकील रखने में सक्षम नहीं है।

14. हिंदू विवाह अधिनियम, धारा 13

हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के अनुसार, पति या पत्नी में से कोई भी व्यभिचार (विवाह के बाहर शारीरिक संबंध), शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न, नपुंसकता, अकेले घर से बाहर जाना, हिंदू रहते हुए दूसरा धर्म अपनाना, पागलपन, लाइलाज बीमारी या सात वर्षों तक जीवनसाथी के बारे में जानकारी न देने के आधार पर अदालत में तलाक की याचिका दायर कर सकता है।

15. आयकर अधिनियम, 1961

यदि आप कर कानूनों का उल्लंघन करते हैं, तो कर संग्रह अधिकारी के पास आपको गिरफ्तार करने का अधिकार है, लेकिन पहले उन्हें आपको नोटिस भेजना होगा। कर आयुक्त ही तय करता है कि आपको कितने समय तक हिरासत में रखा जाएगा। बहुत कम लोग जानते हैं कि अगर खाना बनाते समय गैस सिलेंडर फट जाता है तो गैस कंपनी पीड़ित को 50 लाख रुपए का मुआवजा देने के लिए जिम्मेदार है।

16. अधिकतम खुदरा मूल्य अधिनियम, 2014

किसी भी दुकानदार को किसी भी वस्तु के विज्ञापित मूल्य से अधिक वसूलने की अनुमति नहीं है, लेकिन ग्राहक कम कीमत के लिए मोलभाव करने के लिए स्वतंत्र हैं। यदि आप अपने क्षेत्र के शीर्ष वकीलों से कानूनी प्रश्नों या सहायता से जुड़ना चाहते हैं, तो रेस्ट द केस पर हमसे जुड़ें और बस एक क्लिक में अपनी सभी समस्याओं का समाधान पाएं।

निवेश करने से पहले जान लें ये चार बातें



हर कोई चाहता है कि वो अपनी कमाई का एक हिस्सा निवेश करे। इसके लिए लोग काफी कुछ करते भी हैं। वहीं, निवेश कितना जरूरी है ये कोरोना काल से लोगों ने काफी सीखा। लोग निवेश इसलिए करते हैं ताकि वो इस पैसे को अपनी जरूरत पर इस्तेमाल कर सके। इसके लिए कई लोग तो बैंक में अपनी कमाई को जमा कराते हैं, ताकि उस पर ब्याज मिल सके। लेकिन ज्यादातर लोग इसके साथ ही कई अन्य स्कीम में भी पैसे निवेश करते हैं, ताकि वो एक बेहतर रिटर्न पा सके। लेकिन कई मर्तबा देखा जाता है कि लोग बिना सोचे समझे और दूसरों की बातों में आकर कहीं ऐसी जगह पर पैसे लगा देते हैं। जहां उन्हें नुकसान उठाना पड़ जाता है। इसलिए जरूरी है कि निवेश करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखा जाए, ताकि आपका पैसा डूबे नहीं और आपको अच्छा रिटर्न भी मिल सके। तो चलिए हम आपको बताते हैं...

पुराने लोन निपटा लें

अगर आपके पास पैसे आए हैं, और आप उन्हें कहीं निवेश करने जा रहे हैं तो आपको ये ध्यान देना है कि पहले अपने पुराने कर्जों को चुका लें। आपने चाहे किसी भी चीज के लिए कर्ज लिया है, तो उसे भरकर खत्म करें ताकि आप अपने निवेश पर ध्यान दे सकें और बीच में किसी तरह की दिक्कतें न हों।

समय का ध्यान रखें

निवेश करते समय ये जानना जरूरी है कि आप पैसे कितने समय के लिए निवेश कर रहे हैं। ध्यान रखें कि आपने जहां पैसे लगाएं हैं, वहां का लॉक इन पीरियड कितना है। ऐसा इसलिए क्योंकि कई स्कीम में आप बीच में पैसा नहीं निकाल सकते हैं। इसलिए समय का ध्यान देना जरूरी है।

तुलना करना जरूरी

निवेश करते समय एक ही जगह जाने से बचना चाहिए। इसके लिए आपको पहले निवेश के सभी विकल्पों की तुलना करनी चाहिए। कौन सी स्कीम के क्या फायदे हैं, किसके क्या नुकसान है, किस में निवेश करना सुरक्षित है आदि। इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

रिटर्न कितना

निवेश करते समय तो हम काफी पैसे लगा देते हैं, लेकिन एक अच्छा निवेशक हमेशा ये देखता है कि रिटर्न कितना मिलेगा। आपको ये जानना चाहिए कि आप कितने पैसे को लगा रहे हैं, और बदले में आपको कितने समय में कितना रिटर्न मिल रहा है। अगर रिटर्न अच्छा है, तभी निवेश करने के लिए आगे बढ़ें।

आईआईटी कानपुर की खोज

मिनटों में रुकेगा इंसुलिन स्राव

मधुमेह के विकसित होने की प्रक्रिया को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (आईआईटी कानपुर) के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि अग्न्याशय (पैंक्रियास) में मौजूद प्रतिरक्षा कोशिकाएं कुछ ही मिनटों में इंसुलिन के स्राव को रोक सकती हैं। शोधकर्ताओं ने उस आणविक तंत्र (मॉलिक्यूलर स्विच) की भी पहचान की है, जिसके माध्यम से ये कोशिकाएं इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं की गतिविधि को नियंत्रित करती हैं। यह शोध प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय बायोमेडिकल जर्नल जर्नल ऑफ क्लीनिकल इंवेस्टीगेशन में प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन का नेतृत्व आईआईटी कानपुर के जैविक विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग के डॉ. साई प्रसाद पायडी के मार्गदर्शन में सिमरन सिंह और आशीष कुमार ने संयुक्त रूप से किया। दोनों इस शोध के सह-प्रथम लेखक हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी पुष्टि की है कि यह जैविक प्रक्रिया मानव अग्न्याशय के ऊतकों में भी सक्रिय रूप से मौजूद है। यह खोज मोटापे और टाइप-2 मधुमेह से प्रभावित लोगों में इंसुलिन उत्पादन को सुरक्षित रखने के लिए भविष्य में नई दवाओं के विकास की संभावनाएं खोलती है।



मधुमेह अनुसंधान को मिली नई दिशा

कोशिकाओं के संकेतों के आदान-प्रदान का खुलासा

मानव अग्न्याशय में कई प्रकार की कोशिकाएं होती हैं, जिनमें इंसुलिन बनाने वाली बीटा कोशिकाएं और मैक्रोफेज नामक प्रतिरक्षा कोशिकाएं शामिल हैं। बीटा कोशिकाएं इंसुलिन का स्राव करके रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करती हैं, जबकि मैक्रोफेज ऊतकों के स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन में पहली बार यह स्पष्ट किया गया है कि मैक्रोफेज आसपास मौजूद बीटा कोशिकाओं के साथ सीधे संवाद करके इंसुलिन के स्राव को नियंत्रित कर सकते हैं।

इंसुलिन स्राव रोकने वाले नए जैविक तंत्र की खोज

डॉ. साई प्रसाद पायडी, सहायक प्रोफेसर, जैविक विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी कानपुर ने बताया, "हमने पाया कि बीटा कोशिकाओं के आसपास मौजूद प्रतिरक्षा कोशिकाएं कुछ ही मिनटों में इंसुलिन का स्राव रोक सकती हैं। इसके लिए वे सूजन से जुड़े उन पारंपरिक संकेतों का इस्तेमाल नहीं करतीं, जिनका अध्ययन वैज्ञानिक पिछले कई दशकों से करते आ रहे हैं।" आगे उन्होंने बताया कि यह खोज इस बारे में हमारी मूलभूत समझ को बदलती है कि प्रतिरक्षा कोशिकाएं इंसुलिन उत्पादन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। यह प्रक्रिया सूजन के कारण होने वाली धीमी क्षति नहीं, बल्कि कुछ ही मिनटों में कोशिकाओं तक पहुंचने वाला एक सीधा जैविक संदेश है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अग्न्याशय के ऊतकों में भी इसकी पुष्टि हुई है। इससे स्पष्ट है कि यह केवल चूहों पर किया गया अवलोकन नहीं, बल्कि मानव शरीर में मौजूद एक वास्तविक जैविक तंत्र है।

स्फिंगोलिपिड्स इंसुलिन स्राव में डालते हैं अवरोध

इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने एक उन्नत आनुवंशिक तकनीक का उपयोग किया, जिसके माध्यम से प्रतिरक्षा कोशिकाओं के भीतर एक विशिष्ट सिग्नलिंग मार्ग को सक्रिय या निष्क्रिय किया जा सका। चूहों पर किए गए प्रयोगों में मैक्रोफेज के भीतर इस मार्ग को सक्रिय करने से इंसुलिन का स्राव तेजी से कम हो गया। इसके विपरीत, इसी मार्ग को निष्क्रिय करने पर इंसुलिन का स्राव बेहतर हुआ। शोध में यह भी सामने आया कि इस प्रक्रिया में सूजन पैदा करने वाले प्रोटीन के बजाय वसा अणु (लिपिड्स) महत्वपूर्ण संदेशवाहक की भूमिका निभाते हैं। इन वसा अणुओं को स्फिंगोलिपिड्स कहा जाता है। इस प्रक्रिया के सक्रिय होते ही मैक्रोफेज तेजी से इनका स्राव करते हैं। आसपास की बीटा कोशिकाएं अपनी सतह पर मौजूद एक विशेष ट्रांसपोर्टर के माध्यम से इन अणुओं को ग्रहण कर लेती हैं।

दिल्ली में बनेगा दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम



दिल्ली के सत्ता के गलियारे कहे जाने वाले नॉर्थ और साउथ ब्लॉक की सूरत अब बदलने वाली है। प्रधानमंत्री कार्यालय और महत्वपूर्ण मंत्रालयों की धुरी रहे ये ऐतिहासिक परिसर अब देश की विरासत के केंद्र बनेंगे। यहाँ युगे युगीन भारत संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है, जो न केवल भारत की प्राचीन सभ्यता को दर्शाएगा, बल्कि तकनीक और भव्यता का एक ऐसा संगम होगा जो दुनिया में सबसे अनूठा माना जा रहा है।

क्या है युगे युगीन प्रोजेक्ट?

- इस महत्वाकांक्षी संग्रहालय का उद्देश्य भारत की 5,000 साल से अधिक पुरानी सभ्यता, कला, ज्ञान और परंपराओं को एक मंच पर लाना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 18 मई 2023 को घोषित इस परियोजना को हाल ही में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने मंजूरी दी है। 3,230 करोड़ रुपये के बजट वाली इस परियोजना का जिम्मा संस्कृति मंत्रालय के पास है। यह संग्रहालय नई दिल्ली के नॉर्थ और साउथ ब्लॉक की इमारतों में विकसित किया जाएगा। इसके लिए 1,78,509 वर्ग मीटर का विशाल निर्मित क्षेत्र तय किया गया है। सरकार का दावा है कि प्रदर्शनी क्षेत्र के लिहाज से यह दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय होगा। खास बात यह है कि यहां पुरानी इमारतों की मूल बनावट को छेड़े बिना एडेप्टिव रीयूज तकनीक के जरिए इसे म्यूजियम में बदला जाएगा।

आकर्षण का केंद्र होंगी 18 लाख वस्तुएं

- यहाँ लगभग 30 गैलरियां बनाई जाएंगी। इसमें भारत के गौरवशाली इतिहास को दर्शाने के लिए 18 लाख वस्तुओं की पहचान की गई है, जिनमें राष्ट्रीय संग्रहालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दुर्लभ संग्रह भी शामिल हैं।
- **विषयः** वास्तुकला, गणित, खगोल विज्ञान, भाषा, लिपि, साहित्य, संगीत, नृत्य और आध्यात्मिकता।
- **आस्था और परंपराः** रामायण, महाभारत, वेदों के साथ-साथ बौद्ध, जैन और सिख धर्म के विकास को भी जगह दी जाएगी।
- **तकनीक का तड़काः** दर्शकों को केवल वस्तुएं ही नहीं दिखेंगी, बल्कि ऑगमेंटेड रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी के जरिए इतिहास जीवंत किया जाएगा।

विश्व विज्ञान दिवस

वैज्ञानिक सोच, नवाचार और अनुसंधान से संवरता भविष्य



मुंबई। विज्ञान मानव सभ्यता की प्रगति का आधार है, जिसने मनुष्य की सोच, जीवनशैली और दुनिया को देखने का नजरिया बदल दिया है। कभी कल्पना मानी जाने वाली सुविधाएं आज हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा हैं। चिकित्सा, कृषि, शिक्षा, संचार, परिवहन और अंतरिक्ष अनुसंधान से लेकर पर्यावरण संरक्षण तक विज्ञान ने विकास के नए रास्ते खोले हैं। मोबाइल, इंटरनेट, बिजली और आधुनिक तकनीक ने जीवन को आसान, सुविधाजनक और बेहतर बनाया है। वास्तव में, विज्ञान मनुष्य की जिज्ञासा, अनुभव और नई खोज की निरंतर कोशिश का परिणाम है। प्रतिवर्ष 10 नवंबर को मनाया जाने वाला शांति और विकास के लिए विश्व विज्ञान दिवस वैज्ञानिक सोच, अनुसंधान और नवाचार को मानव कल्याण से जोड़ने का संदेश देता है। इसकी सफलता केवल नई खोजों में नहीं, बल्कि उनके लाभ को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में है। जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा की कमी और तकनीकी असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों के दौर में विज्ञान सामाजिक बदलाव, समान अवसर, शांति और सतत विकास का महत्वपूर्ण आधार बन गया है।

विश्व विज्ञान दिवस की शुरुआत और 2026 की थीम

- विश्व विज्ञान दिवस की स्थापना यूनेस्को ने वर्ष 2001 में की थी। इसकी पृष्ठभूमि वर्ष 1999 में हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में आयोजित विश्व विज्ञान सम्मेलन से जुड़ी है, जिसमें विज्ञान और समाज के बीच बेहतर संबंध तथा मानव कल्याण, शांति और सतत विकास के लिए वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग पर जोर दिया गया। पहली बार 10 नवंबर 2002 को यह दिवस मनाया गया। वर्ष 2026 की थीम 'विज्ञान कूटनीति के माध्यम से साझा आधार' (COMMON GROUND THROUGH SCIENCE DIPLOMACY) है। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक सहयोग से देशों के बीच संवाद, विश्वास और साझेदारी बढ़ाना है। जलवायु परिवर्तन, महामारियों, खाद्य सुरक्षा, समुद्री संसाधनों और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए आंकड़ों, अनुसंधान और तकनीक का आदान-प्रदान जरूरी है। मौसम संबंधी जानकारी साझा करना, बीमारियों के उपचार पर संयुक्त शोध और नई तकनीकों का विकास इसके उदाहरण हैं।

मानव जीवन और समाज में विज्ञान का योगदान

- विज्ञान का प्रत्यक्ष प्रभाव स्वास्थ्य, संचार, शिक्षा और परिवहन में दिखाई देता है। चिकित्सा क्षेत्र में एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, एमआरआई, सीटी स्कैन, टीकाकरण, आधुनिक शल्य चिकित्सा और नई दवाओं ने रोगों की पहचान तथा उपचार को प्रभावी बनाया है। चेचक और पोलियो पर नियंत्रण तथा कोविड-19 महामारी के दौरान कम समय में टीकों का विकास वैज्ञानिक अनुसंधान की क्षमता दर्शाते हैं। जीनोम अनुक्रमण और जैव प्रौद्योगिकी ने आनुवंशिक रोगों के अध्ययन और लक्षित उपचार की नई संभावनाएं खोली हैं। टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं से दूरदराज के लोगों को विशेषज्ञ चिकित्सकीय सलाह मिलना आसान हुआ है। मोबाइल, इंटरनेट, ऑप्टिकल फाइबर, 5जी और उपग्रह संचार ने दुनिया को जोड़ा है। डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन बैंकिंग और सरकारी सेवाओं के डिजिटलीकरण से कामकाज सरल हुआ है। इंटरनेट ने शिक्षा और ज्ञान की पहुंच बढ़ाई है। अब गांवों के विद्यार्थी भी प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों की अध्ययन सामग्री आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

- विज्ञान का वास्तविक लाभ तभी समाज तक पहुंचेगा, जब लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा। इसके लिए अंधविश्वास और सुनी-सुनाई बातों के बजाय तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर भरोसा करना जरूरी है। विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा को किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर प्रयोग, अवलोकन और सवाल पूछने की प्रवृत्ति बढ़ानी चाहिए। अटल टिंकरिंग लैब, इंस्पायर-मानक, विज्ञान मेले और राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस बच्चों में रचनात्मकता एवं नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद और सीएसआईआर-जिज्ञासा भी वैज्ञानिक चेतना बढ़ाते हैं।

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

- विज्ञान ने पर्यावरण संरक्षण के नए रास्ते खोले हैं। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता का नुकसान और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन वैश्विक चुनौतियां हैं। मौसम विज्ञान और उपग्रह तकनीक से प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी तथा समय रहते चेतावनी देना संभव हुआ है। सौर, पवन, जलविद्युत और हरित हाइड्रोजन जैसी तकनीकें जीवाश्म ईंधन के विकल्प उपलब्ध करा रही हैं। जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन, कचरा प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण में भी विज्ञान उपयोगी है। वास्तविक विकास वही है, जिसमें संसाधनों का संतुलित उपयोग हो और भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, पानी व सुरक्षित पर्यावरण बचे। इसी उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र ने 2024 से 2033 तक को सतत विकास के लिए विज्ञान का अंतरराष्ट्रीय दशक घोषित किया है।

कृषि और खाद्य सुरक्षा में विज्ञान की भूमिका

- भारत जैसे कृषि प्रधान देश में विज्ञान का योगदान महत्वपूर्ण है। हरित क्रांति ने उन्नत बीज, सिंचाई, उर्वरक और कृषि तकनीकों से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाया। मृदा परीक्षण, ड्रोन, सेंसर आधारित सिंचाई, मौसम पूर्वानुमान, उपग्रह चित्रों और कृषि यंत्रीकरण से खेती प्रभावी हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित बारिश, सूखा, बाढ़ और बढ़ते तापमान खेती को प्रभावित कर रहे हैं। कम पानी में तैयार होने वाली फसलें, जलवायु अनुकूल बीज और सूक्ष्म सिंचाई उपयोगी हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार, पिछले एक दशक में 203 से अधिक जैव-सुदृढ़ीकृत फसल किस्में विकसित कर जारी की गई हैं। इनमें अनाज, दालें, तिलहन, फल और सब्जियां शामिल हैं। इनका उद्देश्य फसलों का पोषण स्तर सुधारना है। खाद्य प्रसंस्करण और कोल्ड चेन तकनीक फसल की बर्बादी घटाने में मदद करती हैं। वर्ष 2026 में शुरू राष्ट्रीय मिशन 'सेहत' कृषि और स्वास्थ्य अनुसंधान को जोड़कर पोषण संबंधी समस्याओं के समाधान की पहल है।

भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां और तकनीकी आत्मनिर्भरता

- भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। इसरो के चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग ने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के निकट उतरने वाला पहला देश बनाया। अंतरिक्ष विज्ञान मौसम पूर्वानुमान, चक्रवात चेतावनी, आपदा प्रबंधन, संचार, प्राकृतिक संसाधनों की निगरानी और नौवहन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत की नाविक (NAVIC) प्रणाली इसका उदाहरण है, जबकि गगनयान जैसे आगामी मिशन देश की क्षमताओं को और बढ़ाएंगे। परमाणु ऊर्जा, रक्षा अनुसंधान, जैव प्रौद्योगिकी, सेमीकंडक्टर, रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्वांटम तकनीक में भी भारत आगे बढ़ रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की अनुसंधान एवं विकास सांख्यिकी रिपोर्ट 2025-26 के अनुसार, अनुसंधान एवं विकास पर खर्च 2019-20 के 1,32,567 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023-24 में 2,44,767 करोड़ रुपये हो गया, जो जीडीपी का 0.84 प्रतिशत था। भारत वैज्ञानिक प्रकाशनों में तीसरे और पेटेंट दाखिल करने में छठे स्थान पर है। वैश्विक नवाचार सूचकांक में इसकी रैंकिंग 2015 के 81वें स्थान से सुधरकर 2025 में 38वें स्थान पर पहुंची। हालांकि, अनुसंधान निवेश, निजी क्षेत्र की भागीदारी और प्रयोगशालाओं की तकनीक आम लोगों तक पहुंचाने पर और जोर देना जरूरी है।

अर्थव्यवस्था, रोजगार और विज्ञान की नैतिक जिम्मेदारी

- विज्ञान और तकनीक आर्थिक विकास तथा रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। उद्योगों में स्वचालन, रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पादन क्षमता बढ़ रही है। जैव प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, इलेक्ट्रॉनिक्स, चिकित्सा उपकरण और नवीकरणीय ऊर्जा में नए स्टार्टअप उभर रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में 2.40 लाख से अधिक डीपीआईआईटी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं, जिनमें आधे से अधिक टियर-2 और टियर-3 शहरों से जुड़े हैं। इससे नवाचार का विस्तार महानगरों से आगे बढ़ने का संकेत मिलता है। बदलती तकनीक के बीच युवाओं को नए कौशल और प्रशिक्षण देना जरूरी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग और जीन संपादन के साथ डेटा सुरक्षा, साइबर अपराध, डीपफेक, गलत सूचनाओं, रोजगार और दुरुपयोग की चुनौतियां भी हैं। इनके समाधान के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही, नैतिक मानदंड और प्रभावी नीतियां जरूरी हैं।

विज्ञान मानवता के बेहतर भविष्य का आधार

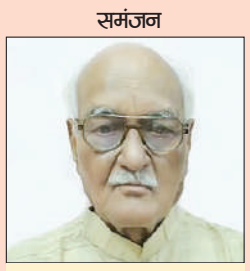
- विश्व विज्ञान दिवस हमें याद दिलाता है कि विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य केवल नई खोज करना या तकनीकी उपलब्धियां हासिल करना नहीं, बल्कि मानव जीवन को बेहतर बनाना है। विज्ञान तभी सार्थक होगा, जब इसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएं बेहतर हों, गरीबी और असमानता कम हो तथा पर्यावरण सुरक्षित रहे। इसके लिए सरकार, वैज्ञानिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों, उद्योगों, मीडिया और आम नागरिकों के बीच सहयोग जरूरी है। बच्चों में जिज्ञासा, युवाओं में नवाचार और समाज में प्रमाण आधारित सोच विकसित करनी होगी। विज्ञान को प्रयोगशालाओं की चारदीवारी से निकालकर जनजीवन से जोड़ना समय की जरूरत है। विज्ञान और मानवता का संबंध जितना मजबूत होगा, विकास की संभावनाएं उतनी ही व्यापक होंगी। यही विश्व विज्ञान दिवस का संदेश है और इसी में शांति, समृद्धि की उम्मीद छिपी है।

वाग्ज्योति टाइम्स

मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

ब्रह्मनन्दिनी

ब्रह्मनन्दिनी दो वर मुझको
सुन्दर छन्द बनाऊँ।।
शब्द-अर्थ हों पुष्प-गंध-से
छन्द-बन्ध मनभावन,
भावों का निरभ्र अरुणोदय
हो ताजगी सुहावन ।
पुष्ट कल्पना के पंखों पर
उड़ूं स्वर्ग तक जाऊँ,
अमृत मांग धरा पर लाऊँ
काव्या-अधर लगाऊँ।
भाषा का सौन्दर्य निखारूँ
कला-कीर्ति-गुण गाऊँ।।
हृदय-सिन्धु में उठें तरंगें
उठ-उठ कर लहरायें,
लोग छन्द आनन्द-मग्न हो
उचित स्वरों में गायें।
हो शिवत्व-सौंदर्य अलंकृत
हर-पद मंगलकारी,
जीवन का सन्देश मुखर हो
संकेतों में भारी।
देश-प्रान्त की गौरवगाथा
गा-गा कर हरषाऊँ।
अन्धकार मिट जाय जगत का
छलके ज्योति निराली,
गाँव-गिराँव-नगर में फैले
ज्ञान-सूर्य की लाली।
ब्रह्मानन्द मिले रसिकों को
नवता मंगल गाये,
सुन्दर शब्द, अर्थ भी सुन्दर,
सुन्दर भाव सुहाये।
जन-जन के हित शब्द-समंजन



- डॉ. सुधाकर मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार

एक लड़का

हर दिन देखती उसे,
सिग्नल पर।
दुबला-पतला, साँवला लड़का,
हाफ पैंट, गंदे मटमैले कपड़ों में,
धूल से सने बिखरे बाल,
चेहरे पर मासूमियत।
भागता इधर-उधर गाड़ियों के पीछे,
हाथ में फटा कपड़ा लिये।
गाड़ी रगड़-रगड़ साफ करता,
काँच को भी चमकाता।
हरी बत्ती होते ही
पैसे के लिये गाड़ी के पीछे भागता।
बेबसी, दयनीय आवेश से देखता,
न माँ-बाप, न घर, न खाने का पता।
बस सिग्नल पर यूँ ही पल जाता।
बरसात, ठंड में क्या होता होगा,
क्या वर्तमान, क्या भविष्य है,
क्या सपने होंगे उसके?
कहाँ जाता होगा, कहाँ खाता होगा?
आज तक न समझ पाई उसका जीवन।।



— प्रभा लोढ़ा 'प्रज्ञा', वरिष्ठ कवयित्री

मांगल्य के दोहे

मैं क्यों काँपूँ मौत से? वह तो मेरे साथ।
वह मुट्ठी में बंद है, देखो मेरे हाथ।।
भर जाए मांगल्य से सुहृद! आपका गेह।
प्रिय प्रकाश के पर्व पर बरसे नेह अछेह।।
पुलकित हो समृद्धि से सुहृत्! पुनीत निकेत।
इस प्रकाश के पर्व का सुख लें स्वजन समेत।।
वायु वसंती ला रही नित सनेह की खेप।
वदन-नलिन में आज तक अटके नयन-द्विरेफ।।
छोटे हों अथवा बड़े सभी पदों पर आज,
प्रायः बैठे तुच्छ जन, नालायक निर्ब्याज।
आप समय की लहर में बनकर बहिए अंध।
अपनी मिट्टी का हमें तो चाहिए सुगंध।।
हँसकर उसने बहस की दी तीखी ललकार।
वादी-प्रतिवादी उभय ने खींची तलवार।।
जो प्रान्तों या देश की सरकारें थे आप।
आज द्वार पर पड़ रही आरोपों की थाप।।
माया सँग चहिए दया,नाद संग में बिन्दु।
सिद्धि साधना संग में यथा बूँद में सिन्धु।।
लालच की आँखें बड़ी,चिन्तन छोटा-क्षुद्र।
कोमलता को छोड़कर मन में होता रुद्र।।
बहुत मिटाने से कभी मिटता नहीं कलंक।
सहसविलोचन में छिपा देवराज का डंक।।
बन्दरगाहों पर नहीं है बन्दर की भीड़।
वह जलयानों का महा लम्बा-चौड़ा नीड़।।
गयी जवानी फिर नहीं आ सकती है यार।
अब तो मनने से रहा फागुन का त्योहार।।
कहाँ चूड़ियों से भरी सुघड़ कलाई आज?
काजल-मंडित दृग कहाँ जिनका जग पर राज?



- महाकवि रामेश्वर नाथ मिश्र 'अनुरोध', वरिष्ठ साहित्यकार, कोलकाता

गिरवी

मैं मन से बड़ा अमीर हूं।
पैसों से ज़रा गरीब हूं।
मेरे साथी बहुत से हैं।
दोस्त एक आधे से हैं।
मुझे ज़रूरत आन पड़ी थी।
मैंने मदद नहीं उधार माँगा था।
साथी और दोस्त
मुझसे गरीब निकले।
मैं पैसों से, वो मन से।
मैंने ज़ेवर गिरवी रखे।
थोड़ा और गरीब हो गया।
साथी कम हो गए।
दोस्त कोई भी न रहा।
मन गरीब न हुआ।
मैंने बर्तन भी गिरवी रख दिए।
अब मेरे पास गरीब होने
को कुछ भी न था।
मेरे पास सिर्फ आत्मा बची थी।
जब कुछ न बचा तो
मैंने आत्मा गिरवी रख दी।
अब मैं बहुत अमीर हूं,
रुपयों से, दोस्तों से, साथियों
से। मन पहली बार गरीब
हुआ है।



- संतोष कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोंकण रेलवे

गाँव की आत्मकथा

हवाओं
आओ, चिपक जाओ मेरी छाती से
नांक और रोम रंध्रों से प्रविष्ट हो
शीतल कर दो तन, मन, प्राण
पेड़ों, सिहरो कि सिहर उठे
दिग्-दिगंत और झूम उठें दसों
दिशाएं
फसलों खिल उठो कि
खिल जाये रोम- रोम
विहंस उठे धरती का कोना- कोना
पगडंडियों चिपक जाओ मेरे पावों से
ताकि धूल-धसरित रहे जीवन की
शेष राह
मौसमों जुड़ा दो तन,मन, रोम- रोम
अपनी माद्कता से
बादलों बरसो, मौसम की परवाह
किए बिना
चिड़ियों चहचहाओ ,चहल -कदमी
करते हुए
गुंजायमान कर दो संपूर्ण वातावरण
धूप, खिलो, कहकहाओ और हर लो
बूढों के ताप
रोशनी उतरी रहो दिन -रात
अंधेरे, ताकि, न रोक सकें उजियारा
सूरज,
हर लो सबके दुख-ताप
भौरों
जिनके बेटे मुडकर
नहीं देखे बूढों की
ओर
भनभनाओ
उनके कानों पर
बैठ और कहो कि
अबकि डंढ नें कहर बरपा कर
रखा है
दरवाजे का बूढ़ा पीपल
विकास की भेंट चढकर भी ईंधन
मुहैया करा रहा है
लोग आंच तापकर कम कर रहे हैं
ठंढ की भयावहता
गाँव के मौसम की चर्चा गुम हो गई है
ठिठक कर रह गई है चौपालों तक
शहरों में लोग ढुंढुभी बजाकर जीत
हार गा रहे हैं
अबकि शायद मैं भी धूप की चादर
में लिपटा
ठंढ के तापमान को बरदास्त तो कर
रहा हूँ
पर हर नहीं पा रहा हूँ किसी की पीड़ा
आत्मा यहीं कहीं रख लौट आऊंगा
निस्तेज शरीर लेकर और फिर गुम
हो जाऊंगा
शहर की उसी चकाचौंध में
शब्दों से ही सही
इस पीड़ा को बांटने का मन हो आया
इसलिए सार्वजनिक रूप से ज्ञापित
करना
चाहता हूँ गाँव घर की पीड़ा
हो न हो ये दृश्य ओझल हो जांय
आंखों से
इसलिए बांधकर रख रहा हूँ
यह सिर्फ मेरे ही नहीं
समानांतर हर गाँव की कथा है
जिसकी अभिव्यक्ति होती रहनी
चाहिए।



हृदयेश मयंक, वरिष्ठ साहित्यकार

उर्दू ग़ज़ल

बक़ौर इश्क़ मुहब्बत अजीब लगता है
अमीरे-शह्र भी सचमुच ग़रीब लगता है
पढ़ाई इश्क़ मुहब्बत की हो कि सी.ए. की
ये ऐसे कोर्स हैं जिनमें नसीब लगता है
मैं कैसे मानूँ कि वो दूर हो गया मुझसे
हवा का दम घुटे इतना क़रीब लगता है
हवा के जैसे सभी से जुड़ा हुआ है वह
मुझे तो सारा जमाना रक़ीब लगता है
मरज़ दिया है तो उसने इलाज भी है किया
वो है तो दुश्मने-जाँ पर हबीब लगता है

हिन्दी गजल

कहूँ किस तरह मुझको आशा नहीं है
निराशा भरी मेरी भाषा नहीं है
वही लक्ष्य है उसको पा के रहेंगे
भले थक गये पर हताशा नहीं है
दमकता है जो कल्पनाओं में मेरी
स्वयं चन्द्र उस चन्द्रमा सा नहीं है
सुधापान कर के भी प्यासे रहे तुम
ये तृष्णा है साथी पिपासा नहीं है
न पर्वत से आये न सागर को जाये
वो कुछ भी हो लेकिन बिपाशा नहीं है
(बिपाशा – नदी)



- नवीन सी. चतुर्वेदी, बहुभाषी शायर

भूखल

जिसे बांधकर लाया गया था
पंचायत में,
उसका नाम था भूखल
वह कांप रह था थर-थर ,
थरथरा रही थी उसकी टांगे,
उस पर पड़ रही थी लाठियां
क्योंकि उसने रात में खेत से
काटी थी,
धान की कुछ अधपकी बालियां।
उसे सहन नहीं हुई थी भूख
नहीं जला था चूला उसके घर,
चार दिन से
बच्चों की करुण आवाजें उसे
द्रवित कर रही थीं
पंचों ने एकमत से कहा।
उसका जुर्म बहुत बड़ा है
माफ़ नही किया जा सकता।
देना होगा जुर्माना,
लगा दिया गया जुर्माना।
वह रोया, गिड़गड़ाया,
लेकिन कुछ नहीं हुआ
क्योंकि भूख की कोई कीमत
नहीं होती
भूख छोटी होती है, चोरी से
भूख से
हजारों
मरते है।
यह
मानसिक
प्रक्रिया है।
सतत
चलती
रहती है।।



- अवधेश राय, वरिष्ठ रचनाकार

चार दिनों का मेला है.....!

बारिशों ने इस बार....!
कुछ अजब सा खेल
खेला है...
मानो या मत मानो...
इस बरस....खुद ही
उन्होंने....
बूँदों का मोह छोड़ा है....
अब तलक...लेकर भार
जिनका..
कर रहे थे देशाटन...जी
भर का...
जाने क्यों...उचट गया
उनसे...?
मन आवारा बादलों
का....
और....पूरी शिद्दत से
उन्होंने....
अपने जिगर को धरा
पर उड़ेला है
तपती धारा को उम्मीद
ना थी....!
ऐसी नियामत की प्यारे....
फिर बात क्यों उठती....?
मन में उसके किसी
कयामत की..
जब तलक समझ
पाती....!
धरा कुछ भी प्यारे....
कलेजे पर अपने....
बाढ़ का थपेड़ा झेला है....
इसी में बह गए सारे...
मकाँ,जानवर,पेड़-पौधे...
और...
आदमी-औरत-बच्चे भी
प्यारे.....
समझ नहीं पा रहा है
कोई यहाँ...
कि यह कैसा झमेला
है....?
बदनसीबी कहता इसे
कोई,
कहता कोई ईच्छा प्रभु
की प्यारे..
कोई दोष देता....है मनुज
का...
जिसने....
जानबूझकर....!
इस प्रकृति को छेड़ा है.....
संदर्भ,प्रसंग और व्याख्या
है यहाँ सबकी...अपनी-
अपनी प्यारे...
पर मानता है हर कोई
यही कि....!
जादूगर, इस सृष्टि का....
अकेला है
और खेल उसके हैं...
बेहद निराले
वास्तव में...हिस्सा है यह
बाढ़ भी
उसके....खेल ही का
प्यारे.....
नहीं कुछ इसमें नया
खेल खेला है
बस इतना जताना चाहता
है वह...
कि जिंदगी तो बस....!
चार दिनों का मेला है....
कि जिंदगी तो बस....!
चार दिनों का मेला है....



जितेन्द्र कुमार दुबे, अपर पुलिस उपायुक्त, लखनऊ

मैं हिंदी हूँ

मैं दिलों में बसती हूँ,
तुम्हारे सपनों को बुनती हूँ,
आशाओं की डोर से बँधती हूँ,
यादों की सेज पर सजती हूँ।
मैं गाँव से क़स्बा,
क़स्बों से शहर और शहर से
उस पार चली जाती हूँ,
कहीं रूप बदलती हूँ,
कहीं रंग बदलती हूँ,
कहीं मिट्टी के घड़ों की तरह
ढल जाती हूँ।
मैं सोच में हूँ, साँझ में हूँ,
मैं विचार में हूँ, मैं राज में हूँ,
मैं व्यापार में हूँ, मैं तकरार में हूँ,
मैं लड़ाई में हूँ, मैं समझौते में हूँ।
मैं दर्द में हूँ, मैं ठहाके में हूँ,
हर गली, हर मोहल्ले में हूँ,
दोस्तों की मस्ती में हूँ,
बचपन की मासूमियत में हूँ।
मैं जवानी की कविता में हूँ,
मैं बुढ़ापे के तजुर्बे में हूँ,
मैं शादी में हूँ, मैं विदाई में हूँ,
मैं मोहब्बत में हूँ, मैं रंजिश
में हूँ।
मैं सादगी में हूँ, मैं चाँदनी में हूँ,
मैं इतिहास में हूँ, मैं भविष्य
में हूँ,
मैं शोक में हूँ, मैं हास्य में हूँ।
हाँ, मैं वही हिंदी हूँ,
जिसे कहने में तुम इतराते हो,
ज़्यादातर शरमाते हो,
कम पढ़े कहलाते हो!
दसवीं के बाद मुझे भूल जाते
हो,
मैं सहज हूँ, सरल हूँ,
मैं भावुक हूँ, नरम हूँ,
फिर क्यों हिंदी से रूठ जाते हो!
मैं कहानी हूँ, कविता हूँ,
मंत्र हूँ, मैं दोहे हूँ, छंद हूँ,
निबंध हूँ, ये मेरे शृंगार हैं,
मेरे कोष के ये भंडार हैं!
मैं देश-विदेश जा चुकी हूँ,
मेरे शंख दूर-दूर तक बजते हैं,
फिर क्यों मुझे बोलते वक़्त,
तुम्हारे शब्द कम पड़ते हैं!
मैंने तुम्हारे साथ बचपन बिताया
है,
मेरी लोरियों की मीठी धुनों ने,
तुम्हारी नन्ही आँखों को
सहलाया है,
तुम्हें सपनों की सेज पहुँचाया
है!
अब यौवन में तुम साथ क्यों
छोड़ते हो,
इस रिश्ते से नाता तोड़ते हो,
हाँ, मैं वही हिंदी हूँ,
जिसे छोड़ तुम सब बोलते हो,
जिसे छोड़ तुम सब बोलते हो!



- प्रो. डॉ. कुलविंदर कौर अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, के.सी.

रुक्मिणी

बहुत थोड़ा नहीं बनना,
बहुत ज्यादा नहीं बनना,
मुझे संपूर्णता की लालसा,
आधा नहीं बनना।
तुम्हारे प्यार पर, घर-बार पर
अधिकार मेरा हो,
मुझे रुक्मिणी बनना है,
राधा नहीं बनना।।
तुम्हारे संग चंद्रोदय,
तुम्हारे संग सवेरा हो,
तुम्हारे वंशजों के रक्त में,
कुछ अंश मेरा हो।
जहां चाहो वहां जाओ,
लौटकर घर ही आओगे,
तुम्हारी आस बनना है,
बाधा नहीं बनना।।
मुझे रुक्मिणी बनना है,
राधा नहीं बनना
याद राधा की आए,
बांसुरा पर धुन बजाओगे,
अगर मिलने का मन हो,
धेनुओं संग वन को जाओगे।
तुम्हारे वाम सिंहासन पर
आरक्षण मेरा होगा,
मुझे छुपने-छुपाने वाली,
मर्यादा नहीं बनना।।
मुझे रुक्मिणी बनना है,
राधा नहीं बनना
तुम्हारे धर्म में हर कर्म में,
सहभागिता होगी,
मगर राधा के हिस्से प्रेम में,
बस वेदना होगी।
बिताकर उम्र बिरहन,
साथ मंदिर में मिलेगा फिर,
मुझे परिणिता बनना है,
आराध्या नहीं बनना।।
मुझे रुक्मिणी बनना है, राधा नहीं बनना



- रेणु शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

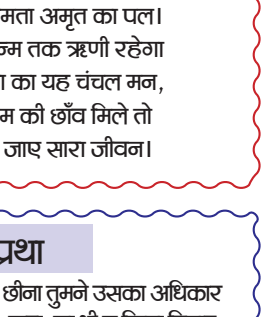
चलो ख़ामोश होकर झाँकते हैं,

एक-दूसरे की आँखों में।
किसमें कितनी सच्चाई है,
किसकी तक़लीफ़ कम है,
किसकी ज़्यादा,
ख़्वाब किसके बड़े हैं,
उम्मीदें किसकी टूटी हैं,
नींदें किसकी रूठी हैं,
रोशनी किसकी गयी है,
अँधेरा किसपे भारी है,
किसका रोना अभी भी जारी है,
कौन पथरायी हैं,
कौन बहकर निखर आयी हैं,
किस में चमक अब भी
बरक़रार है,
किसमें बेइंतहा प्यार है??
चलो कुछ देर सोचते हैं,
स्वयं को तौलते हैं,
कोई कुछ न बोले,
पर हालात बोलते हैं।
नदियों का बहना,
एक वेग है, एक चलन है, एक
चाल है,
पर समंदर का ख़ामोश रहना,
उसकी गहराई है, उसकी
मर्यादा है।
और मैंने अपनी आँखों सी
नदियों को पाटकर,
खुद को समंदर बनाया है।।



- नीतू पाण्डेय क्रांति फिल्म पटकथा लेखक-कवयित्री

जननी तेरा अंतर्मन



- अलका ओझा, सहायक प्राध्यापक, के.सी महाविद्यालय, चर्चगेट

ममता से भीगा,
स्नेह से उज्ज्वल,
माँ का वह पावन
अंतस्तल।
जहाँ प्रेम की सरिता
बहती,
बनकर ममता का
निर्मल जल।
न कोई सीमा, न
कोई बंधन,
न प्रेम में कोई शर्त सरल,
संतान की हर पीड़ा पर
भर आता उसका नयन-कमल।
स्वयं जलकर भी दीप बने वह,
बनकर जीवन का उजला पल,
अपने आँचल की छाया में
कर देती हर दुःख को विफल।
संतान हँसे तो हँसती जननी,
रोए तो भीग उठे उसका आँचल,
उसकी हर धड़कन में बसता
संतान का ही एक संसार अटल।
कितना निर्मल, कितना निश्छल
रे! जननी तेरा अंतर्मन
जिसकी ममता की निर्मल धारा,
बहती रहती युग-युग अविरल।
माँ केवल एक शब्द नहीं है,
माँ तो जीवन का प्रथम संबल,
उसके चरणों में स्वर्ग बसा है,
उसकी ममता अमृत का पल।
जन्म-जन्म तक ऋणी रहेगा
उस ममता का यह चंचल मन,
माँ के प्रेम की छाँव मिले तो
धन्य हो जाए सारा जीवन।

पिता

बुलंदी को छुएँ कैसे,
हमें उड़ना सिखाते हैं।
पिता वो पेड़ हैं जिसपर परिंदे
चहचहाते हैं।
दुआओं से हमें सींचा, सलीक़े से
संवारा है।
दिया आशीष जी भरकर हमें हरपल
निखारा है।
हमारी याद में हर पल पिताजी साथ
रहते हैं।
अंधेरे रास्तों में भी दिया बनकर वो
जलते हैं।
वो हमसे दूर हैं लेकिन हमेशा याद
आते हैं।।
पिता की लाडली हैं हम उन्हें आदर्श
माना है।
मिली तालीम जब उनसे स्वयं को
हमने जाना है।
कोई ख़्वाहिश कोई हसरत न
सपना ही अधूरा है
पिता के दम से ही हमने किया हर
काम पूरा है।
कभी मुश्किल अगर आई वही
रस्ता सुझाते हैं।
हमारी चुप्पियों में भी पिता आवाज
बनते हैं।
कभी वो हौसला देते कभी परवाज
बनते हैं।
पिता का साथ पाकर हम चुनौती से
नहीं डरते,
जमीं पर पाँव होते हैं उड़ानें नभ में
हम भरते।
पकड़ कर उंगलियाँ उनकी क़दम
आगे बढ़ाते हैं।
पिता वो पेड़ हैं जिसपर परिंदे
चहचहाते हैं।।"



अम्बिका झा, वरिष्ठ कवयित्री

संभव है

संभव है धरा पर सबकुछ हो
सकना।
राजपुत्रों का जीवन जंगलों में
पलना।
निज पुत्र को जल में अर्पण करना।
वधू के कारण पुत्र से दूर कहीं
रहना।।
संभव है ऐसा भी पृथ्वी पर हो
सकना।
वचन के लिए सब सुखों को
त्यागना।
धर्म की रक्षा के लिए हर प्रयास
करना।
अपने कर्तव्य से दूर केवल भोग
भोगना।।
युग वह आ चुका जहां नीति
गायब हैं।
कर्तव्य पथ केवल कविताओं में
शेष हैं।
ईमानदारी -अच्छाई बस शब्दकोश
में हैं।
अब जीवन को बोझ समझ झेलते
सब हैं।
जीवन जीना भूल गए सब।
गोल पृथ्वी पर घूम गए सब।
अध्ययन, परहित, सत्कर्म ये
पीछे कहीं छोड़ गए सब।
जीवन तो जीवन हैं,जीवों का ऐसा
वन हैं।
जहां जग से सुंदर मन हैं,मन में
महकते सुमन है।
ऐसे मन जो जग की सुंदरता को
जगाए रखते हैं।
वहीं जीवन के उद्देश्य को सार्थकता
प्रदान करते हैं।



श्वेता मिश्रा, विरार

मेरे पिता

रोज सुबह उठकर काम पर चले
जाते हैं,
हम भूखे न सोएँ, इसलिए ईंट-
पत्थर उठाते हैं।
फटे-पुराने कपड़े खुद पहनकर,
हमें नए दिलाते हैं,
हमारे छोटे से घर को सँवारने के
लिए, बड़े-बड़े मकान बनाते हैं।
धूल-मिट्टी उनके फेफड़ों को बहुत
सताती है,
बीमारी अक्सर उनके शरीर को
कमजोर कर जाती है,
लेकिन वे हमेशा कहते रहते हैं-
"डरो मत! अभी तो कई इम्तिहान
बाकी हैं।"
हमारी किताबें समय पर आ जाएँ,
इसलिए वे महीने भर दुगुना काम
कर लेते हैं।
गर्मी में सीमेंट उनके हाथ-पैर
छील देती है,
फिर भी वे कभी डॉक्टर के पास
नहीं जाते हैं।
उसे फ़िजूल खर्च समझते हैं,
मगर हमारी छोटी-सी चोट पर
तुरंत मरहम लगाते हैं।
चाँद उनसे आकर कहता है—
"आप कितना काम करते हैं!"
पिता मुस्कुराकर जवाब देते हैं—
"मैं रात यहाँ जागता हूँ
तभी मेरा परिवार चैन की सुबह
देखता है।"



अदिती मारू, मालाड

पावन प्रेम

प्रीत है- वह जिद नहीं,
तन और धन से मोह रखना
उसका स्वरूप नहीं।
न व्यापार, न लाभ-
वह तो पावन पर्व है।
व्रत-सा ही है पावन प्रीत,
जिससे आत्मा हो जाती है दोष-
रहित।
जीवन का यह सत्य मान लिया यदि,
न होगा कभी कोई उससे विचलित।
प्रीत है आंतरिक हृदय का भाव,
जिसे हुआ इसका साक्षात्कार,
वह विरह, विलाप और दुख से
सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
ठंडी पवन, खुला गगन-
नदी के बहाव-सा कोमल एहसास
प्रेम।
साथ की लालसा नहीं,
पर मन सदा स्थिर रहे-
यही एक अभिलाषा है,
जिसे निहार सकूँ।
उस एहसास पर
मेरा अधिकार सदा बना रहे।



द्रष्टि संगोई, घाटकोपर

शिकायतों का तूफ़ान

जब जीवन से शिकायतों का
तूफ़ान चला जाता है,
शंकाओं और आशंकाओं का
सैलाब चला जाता है,
संघर्षों की अग्नि में तप कर
जीवन धैर्य आभूषण अपनाता है,
तब जीवन मूल्यों का
सार समझ आता है।
जब 'जीवन चक्र' जीत हार
हार जीत की तृष्णा से ऊपर उठ
जाता है, मानव को जीवन जीना
आ जाता है।
बेशक देर बहुत हो जाती है
अनुभवों को जीते जीते जब,
जीवन के विराम का समय
आता है
विराम और पूर्णविराम के मध्य,
यह आत्मविश्वास व संतोष का
सुखद एहसास दे जाता है।



आशा गुप्ता, वडाला

माँ की ममता

माँ, मेरा प्यार चाँद-सा है,
कभी आधा-अधूरा दिखता है,
पर दिखने से क्या होता है,
चाँद होता पूरा है।
माँ, मेरा प्यार सच-सा है,
कभी किससे डरता कहाँ है
वक़्त बदले, लोग बदले,
सच न बदलता है।
सर पर हाथ फिरा दे,
लोरी गाकर सुना दे
पल्लू तेरा मेरे,
आँसुओं से फिर से भिगा दे।
चोट लगी है मुझको,
फूँक मार, चोट मिटा दे,
हाथों से खिचड़ी खिला दे,
रुला दे, फिर सीने से लगा दे।
माँ, तेरा प्यार कैरी-सा है,
कभी मिर्च-सा तीखा है,
कभी गुड़-सा मीठा है,
तो कभी अचार जैसा है।
इंतज़ार-सा तेरा प्यार,
राह मेरी रोज़ देखता है,
साँझ होने पर आसमान भी,
तारा ढूँढता है।
माँ, मेरा प्यार वो ख़त-सा है,
जिसके पन्नों पर तू लिखा है,
ये क़ासिद बस ख़त देने का,
वक़्त ढूँढता है।



वंशिका शिल्पा जैन, अंधेरी

दहेज प्रथा

बंद करो यह दहेजप्रथा
सदियों से चली आ रहीं यह कथा
लक्ष्मी मानना होता है जिसे
बनाते हो लक्ष्मी प्राप्त करने का
जरिया उसे
व्यापारी ने मनचाही बोली लगाई
देने वाले ने खुशी से गर्दन
झुकाई
दहेज ना मिलने पर करते
हो अत्याचार
यह भी हुआ एक तरह का
भ्रष्टाचार
छीना तुमने उसका अधिकार
जरा-सा भी न किया विचार
बड़े होते ही दहेज के हाथ
छोड़ दिया संसार ने बेटियों का साथ
सिर्फ बेटी नहीं होती उसका
शिकार दांव पर लग जाता है पूरा
परिवार
बंद करो यह
दहेज प्रथा
सदियों से चली आ
रही यह कथा



परिता जोशी, मुलुंड

हकीकत

जेब में पैसा आया तो समझ आया,
हर चीज का यहाँ दाम होता है।
रिश्ते भी धीरे-धीरे बदल
जाते हैं,
जब हर सवाल में काम
होता है।
बचपन में जो सपने सस्ते
थे,
अब किस्तों में पूरे होते हैं।
बड़े होने का सच यही है
शायद,
यहाँ लोग कम, खर्चे
ज़्यादा होते हैं।



प्रिया दुबे, बी.ए. द्वितीय वर्ष

रचनाएँ आमंत्रित
आपकी लेखनी, हमारा मंच!
वाग्ज्योति टाइम्स
साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं
नवोदित रचनाकारों से मौलिक रचनाएँ
आमंत्रित करता है।
कविता, गीत, ग़ज़ल, कहानी,
लघुकथा एवं व्यंग्य प्रकाशनार्थ भेजें।
आइएँ! अपनी लेखनी को दें एक नया मंच
और अपनी अभिव्यक्ति को एक नई पहचान!
रचनाएँ भेजें :
ई-मेल : vagjyotitimes@gmail.com
व्हाट्सऐप : 8779079255, 9323778226
नोट : साथ में संक्षिप्त परिचय एवं फोटो अवश्य भेजें।

रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान पस्त

भारत ने जीता U19 एशिया कप



ओमान। भारत ने पाकिस्तान को हराकर अंडर-19 एशिया कप 2026 का खिताब जीता। रोमांचक फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को एक विकेट से हराया। अल अमेरात (ओमान) में खेले गए मुकाबले में पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 9 विकेट खोकर 337 रन बनाए। इसके जवाब में भारतीय टीम ने रन बनाने के साथ-साथ बीच के ओवरों में विकेट भी गंवाए। कप्तान लक्ष्य (80) के आउट होने के बाद एक समय लगा कि भारत ने खिताबी मुकाबला गंवा दिया लेकिन फिर मनल और मोहित के बीच 9वें विकेट के लिए हुई बेहतरीन साझेदारी ने पाकिस्तान के हाथ से मैच छीन लिया।



338 रनों के विशाल लक्ष्य

■ पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत के सामने 338 रनों का विशाल लक्ष्य रखा है। इसके जवाब में भारत के लिए आर्यवीर सहवाग अर्धशतक जड़ने के बाद आउट हुए। वीके विनीथ की बल्ला नहीं चला। अब अर्जुन राजपूत भी पवेलियन लौट गए हैं। यशवर्धन ने 9 रन बनाए। वहीं कप्तान लक्ष्य 101 गेंद में 80 रन बनाकर आउट हुए। अन्वय द्रविड़ 12 गेंद में 19 रन बनाकर रन आउट हुए। मनल चौहान ने 32 गेंद में 47 रन की दमदार पारी खेली। मनल ने मोहित के साथ आखिरी ओवरों में नौवें विकेट के लिए 35 गेंद में महत्वपूर्ण 57 रन जोड़े। मनल के आउट होने के बाद मोहित ने वेंकटा के साथ मिलकर अंतिम ओवर में भारत को रोमांचक जीत दिलाई।

उस्मान खेली शतकीय पारी

■ पाकिस्तान की ओर से उस्मान खान 107 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें काव्या पटेल ने पवेलियन भेजा। अब्दुल कादिर ने भी बड़ी और तूफानी अर्धशतकीय पारी खेली। कप्तान फरहान यूसुफ ने 60 गेंदों में 63 रनों की पारी खेली, जबकि अब्दुल कादिर ने 54 गेंदों में ताबड़तोड़ 80 रन बनाए। भारत की ओर से 8 गेंदबाजों ने गेंदबाजी की लेकिन शुरुआती दौर में रन रोकने में असफल रहे।

सहवाग प्लेयर ऑफ द सीरीज

■ आर्यवीर सहवाग को प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया है। सहवाग ने पांच मैचों में सबसे ज्यादा 361 रन बनाए। उन्होंने तीन अर्धशतक और एक शतक लगाया और टीम को खिताब जिताने में अहम भूमिका निभाई। मोहित उल्वा को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया है। मोहित ने अंतिम तक क्रीज पर रहकर भारत की जीत सुनिश्चित की। मोहित ने 26 गेंदों में 49 रन की तूफानी पारी खेली और आखिरी गेंद पर चौका लगाकर टीम को रोमांचक मैच में जीत दिलाई।

ee पुरुष अंडर-19 एशिया कप जीतने पर भारतीय टीम को हार्दिक बधाई। टीम ने बेहद करीबी मुकाबले के दौरान असाधारण कौशल, दृढ़ संकल्प और संयम का प्रदर्शन किया। हमारे युवा चैंपियनों को भविष्य में भी लगातार सफलता हासिल करने के लिए मेरी शुभकामनाएं।'

- द्रोपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

ee भारतीय क्रिकेट के लिए एक शानदार दिन। आज के बेहतरीन प्रदर्शन और पुरुष अंडर-19 एशिया कप 2026 जीतने के लिए हमारे युवा क्रिकेटर्स पर बहुत गर्व है। उनकी यह सफलता कई अन्य युवाओं को प्रेरित करेगी। टीम को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारतीय टीम ने जीती वनडे सीरीज

आखिरी मैच में गेंदबाजों का कहर



माउंट माउंगानुई। भारत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच मैचों की वनडे सीरीज 3-1 से अपने नाम कर ली है। भारत ने रविवार को माउंट माउंगानुई के बे ओवल मैदान पर पांचवां वनडे 22 रनों से जीता। भारत ने 210 रनों का टारगेट रखा, जिसके बाद गेंदबाजों ने गदर काटा और कीवी टीम को 48.1 ओवर में 187 रनों पर समेट दिया। अर्शदीप सिंह ने 10 ओवर में 30 रन देकर तीन शिकार किए। वह प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए। मोहम्मद सिराज और अक्षर पटेल ने दो-दो जबकि आकिब नीब, यश ठाकुर और नमन धीर ने एक-एक विकेट लिये।न्यूजीलैंड की ओर से सर्वाधिक रन डीन फॉक्सक्रॉफ्ट (31) ने बनाए। कप्तान मिचेल सैंटनर और निक हैरी ने 24 रनों का योगदान दिया। क्रिस्टियन क्लार्क ने 16, टिम साइफर्ट और ब्लेयर टिकनर ने 14 रन बनाए। न्यूजीलैंड ने चार विकेट 83 रन पर गंवाए थे, जिसके बाद टीम वापसी करने में नाकाम रही। इससे पहले, टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी टीम इंडिया 42.1 ओवर में 209 रनों पर ढेर हो गई थी। ईशान किशन और अक्षर पटेल दो बल्लेबाज फिफ्टी से चूके और 46-46 रन बनाकर आउट हुए। विराट कोहली और रोहित शर्मा ने एक बार फिर निराश किया। उनसे ज्यादा तो रन नंबर-10 और 11 के बल्लेबाज मोहम्मद सिराज और अर्शदीप सिंह बना गए। रोहित 7 तो कोहली ने 5 रन बनाए, जबकि अर्शदीप-सिराज ने 14-14 रन जोड़े। आखिरी विकेट के लिए दोनों ने 26 रनों की पार्टनरशिप कर टीम इंडिया को 200 के पार पहुंचाया।

रबाडा ने विवाद से बनाई दूरी

जोहांसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा ने 2018 के सैंडपेपरगेट विवाद से दक्षिण अफ्रीका को पूरी तरह से अलग कर लिया है और कहा है कि ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट को इस मुद्दे से खुद निपटना होगा। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा की आत्मकथा सब्र में किए गए नए दावों के बाद यह विवाद फिर से गर्मा गया है, जिस पर जोहानिसबर्ग में रबाडा ने अपनी प्रतिक्रिया दी। रबाडा ने कहा, हम इस बात को लेकर चिंतित नहीं हैं कि उन्हें किस चीज से निपटना है।

वैभव ने रचा इतिहास

नई दिल्ली। वैभव सूर्यवंशी ने शनिवार को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में बिहार की कप्तानी करते हुए इतिहास रच दिया। वैभव ने 15 साल और 232 दिन की उम्र में कप्तानी की। इस तरह वो टी20 इतिहास के सबसे युवा कप्तान बने।



जाक वुकुसिच किसका रिकॉर्ड तोड़ा

■ वैभव सूर्यवंशी ने क्रोएशिया के जाक वुकुसिच के रिकॉर्ड को तोड़ा, जिन्होंने 17 साल और 311 दिन की उम्र में राष्ट्रीय टी20 टीम की कप्तानी की थी। बता दें कि बिहार ने पिछले सप्ताह शुक्रवार को शुरुआती दो मैचों के लिए 17 सदस्सीय टीम की घोषणा की थी।

कीर्तिमानों की किताब वैभव

■ क्रिकेट में वैभव सूर्यवंशी ने कीर्तिमानों का अंबार लगाया हुआ है। पिछले साल वैभव ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में महाराष्ट्र के खिलाफ केवल 58 गेंदों में शतक जमाया था। यह एसएमटी इतिहास का सबसे तेज शतक रहा। इसके अलावा उन्होंने आईपीएल 2025 सीजन में राजस्थान रॉयल्स के लिए खेलते हुए गुजरात टाइटंस के खिलाफ 35 गेंदों में शतक जमाया और टी20 शतक जमाने वाले सबसे सबसे युवा बल्लेबाज बने।

कार्लसन गंवा सकते नंबर वन का ताज!

बुडापेस्ट। पांच बार के विश्व शतरंज चैंपियन मैग्नस कार्लसन को टोटल चेस विश्व चैंपियनशिप टूर पायलट के फास्ट क्लासिकल मुकाबले के तीसरे दिन आर्मेनिया के हाइक मार्टिरोस्यान के हाथों हार का सामना करना पड़ा जिससे विश्व नंबर एक खिलाड़ी की उनकी 15 साल से बरकरार बादशाहत खतरे में पड़ गई है। 35 वर्षीय नॉर्वे के ग्रैंडमास्टर कार्लसन जुलाई 2011 से विश्व रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर काबिज हैं। हालांकि फास्ट क्लासिकल वर्ग में पांच मुकाबले ड्रॉ खेलने और एक हार झेलने के बाद उन्होंने 15.8 रेटिंग अंक गंवा दिए हैं और लाइव रेटिंग में उनके 2807.2 अंक रह गए हैं।



भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन

■ प्रत्येक ग्रुप के शीर्ष चार खिलाड़ी खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे जबकि बाकी खिलाड़ी क्लासीफिकेशन मुकाबलों में हिस्सा लेंगे। भारत के अर्जुन एरिगेसी ने अमेरिका के वेस्ली सो के खिलाफ एक जीत दर्ज की और एक बाजी ड्रॉ कराई। पहले मुकाबले में भारतीय ग्रैंडमास्टर दबाव में थे, लेकिन जीत की स्थिति में दिख रहे सो ने ड्रॉ का प्रस्ताव ठुकरा दिया। इसके बाद उनसे बड़ी गलती हुई और अगली ही चाल में उन्होंने हार स्वीकार कर ली। 23 वर्षीय एरिगेसी ग्रुप डी में तीसरे स्थान पर हैं।

कुमामोतो मास्टर्स

लक्ष्य सेन ने फाइनल में बनाई जगह

कुमामोतो। लक्ष्य सेन ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए कुमामोतो मास्टर्स जापान सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। शनिवार को खेले गए रोमांचक सेमीफाइनल मुकाबले में भारत के स्टार शटलर लक्ष्य ने इंडोनेशिया के विश्व नंबर 10 अलवी फरहान को कड़े संघर्ष के बाद तीन गेमों में 21-12, 15-21, 21-11 से शिकस्त दी। यह लगातार दूसरा मौका है जब लक्ष्य किसी टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचे हैं। इस खिताबी मुकाबले में जगह बनाने के साथ ही उन्होंने बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल के लिए क्वालिफाई करने की अपनी उम्मीदों को बेहद मजबूत कर लिया है। शुरुआत से ही लक्ष्य ने अपनी रणनीतिक कुशलता का बेहतरीन परिचय दिया। फरहान के तेज और आक्रामक खेल के आगे लक्ष्य ने संयम दिखाते हुए धैर्य रखा और सही मौके का इंतजार किया। सटीक रिटर्न और फोरहैंड पर सटीक वार करते हुए लक्ष्य ने पहले गेम में शुरुआत से ही बढ़त बना ली और आसानी से 21-12 से पहला गेम अपने नाम कर लिया।



चलचित्र ज्योति



रामायण बॉक्स ऑफिस

वर्ल्डवाइड आंकड़ा 1200 करोड़ के पार

10वें दिन की 'एनिमल' से दोगुना कमाई

बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों रणबीर कपूर और यश की फिल्म 'रामायण' का दबदबा देखने को मिल रहा है। रिलीज के साथ ही दर्शकों के बीच चर्चा बटोर रही इस माइथोलॉजिकल फिल्म की कमाई में दूसरे शनिवार को जबरदस्त उछाल आया है।

फिल्म ने न सिर्फ घरेलू बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ मजबूत की है, बल्कि दुनियाभर में भी 1200 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। खास बात यह है कि दसवें दिन की कमाई के मामले में फिल्म ने रणबीर कपूर की पिछली रिलीज 'एनिमल' को भी काफी पीछे छोड़ दिया है।

कितना हुआ 'रामायण' का कलेक्शन

■ सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म ने दूसरे शनिवार यानी रिलीज के दसवें दिन भारतीय बॉक्स ऑफिस पर 72.90 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया। यह शुक्रवार की कमाई के मुकाबले 51.6 फीसदी की बढ़ोतरी है। शुक्रवार को फिल्म ने भारत में 48.10 करोड़ रुपये कमाए थे। इस शानदार उछाल के साथ फिल्म का कुल घरेलू नेट कलेक्शन 685.60 करोड़ रुपये हो गया है, जबकि भारत में इसका ग्रॉस कलेक्शन 819.50 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है।

हिंदी वर्जन ने की सबसे ज्यादा कमाई

■ फिल्म की शनिवार की कमाई में हिंदी वर्जन का सबसे बड़ा योगदान रहा। हिंदी में फिल्म ने 18,557 शोज के जरिए 53.75 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया। इसके बाद कन्नड़ वर्जन ने 893 शोज से 5.40 करोड़ रुपये कमाए।मलयालम और तमिल वर्जन ने 4.75-4.75 करोड़ रुपये का कारोबार किया। मलयालम के 1,127 और तमिल के 1,290 शोज हुए। वहीं, तेलुगु वर्जन ने 1,584 शोज के जरिए 4.25 करोड़ रुपये कमाए।पांचों भाषाओं को मिलाकर शनिवार को फिल्म की कुल ऑक्यूपेंसी 45.5 फीसदी रही। भाषाओं के हिसाब से देखें तो मलयालम वर्जन की ऑक्यूपेंसी सबसे ज्यादा 83 फीसदी रही। तमिल में यह आंकड़ा 62.5 फीसदी और कन्नड़ में 58.8 फीसदी दर्ज किया गया। हिंदी की ऑक्यूपेंसी 41.9 फीसदी, जबकि तेलुगु की 39.1 फीसदी रही।

विदेशों में भी फिल्म का जलवा

■ घरेलू बॉक्स ऑफिस के साथ-साथ विदेशी बाजारों में भी फिल्म शानदार प्रदर्शन कर रही है। दसवें दिन विदेशों से फिल्म ने करीब 30 करोड़ रुपये का ग्रॉस कलेक्शन किया। इसके साथ ही फिल्म का कुल ओवरसीज ग्रॉस कलेक्शन 408.50 करोड़ रुपये पहुंच गया है। भारत के 819.50 करोड़ रुपये के ग्रॉस कलेक्शन को मिलाकर फिल्म की दुनियाभर में कुल कमाई 1,228 करोड़ रुपये हो गई है।फिल्म की कुल वर्ल्डवाइड कमाई में भारतीय बाजार की हिस्सेदारी 66.7 फीसदी है, जबकि विदेशी बाजारों से 33.3 फीसदी कमाई हुई है। शनिवार को फिल्म का प्रति शो औसत कलेक्शन 32,454 रुपये रहा।

ऐश्वर्या राय को कई सोर्स से आमदनी



आज 01 नवंबर को अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन अपना जन्मदिन मना रही हैं। उन्होंने साउथ से लेकर बॉलीवुड तक कई चर्चित फिल्मों में काम किया है। कई इंटरनेशल फैशन इवेंट में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर वे जान फूंक देती हैं। उनकी खूबसूरती के चर्चे होते हैं। अभिनय से वे फैंस पर जादू कर देती हैं। इसी के साथ वे दौलत के मामले में भी कम नहीं हैं। कितनी है ऐश्वर्या की नेटवर्थ? जानिए साल 1994 में ऐश्वर्या राय बच्चन ने मिस वर्ल्ड का खिताब जीता। फिर उन्होंने 1997 में तमिल फिल्म 'इरुवर' से अभिनय की शुरुआत की। इसी साल उन्होंने हिंदी सिनेमा में भी फिल्म 'और प्यार हो गया' से कदम रखे। अभिनय की दुनिया में वे करीब तीन दशक से सक्रिय हैं। उनका जादू आज भी बकरार है। ऐश्वर्या राय बच्चन फिल्मों से मोटी फीस लेती हैं। मगर, फिल्मों के अलावा अन्य स्रोतों से भी उनकी अच्छी-खासी आमदनी होती है। वे एक्टिंग के साथ ही विज्ञापनों में भी नजर आती हैं, जहां उनकी फीस काफी तगड़ी है। इसके अलावा कई इंटरनेशनल ब्यूटी ब्रांड्स के साथ भी वे जुड़ी हुई हैं। सेलिब्रिटी नेट वर्थ के अनुसार, ऐश्वर्या राय बच्चन की अनुमानित संपत्ति करीब 100 मिलियन डॉलर है। करीब 900 करोड़ रुपये। यह आंकड़ा भारतीय सिनेमा में उनके 28 वर्षों के फिल्मी करियर और कई इंटरनेशनल ब्रांड्स के साथ उनके जुड़ाव के कारण है। भारत के बाहर भी उनकी अच्छी फैन फॉलोइंग है, जिसके चलते कई ग्लोबल कंपनियों के साथ भी वे जुड़ी हुई हैं। उन्होंने कई इंटरनेशनल इवेंट्स में भी भारतीय सिनेमा को रिप्रेजेंट किया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ऐश्वर्या राय बच्चन एक फिल्म के लिए करीब 10 करोड़ रुपये फीस लेती हैं। वहीं, एक ब्रांड एंडोर्समेंट के लिए उनकी फीस पांच से सात करोड़ रुपये है। ऐश्वर्या की चर्चित फिल्मों की बात करें तो, 'मोहब्बतें', 'ए दिल है मुश्किल', 'उमराव जान', 'देवदास', 'धूम', 'गुरु', 'जोधा अकबर', 'ताल' और 'पोन्नियिन सेलवन' में उन्होंने अपने अभिनय से दर्शकों पर छाप छोड़ी है।

सुनील शेट्टी अभिनीत फिल्म 'नन्हे दिल' का ट्रेलर अब रिलीज़ हो चुका है, जो बचपन, समानता और सपने देखने की आज़ादी का जश्न मनाने वाली एक भावुक और दिल छू लेने वाली कहानी की झलक पेश करता है। श्रीनाथजी हॉस्पिटैलिटी और नाइनफोल्ड पिक्चर्स द्वारा प्रस्तुत 'नन्हे दिल', नवरस एंटरटेनमेंट की प्रोडक्शन है। फिल्म का निर्माण सौम्य जैन, श्रिया टोर्णे, ध्रुव करुणाकर और ऐश्वर्या यादव ने किया है। वहीं, साईविन क्वाड्रास ने क्रिएटिव प्रोड्यूसर और स्क्रीनप्ले राइटर की भूमिका निभाई है। जबकि विशाल कपूर ने भी स्क्रीनप्ले और संवादों पर काम किया है। 'नन्हे दिल' साईविन की पाँचवीं फिल्म है। इससे पहले वह 'मैरी कॉम', 'नीरजा', 'परमाणु' और 'मैदान' जैसी सफल फिल्मों से जुड़े रहे हैं।

सिनेमा में गूंजेगी 'निगम परिवार' की तीसरी पीढ़ी की आवाज

अगम कुमार निगम और सोनू निगम के बाद सिनेमा जगत में एक और निगम की आवाज गूंजेगी। सोनू के बेटे निवान निगम ने बतौर प्लेबैक सिंगर इंडस्ट्री में कद रख लिया है। शॉर्ट फिल्म स्लाइड से म्यूजिक डेब्यू करने वाले निवान संगीत की दुनिया में निगम परिवार की तीसरी पीढ़ी की विरासत को आगे बढ़ाएंगे। निवान निगम के म्यूजिक डेब्यू को लेकर उनके पिता और सिंगर सोनू निगम ने सोशल मीडिया एक स्पेशल पोस्ट शेयर किया है। साथ ही उन्होंने बताया है कैसे निवान एक गायक बनने के लिए हार्ड वर्क किया है। अपने बेटे निवान निगम के पदार्पण को लेकर सोन निगम काफी खुश हैं।



छठ के रंग में रंगीं मौनी रॉय

इस वक्त पूरे देश में छठ की धूम मची हुई है। छठ का त्योहार न सिर्फ बिहार बल्कि आज विदेशो में भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस मौके पर हर तरफ आस्था और भक्ति का माहौल देखने को मिल रहा है। आम लोगों से लेकर बॉलीवुड सितारों तक, हर कोई इस महापर्व के रंग में रंगा नजर आ रहा है। कई स्टार्स इस त्योहार को पूरी आस्था के मनाते हैं। ऐसे में एक्ट्रेस मौनी रॉय भी छठ मनाने मुंबई से पटना पहुंचीं। इस दौरान का मौनी का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। दरअसल, मौनी रॉय का एक वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में मौन पूरी श्रद्धा के साथ छठ मनाती दिख रही हैं।





अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल्स में 'नन्हे दिल'

वाग्ज्योति टाइम्स

मुंबई, सोमवार, 16 नवंबर 2026 से रविवार, 22 नवंबर 2026

प्रशासनिक दक्षता के साथ साहित्य व रंगमंच का अनूठा संगम

कोंकण रेलवे के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संतोष कुमार झा से सदानंद चितले की विशेष बातचीत



विज्ञान की तार्किकता, प्रशासनिक दक्षता और साहित्यिक संवेदना का अनूठा संगम हैं कोंकण रेलवे के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संतोष कुमार झा। प्रशासनिक दायित्वों के साथ कविता, कहानी और रंगमंच के प्रति उनकी गहरी अभिरुचि उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाती है। उनके इसी रचनात्मक संसार और साहित्यिक यात्रा पर विशेष बातचीत।

विज्ञान और प्रशासन की पृष्ठभूमि के बावजूद साहित्य के प्रति आपका रुझान कैसे विकसित हुआ?

मेरी मातृभाषा मैथिली है और प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा हिंदी माध्यम से हुई। इसके बाद लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.एससी. की शिक्षा प्राप्त की। हिंदी साहित्य से मेरा जुड़ाव बचपन से रहा। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, निराला, अज्ञेय और नागार्जुन जैसे साहित्यकारों को पढ़कर साहित्य के प्रति अनुराग पैदा हुआ। कक्षा 10वीं-11वीं से ही कविताएं लिखने लगा था। बाद में बशीर बद्र, निदा फ़ाज़ली, जावेद अख़्तर और साहिर लुधियानवी की रचनाओं ने भी प्रभावित किया। लगभग 16 वर्ष की आयु से नाटकों में अभिनय करने लगा था। हिंदी फिल्मों के संवादों और गीतों ने भी भाषा के प्रति मेरी रुचि को गहरा किया। विज्ञान ने मुझे तर्क और विश्लेषण की दृष्टि दी, जबकि साहित्य ने संवेदना और कल्पनाशीलता प्रदान की। मेरे लिए ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

प्रशासनिक व्यस्तताओं के बीच लेखन और अभिनय के लिए समय कैसे निकालते हैं?

मेरी दृष्टि में किसी कार्य के प्रति सच्ची रुचि हो, तो उसके लिए समय अवश्य निकाला जा सकता है। प्रशासनिक दायित्व मेरी पहली प्राथमिकता हैं और उनके निर्वहन में कोई समझौता नहीं करता। अपने व्यक्तिगत समय में से लेखन के लिए समय निकालता हूं। विशेष रूप से यात्राओं के दौरान मैंने काफी साहित्य-सृजन किया है। लेखन मेरे लिए केवल शौक नहीं, बल्कि आत्माभिव्यक्ति और मानसिक रूप से तरोताजा रहने का माध्यम है। नाटकों में अभिनय भी मुझे रचनात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है। मेरा मानना है कि समय का बेहतर प्रबंधन और रुचियों के प्रति समर्पण जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

आपकी कविताओं के प्रमुख विषय और प्रेरणा-स्रोत क्या हैं?

मेरी कविताओं के प्रमुख सरोकार सामाजिक संवेदना, पर्यावरण, संस्कृति और हमारे त्योहार हैं। इनके माध्यम से समाज, प्रकृति और भारतीय जीवन-मूल्यों के प्रति अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता हूं। प्रशासनिक जीवन के अनुभव और मानवीय संवेदनाएं भी मेरी रचनाओं में सहज रूप से आती हैं। मेरे लिए आसपास का जीवन ही साहित्य की सबसे बड़ी प्रेरणा है। लोगों का संघर्ष, व्यवहार और छोटी-छोटी घटनाएं कई बार कविता या कहानी का रूप ले लेती हैं। 'मेरी आस्था', 'योगेश' और 'ओम' जैसी कहानियां वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। मेरा प्रयास लेखन में सहजता और स्वाभाविकता बनाए रखना है।

लेखन और रंगमंच ने आपके व्यक्तित्व एवं नेतृत्व शैली को कैसे प्रभावित किया है?

लेखन मेरे लिए आत्मसंवाद जैसा है, जबकि अभिनय में उन्हीं भावों को किसी पात्र के रूप में जीने का अवसर मिलता है। लेखन मन को अभिव्यक्त करता है और अभिनय उस अभिव्यक्ति को जीवंत बना देता है। रंगमंच ने मुझे टीमवर्क, अनुशासन और प्रत्येक व्यक्ति के योगदान का महत्व समझाया है। मंच पर सफलता तभी मिलती है, जब निर्देशक से लेकर प्रत्येक कलाकार और सहयोगी अपनी भूमिका पूरी निष्ठा से निभाए। यही भावना प्रशासनिक व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण है। रंगमंच के अनुभव ने मेरी नेतृत्व शैली को अधिक संवादपरक बनाया है।

अपने प्रमुख साहित्यिक सम्मानों को आप किस रूप में देखते हैं?

मेरे प्रमुख काव्य संग्रहों में 'उन्मुक्त', 'सूरज का वारिस', 'फूल, कलम और बंदूक' तथा 'स्याही का सिपाही' शामिल हैं। 'उन्मुक्त' और 'सूरज का वारिस' के लिए रेल मंत्रालय द्वारा क्रमशः 2014 और 2019 में 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार' तथा 2019 में 'रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक' से सम्मानित किया गया। 'फूल, कलम और बंदूक' के लिए महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का 'संत नामदेव रजत पुरस्कार' मिला। इसके अतिरिक्त 'श्रेष्ठ काव्य सृजन सम्मान' (2022), 'कवि लोक काव्य रत्न सम्मान' (2023), 'आशीर्वाद राजभाषा रत्न' (2024), 'राजभाषा सम्मान' (2025) और 'स्याही का सिपाही' के लिए 'मूल साहित्यिक कृति पुरस्कार' (2026) प्राप्त हुए। ये सम्मान मुझे हिंदी और साहित्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी अधिक निष्ठा से निभाने की प्रेरणा देते हैं।

आज के युवाओं को साहित्य, कला और भाषा के प्रति आपकी क्या सलाह है?

युवाओं से मेरा आग्रह है कि करियर की व्यस्तता के बीच अपनी कलात्मक रुचियों को कभी न छोड़ें। जिस भाषा में आप सोचते और सपने देखते हैं, उसमें सहजता से अपने भाव व्यक्त करें। विदेशी भाषाओं की तरह भारतीय भाषाएं सीखने में भी गर्व महसूस करें। मुझे हिंदी, अंग्रेजी और मैथिली का ज्ञान है। मैं बंगाली और गुजराती बोलता हूं तथा मराठी समझता हूं। अधिक से अधिक भाषाएं सीखने से विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं से जुड़ने का अवसर मिलता है। करियर के साथ भाषा, कला और सृजनशीलता को भी जीवन का हिस्सा बनाएं। यही आपके व्यक्तित्व को व्यापक और समृद्ध बनाएगा।

'वाग्ज्योति टाइम्स' के शुभारम्भ पर विशेष काव्यात्मक अभिव्यक्ति

वाग्देवी के गौरव भाल पर
शोभित तेजस्वी चंदन,
विद्यादात्री सरस्वती के
चरणों में सादर वंदन,
'वाग्ज्योति टाइम्स' अद्भुत
सृजन और ऊर्जा का स्पंदन..!
अभिव्यक्ति के इस सार्थक
अभियान का हार्दिक अभिनंदन..!
कला, संस्कृति और साहित्य
भारत का है स्वाभिमान,
सामाजिक सद्भाव युगों से
बना अस्मिता की पहचान,
राष्ट्रीय चेतना का प्रखर
दस्तावेज़ बनायेंगे,
चिंतन और मंथन का परचम
जन-जन में लहरायेंगे,
बुलंद हौसलों के पंखों से
चुनौतियों को हरायेंगे,
यथा नाम तथा गुण बनकर
ज्ञान की ज्योति जलायेंगे,
माँ शारदे के बच्चों का
संघर्षों से गठबंधन..!
अभिव्यक्ति के इस सार्थक
अभियान का हार्दिक अभिनंदन..!

रचनाकार:-
गजानन महतपुरकर
गीतकार तथा मीडिया एवं जनसम्पर्क सलाहकार,
मुंबई



28 साल के युवा से हारे पद्मश्री पालीवाल

जयपुर। राजस्थान की राजनीति में युवाओं के बढ़ते प्रभाव से पारंपरिक समीकरणों में बड़े बदलाव आ रहे हैं। प्रदेश में चल रहे पंचायत चुनाव में युवा बड़ी ताकत बनकर उभर रहे हैं। युवाओं के बढ़ते प्रभाव का अंदाजा राजसमंद जिले के पिपलांत्री गांव के चुनाव परिणाम से लगाया जा सकता है। यहां पद्मश्री से सम्मानित सरपंच प्रत्याशी श्यामसुंदर पालीवाल को 28 वर्षीय नवीन पालीवाल ने 492 वोटों से पराजित कर दिया। नवीन को 1348 वोट मिले हैं। पालीवाल और उनकी पत्नी अनिता पिपलांत्री के सरपंच रहे हैं। अनिता पालीवाल राजसमंद नगर परिषद की सभापति हैं। नवीन ने राजनीति में बढ़ते परिवारवाद को मुद्दा बनाया और पालीवाल को मात दे दी। पालीवाल को वर्ष 2021 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। चुनाव हारने के बाद श्यामसुंदर पालीवाल ने बताया कि मैंने पारंपरिक तरीके से प्रचार किया, वहीं नवीन ने सोशल मीडिया का सहारा लिया। युवाओं ने भी उसकी मदद की। मैं और मेरी पत्नी लगातार दो बार सरपंच रहे हैं। पत्नी के नगर परिषद सभापति बनने से भी कुछ लोगों में नाराजगी थी।

हैदराबाद में राहुल की बाइक राइड

हैदराबाद। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को 'गिग कामगारों' के साथ बाइक रैली में हिस्सा लिया। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और कांग्रेस के अन्य नेता उनके साथ आईटी हब माधापुर स्थित शिल्परामम सरकारी सभागार से जयभेरी ग्राउंड तक रैली में शामिल हुए। रैली के दौरान राहुल गांधी बाइक पर पीछे बैठे थे। उन्होंने 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान गिग कामगारों की समस्याओं और चिंताओं को प्रमुखता से उठाया था। राज्य सरकार ने इस साल मार्च में तेलंगाना प्लेटफॉर्म आधारित गिग कामगार विधेयक, 2026 पारित किया था। बाइक रैली के बाद



गिग वर्कर्स के साथ पिछली सीट पर बैठे

राहुल गांधी ने गिग कामगारों को संबोधित करते हुए कहा, "कुछ समय पहले तेलंगाना के गिग वर्कर्स से मेरी चर्चा हुई थी और आपने मुझे अपना दुख-दर्द बताया था।

नीट पीजी में बड़े बदलाव की तैयारी

पर्सेंटाइल की जगह रैंक आधारित व्यवस्था!

नई दिल्ली। मेडिकल की स्नातकोत्तर (पीजी) सीटों पर दाखिले की व्यवस्था में बड़ा बदलाव हो सकता है। नीट पीजी प्रवेश प्रणाली की समीक्षा के लिए गठित 12 सदस्यीय विशेषज्ञ समिति ने मौजूदा पर्सेंटाइल आधारित पात्रता व्यवस्था को खत्म कर रैंक आधारित मेरिट व्यवस्था लागू करने का सुझाव दिया है। समिति ने यह रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की है। इसमें बताया गया है कि राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने नीट पीजी और सुपर स्पेशियलिटी प्रवेश परीक्षा दोनों के लिए इस प्रस्ताव को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है। जल्द ही इस संबंध में मसौदा नियम जारी किए जाने की उम्मीद है। इसके बाद संबंधित पक्षों से सुझाव और राय मांगी जाएगी।

महाराष्ट्र विधानसभा

नागपुर में शीतकालीन अधिवेशन 7 से

जागरूक टाइम्स संवाददाता

नागपुर। महाराष्ट्र विधानसभा का शीतकालीन अधिवेशन 7 दिसंबर से नागपुर में शुरू होने जा रहा है। अधिवेशन के लिए 25 नवंबर से अधिकारी और कर्मचारियों का नागपुर पहुंचना शुरू हो जाएगा। लोक निर्माण विभाग ने 27 नवंबर तक सभी तैयारियां पूरी करने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए कुल 386 कार्य निर्धारित किए गए हैं, जिनमें 229



नासिक मनपा से मांगी गईं 10 गाड़ियां

कार्यालय भवनों और 157 आवासीय भवनों से जुड़े काम शामिल हैं। हालांकि तैयारियों की रफ्तार पर सवाल उठ रहे हैं। करीब 150 निविदाएं अभी तक नहीं खुली हैं, जबकि कई कार्यों के कार्यादेश जारी नहीं हुए हैं। कुछ निविदाओं में ठेकेदारों की ओर से प्रतिसाद नहीं मिलने से मुश्किलें बढ़ गई हैं। इसके बावजूद पीडब्ल्यूडी का दावा है कि सभी महत्वपूर्ण काम समय पर पूरे कर लिए जाएंगे। इस बीच नागपुर विभागीय आयुक्त ने नासिक महानगरपालिका को पत्र भेजकर 4 कार और 6 जीप सहित कुल 10 वाहन अधिग्रहित करने के निर्देश दिए हैं। ये वाहन वीआईपी अधिकारियों की आवाजाही के लिए इस्तेमाल किए जाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में महाराष्ट्र मंडप

स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बनाने सरकार प्रतिबद्ध

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के पारंपरिक उद्योगों, महिला स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म एवं लघु उद्यमियों तथा 'एक जिला, एक उत्पाद' पहल से जुड़े उत्पादकों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार उपलब्ध कराने के लिए महाराष्ट्र सरकार प्रतिबद्ध है। महाराष्ट्र की औद्योगिक क्षमता के साथ-साथ राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला एक महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। यह विश्वास डॉ. उदय सामंत ने व्यक्त किया। इससे पूर्व नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित 45वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में महाराष्ट्र मंडप का उद्घाटन डॉ. उदय सामंत के हाथों संपन्न हुआ।



उद्योग मंत्री डॉ. उदय सामंत ने किया का उद्घाटन

औद्योगिक और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रदर्शन

केंद्र सरकार ने इस वर्ष के व्यापार मेले के लिए 'विकास और विरासत' की संकल्पना निर्धारित की है। इसी संकल्पना के अनुरूप महाराष्ट्र मंडप में राज्य की पारंपरिक कला, संस्कृति और आधुनिक औद्योगिक क्षमता का अनूठा संगम प्रस्तुत किया गया है। इस मंडप में पैठणी साड़ियां, कोल्हापुरी चप्पलें, विदर्भ की साड़ियां, विभिन्न मसाले, खादी एवं ग्रामोद्योग उत्पादों सहित महाराष्ट्र के विशिष्ट उत्पादों के लगभग 60 से 65 स्टॉल लगाए गए हैं। पिछले वर्ष आयोजित व्यापार मेले में महिला स्वयं सहायता समूहों, ओडीओपी पहल से जुड़े उत्पादकों और लघु उद्यमियों ने लगभग 7 से 8 करोड़ रुपये का व्यापारिक कारोबार किया था। इस वर्ष महाराष्ट्र मंडप को मिलने वाली प्रतिक्रिया और उद्यमियों की भागीदारी को देखते हुए पिछले वर्ष की तुलना में व्यापारिक कारोबार दो से तीन गुना बढ़ने की उम्मीद डॉ. सामंत ने व्यक्त की।

दिल्ली से गुवाहाटी तक नया कॉरिडोर

यूपी में बहुत जल्द बुलेट ट्रेन का कॉरिडोर : वैष्णव

वाराणसी/प्रयागराज। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 31 अक्टूबर, 2026 को काशी रेलवे स्टेशन एवं नमो गंगा रेल सह सड़क ब्रिज का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्टेशन के पुनर्विकास एवं आधुनिकीकरण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया तथा निर्माणाधीन नए स्टेशन भवन, कॉनकोर्स, प्लेटफॉर्म एवं अन्य यात्री सुविधाओं के विकास कार्यों की जानकारी प्राप्त की। वैष्णव ने बताया कि "प्रधानमंत्री ने उत्तरी बुलेट कॉरिडोर को मंजूरी दे दी हैं। उत्तर प्रदेश में बुलेट ट्रेन कॉरिडोर जल्द आने वाला है। ये बुलेट ट्रेन कॉरिडोर दिल्ली से गुवाहाटी तक तैयार होगा। यह उत्तरी कॉरिडोर के आने से दिल्ली और आगरा की बीच की दूरी महज 59 मिनट की रह जाएगी, दिल्ली से कानपुर के बीच की दूरी 1 घंटा 59 मिनट होगी, दिल्ली से लखनऊ की बीच की दूरी 2 घंटे 12 मिनट होगी, काशी से लखनऊ के बीच की दूरी 1 घंटे 21 मिनट होगी और काशी से पटना 1 घंटे में पहुंचा जा सकेगा। काशी से अगर दिल्ली की बात करें तो 3 घंटे 35 मिनट में पहुंचा जा सकेगा, वाराणसी से आगरा की अगर बात करें तो 2 घंटे 24 मिनट में पहुंचा जा सकेगा। बुलेट ट्रेन अमीरों के लिए नहीं बल्कि गरीब और मध्यम परिवार के लोगों के लिए भी है। विपक्ष भ्रम फैला रहा है कि किराया बहुत होगा किराया की जहां तक बात है फ्लाइट से भी कम होगी।" उन्होंने बताया कि काशी रेलवे स्टेशन को आधुनिक, विश्वस्तरीय एवं यात्री अनुकूल स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। स्टेशन के पुनर्विकास कार्य की स्वीकृत अनुमानित लागत 349.50 करोड़ रुपये है, जबकि 304.61 करोड़ रुपये की लागत से कार्य आवंटित किया गया है। कार्य आवंटन की तिथि 16 अगस्त, 2023 है।



दो आधुनिक स्टेशन भवनों का होगा निर्माण

■ पुनर्विकास योजना के अंतर्गत स्टेशन के उत्तर एवं दक्षिण दिशा में दो आधुनिक स्टेशन भवनों का निर्माण किया जा रहा है। दोनों भवन जी+2 (ग्राउंड प्लस दो मंजिल) संरचना के होंगे तथा प्रत्येक भवन का क्षेत्रफल लगभग 10,358 वर्ग मीटर होगा। इसके अतिरिक्त लगभग 10,622 वर्ग मीटर क्षेत्र में विशाल कॉनकोर्स का निर्माण किया जा रहा है। यात्रियों की सुगम आवाजाही के लिए 9 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज, नए प्लेटफॉर्म, प्लेटफॉर्म शेड एवं कवरिंग, पैदल यात्रियों के लिए कवर्ड पाथवे तथा कॉनकोर्स के ऊपर रूफिंग सहित अन्य विकास कार्य भी परियोजना का हिस्सा हैं।

भारत ने बना डाला 'पाताल लोक'

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की पहल



854 करोड़ रुपये की लागत | **2019** में शुरू हुआ निर्माण | **225** मीटर की गहराई में चैंबर

मंगलुरु। रसोई गैस की सप्लाई में कभी कोई बड़ी रुकावट आ जाए तो देश को कितनी परेशानी हो सकती है, इसका अंदाजा हाल के अंतरराष्ट्रीय तनाव के दौरान लगाई गई मुश्किलों से लगाया जा सकता है। इसी तरह की चुनौतियों से निपटने के लिए भारत ने कर्नाटक के मंगलुरु में एक खास इंतजाम तैयार किया है। यहां जमीन के नीचे चट्टानों को काटकर देश की सबसे बड़ी एलपीजी भंडारण गुफा बनाई गई है। इसमें एक साथ 80 हजार मीट्रिक टन रसोई गैस स्टोर की जा सकेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 13 नवंबर को इस परियोजना को देश को समर्पित किया। करीब 854 करोड़ रुपये की लागत से तैयार इस गुफा को इस तरह डिजाइन किया गया है कि जमीन के नीचे बड़ी मात्रा में गैस सुरक्षित रखी जा सके और ऊपर की जमीन का इस्तेमाल दूसरे कामों के लिए किया जा सके। इसकी बनावट और तकनीक इसे देश के ऊर्जा भंडारण ढांचे की एक खास परियोजना बनाती है।

जमीन के नीचे बनी भंडारण गुफा

■ मंगलुरु के बाला इलाके में हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की यूनिट के पास यह भंडारण गुफा बनाई गई है। इसे तैयार करने के लिए जमीन के नीचे मौजूद मजबूत चट्टानों को काटकर सुरंगों और बड़े-बड़े स्टोरेज चैंबर बनाए गए हैं। इस परियोजना का निर्माण 2019 में शुरू हुआ था। मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड ने 6 जून को इसके सफलतापूर्वक पूरा होने की जानकारी दी थी। कंपनी के मुताबिक, परियोजना के सभी जरूरी टेस्ट भी पूरे हो चुके हैं।

देश की सबसे बड़ी भंडारण सुविधा

■ भारत में इससे पहले विशाखापत्तनम में 60 हजार मीट्रिक टन क्षमता वाली भूमिगत एलपीजी भंडारण गुफा बनाई गई थी। लेकिन मंगलुरु की नई गुफा की क्षमता 80 हजार मीट्रिक टन है। इस तरह यह देश की सबसे बड़ी भूमिगत एलपीजी भंडारण सुविधा बन गई है। मंगलुरु में पहले से ही भूमिगत तेल भंडारण की दो सुविधाएं मौजूद हैं। इनमें पर्मुडे में 1.5 लाख मीट्रिक टन और पडुर में 2.5 लाख मीट्रिक टन क्षमता वाला भंडारण केंद्र है।

दो बड़े चैंबर में 80 हजार टन गैस भंडारण

■ इस पूरी परियोजना की सबसे खास बात इसके दो मुख्य स्टोरेज चैंबर हैं। इन्हें एस1 और एस2 नाम दिया गया है। ये चैंबर जमीन के नीचे क्रमशः 220 मीटर और 225 मीटर की गहराई पर बनाए गए हैं। वहीं, गुफा का वर्टिकल शाफ्ट करीब 164.1 मीटर तक जाता है। गुफा के अंदर आने-जाने और अलग-अलग हिस्सों को जोड़ने के लिए सुरंगों का जाल तैयार किया गया है। इसमें 1,083 मीटर लंबी एक्सेस टनल बनाई गई है। इसके अलावा 578.2 मीटर और 804.31 मीटर लंबी ऊपरी और निचली वॉटर कर्टेन सुरंगें हैं। अलग-अलग हिस्सों को जोड़ने के लिए 486.2 मीटर लंबी कनेक्टिंग टनल भी बनाई गई है।

गैस के रिसाव को रोकेगा पानी का पर्दा

■ इस गुफा की एक और खासियत इसका वॉटर कर्टेन सिस्टम है। जमीन के नीचे चट्टानों के आसपास पानी का दबाव बनाए रखने के लिए यह सिस्टम लगाया गया है। इसका मकसद चट्टानों में दरारों के रास्ते गैस के रिसाव के खतरे को कम करना है। यानी गुफा की सुरक्षा के लिए सिर्फ मजबूत चट्टानों पर निर्भर नहीं रहा गया, बल्कि पानी के दबाव वाली तकनीक का भी इस्तेमाल किया गया है। गुफा में एलपीजी पहुंचाने और जरूरत पड़ने पर उसे बाहर निकालने के लिए खास पाइपलाइन और उपकरण लगाए गए हैं। इसके अलावा 9.4 किलोमीटर लंबी एलपीजी पाइपलाइन न्यू मंगलुरु पोर्ट को मुख्य टर्मिनल से जोड़ती है। इससे विदेश से जहाजों के जरिए आने वाली एलपीजी को बंदरगाह से सीधे स्टोरेज टर्मिनल तक पहुंचाया जा सकेगा।

वाग्ज्योति टाइम्स के लिए मुद्रक-प्रकाशक-सरिता राय द्वारा एआईएस प्रिंटिंग सोल्यूशंस, प्लॉट नं. ए-544, टीटीसी इंडस्ट्रीयल एरिया, ठाणे-बेलापुर रोड, महापे, नवी मुंबई 400709 से मुद्रित एवं 2304-एफ विंग, चांडक निश्चय, एस. वी. रोड, परबत नगर, अंबावाड़ी, दहिसर पूर्व, मुंबई 400 068 से प्रकाशित, रजि. नं. MAHHIN/26/A9255, संपादक-अजीत कुमार राय, संपर्क : 8779079255, 9323778226, ईमेल : vagjyotitimes@gmail.com